क लड़की फूल
एक लड़की कांटा

ONE

लेखक
मुजतर हाशमी

GIRL

एन० डी० सहगल एण्ड सन्ज दि

प्रकाशक :
नारायणदत्त सहगल एण्ड संज़,
दरीबा कलाँ, दिल्ली

प्रथम संस्करण १९५५

मूल्य : ४ रुपये

मुद्रक :
हरिहर प्रेस,
चावड़ी बाजार, दिल्ली ।

EK LARKI PHOOL : EK LARKI KANTA MUZTAR HASHMI Rs. 4·0

१

प्रवीरा को अपने भाई प्रोफेसर नाजिम की मृत्यु पर अति संताप हुआ। उसका और कोई बहिन भाई न था। वह अब स्वयं को संसार में कतई एकाकी अनुभव कर रही थी। पिता था सो वह पहले ही बुढ़ापे के कारण प्रातःकालीन लौ के समान था अब युवा पुत्र की मृत्यु ने उसकी बिल्कुल ही कमर तोड़ दी और उसका जीवन नीरस होकर रह गया।

प्रवीरा के पिता मियाँ मैराज-उद्दीन लाहौर के एक बहुत बड़े रईस थे। रुपये पैसे की उनके पास कमी न थी। प्रवीरा ही उनकी लाखों रुपये की जायदाद की उत्तराधिकारिणी थी किन्तु यह धन दौलत अथवा ऐश्वर्य प्रवीरा के दुःखी और अस्त-व्यस्त मन को सहारा न दे सके। वह प्रायः यह सोचती कि यदि जीवन का लक्ष्य केवल ऐश्वर्य ही है और आनन्द-मौज ही है और भाई बहिनों का अस्थायी संयोग भी इसी ऐश्वर्य से आनन्दप्रद बनता है तो फिर उसे अपने भाई की मृत्यु का इतना दुःख क्यों है ? वास्तविक चीज तो अब भी उसके पास है अर्थात् लाखों रुपये की जायदाद किन्तु ये झूठे मन बहलाव उसके दुःख को कम न कर सके और वह दिन प्रतिदिन और परेशान होती गई।

मियाँ मैराज-उद्दीन को अपने एकमात्र पुत्र की युवा मृत्यु पर जो क्लेश हुआ उसका अनुमान कोई वही पिता कर सकता है जिसका एक ही एक पुत्र भरे यौवन काल में अकाल मृत्यु मरा हो। वे उन कुछ

लोगों में से थे जो ऐसे अवसर पर रोते कम हैं किन्तु कुढते अधिक है। रोने से मन का क्लेश किसी सीमा तक धुल जाता है जब कि कुढने से उसमें वृद्धि होती रहती है। मियाँ मैराज-उद्दीन ने जब अपने पुत्र की मृत्यु का मारक समाचार सुना तो उनकी शुष्क आँखें गीली तो न हुईं किन्तु मन ही मन में वे कुढ़ते रहे और इसका उनके स्वास्थ पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ा। पुत्री का रात दिन का रोना-धोना उनके लिये और भी अधिक कष्टप्रद था। दो एक बार उन्होंने चाहा कि उसे धैर्य दिलाने का यत्न करें किन्तु यह सोच कर मौन रहे कि इस प्रकार की दिलासा सदा अस्थायी और सामयिक होती है। हाँ, जब मन का क्लेश अश्रुओं के रूप मे नेत्रों के मार्ग से बह निकले तो फिर रोने वाले को स्थायी धैर्य और शान्ति प्राप्त होती है। मरने वालों की स्मृति तो ताजा रहती है किन्तु उसकी स्मृति में सन्ताप का प्रभाव प्राय: समाप्त हो जाता है।

यह कहना कठिन है कि मियाँ मैराज-उद्दीन का यह दर्शन कहाँ तक ठीक था किन्तु हुआ यही कि प्रवीरा को तो धीरे-धीरे धैर्य प्राप्त होता गया किन्तु मियाँ मैराज-उद्दीन का क्लेश बढ़ता गया। उन्होंने अब अपने कारोबार में ध्यान देना छोड़ दिया। सारा-सारा दिन अपने कमरे में पड़े रहते और अपने युवा पुत्र की मृत्यु पर मन ही मन कुढ़ते रहते।

एक दिन प्रवीरा के चचा की पुत्री नसरत उससे मिलने के लिये आई। प्रवीरा अपने कमरे में आराम कुरसी पर लेटी थी और अपने विचारों में खोई हुई थी। नसरत ने उसे परेशान देखते हुए कहा 'प्रवीरा! मेरे ख्याल में किसी की मौत पर इतना परेशान होना एक बेकार सी बात है। कौन नहीं जानता कि मौत हर एक के लिए निश्चित है। न तुम उससे बच सकती हो और न मैं। हर एक को मरना है किसी को पहिले और किसी को कुछ दिन बाद। मरने वालों का दु:ख अवश्य होता है किन्तु इतना नहीं कि इनसान हर वक्त मरने वालों की याद में ही खोया रहे और इस दुनिया से सम्बन्ध तोड़ दे। मेरी तरफ देखो। मेरा को'

भाई ही नहीं है। आखिर मैं भी तो जीवित हूँ। तुम भी यही ख्याल कर लो कि तुम्हारा भी कोई भाई नहीं था।'

प्रवीण ने अश्रु बहाते हुए कहा—'

'बहिन ! अगर मेरा कोई भाई न होता तो मुझे भी दुःख न होता लेकिन इस बात का क्या किया जाए कि खुदा ने मुझे भाई दिया और फिर छीन लिया। अब उसकी याद मुझे दिन रात तड़पाती रहती है। मैं उसे कैसे भूल जाऊँ ? यह मेरे बस की बात नहीं है।'

नसरत के भी नेत्र गीले हो गए। वह बोली—

'हाँ, तुम्हारा यह कहना सही है लेकिन तुम जानती हो कि नाज़िम मेरे चचा का बेटा था और इस तरह मेरा भाई था। मुझे उससे सगे भाइयों का सा प्यार था। उसकी मौत का मुझे भी बहुत दुःख हुआ है लेकिन मरने वालों के साथ मरना कठिन है। तुम्हें अपने मन को सहारा देना चाहिये और इस दुःख को भूल जाना चाहिये।'

प्रवीण के नेत्रों से सतत अश्रु प्रवाहित थे। उसने नसरत की इस बात का कोई उत्तर न दिया। और सिर झुकाए बैठी रही। नसरत ने उसे चुप देख बातचीत का विषय बदला और बोली—

'प्रवीण ! असल में बात क्या है ? आखिर नाज़िम भाई ने आत्म-हत्या क्यों की ? मैंने सुना है कि उन्हें एक लड़की से प्यार था और उसी के प्यार में जान दे दी। तुम्हें तो पूरी बात मालूम होगी।'

प्रवीण ने एक ठन्डी सांस छोड़ते हुए कहा—

'हाँ, मालूम है।

नसरत ने कहा—

'तो सुनाओ, आखिर नाज़िम भाई की आत्म हत्या का कारण क्या था ?'

प्रवीण ने रूमाल से अपने अश्रु पोंछे और नसरत की ओर कुछ [illegible]स प्रकार देखने लगी जैसे उससे कोई बड़े भेद की बात पूछी हो और [illegible] उसे बताने में कुछ आना-कानी करती हो। नसरत उसका तात्पर्य

समझ गई और बोली—

'तुम मेरी बहिन हो। तुम्हें असल बात बताने से हिचकना नहीं चाहिये। हो सकता है कि यह एक गोपनीय बात हो लेकिन यह भेद नाजिम भाई की मौत के साथ ही खत्म हो गया है। अब उसे बताने में कोई डर नहीं और फिर मैं कोई पराई भी तो नहीं जिस पर यह भेद प्रकट करना ठीक नहीं है।'

प्रवीण ने कहा—

'बहिन ! यह आपने ठीक कहा है लेकिन बीती बातों की चर्चा बेकार सी मालूम होती है। पूछ कर क्या लोगी ?'

नसरत ने उसकी चिरौरी करते हुए कहा—

'प्रवीण ! मुझे जरूर सुनाओ। मैं दिन रात इस उलझन में पड़ी रहती हूँ कि आखिर नाजिम भाई ने क्यों अस्वाभाविक मौत मरना सहन किया। वे मेरे भाई थे। अगर कोई और होते तो शायद मैं न पूछती।'

यह सुन कर प्रवीण कुर्सी पर संभल कर बैठ गई और बोली—

'बहिन ! मैं पूरी घटना संक्षेप में बताए देती हूँ।'

नसरत ने कहा—

'हाँ, संक्षेप में ही सुना दो।'

प्रवीण ने कहा—

'एक दिन भाई जान कालेज में शैक्स्पीयर का नाटक अथैलो पढ़ा रहे थे और उस वाक्य की व्याख्या कर रहे थे जिसमें नाटक की हीरोइन 'डस डी मोना' के कतल का वर्णन है। यह तो आप जानती हैं कि भाई जान शैक्स्पीयर के नाटक पढ़ाने में पूरे सिद्धहस्त थे और उनके पढ़ाने का ढंग अति-आकर्षक था। उन्होंने 'डस डी मोना' की मृत्यु का ऐसा नक्शा खेंचा कि सारी क्लास पर जादू सा छा गया। मेरी एक सहेली थी। नाम था उनका ताहिरा। वह भी रो रही थीं। उन्होंने मुझसे सम्बोधन कर कहा 'काश ! डस डी मोना की मौत प्राप्त हो।' यही

बात भाई जान और ताहिरा में प्यार का कारण बनी। उन्होंने एक दूसरे को विवाह का वचन दिया किन्तु आप जानती हैं कि अब्बा जान ने उनका सम्बन्ध एक और लड़की अशरत से कर रखा था।

नसरत ने कहा

'हाँ, हाँ, मुझे मालूम है।'

प्रवीण ने अपनी बात आगे बढ़ाते हुए कहा—

'भाईजान अशरत से शादी करने के विरुद्ध थे। उन की इच्छा ताहिरा से विवाह करने की थी लेकिन अब्बाजान ने जबरदस्ती उन का बिवाह अशरत से कर दिया। भाईजान पहिले अशरत को नही जानते थे। पहिली रात ही वे यह देखकर चकित रह गए कि उन्हें एक ऐसी लड़की के पल्ले बाँध दिया गया है जिससे उन्हें बेहद घृणा थी। इस विवाह का जो अन्त हुआ। वह आप जानती ही है। जब अशरत लड़ झगड़ कर हमारे घर से अपने मायके जा बैठी तो ताहिरा और भाई जान में फिर मेल मिलाप शुरू हो गया। ताहिरा ने अपने माँ बाप को राजी कर लिया। उसके बड़े भाई ने इस सम्बन्ध का विरोध किया लेकिन भाईजान ने उसकी एक न चलने दी और उस के विरोध के रहते सम्बन्ध तै हो गया।

नसरत ने बात काटते हुए कहा—

'लेकिन ताहिरा के भाई ने क्यों विरोध किया ?'

प्रवीण ने कुछ देर रुक कर कहा—

'बात असल में यह थी कि ताहिरा के भाई का परिचय अशरत से था। उसके कहने से उसने इस सम्बन्ध का विरोध किया।

'क्या तुमने कभी ताहिरा के भाई को देखा है ?'

'नहीं' मैंने नहीं देखा लेकिन भाईजान की मौत के बाद सारे हालात का मुझे पता चला है। कैसे चला ? यह भी एक कहानी है और मेरा ख्याल है उसके बताने की जरूरत नहीं।

'अच्छा तो फिर क्या हुआ ?'

प्रवीण ने कहा—

'हुआ यह कि अशरत ने ताहिरा के भाई के साथ मिल कर इस सम्बन्ध को समाप्त कराने की सिर तोड़ कोशिश की लेकिन क्यों कि ताहिरा और भाईजान एक दूसरे को हृदय से चाहते थे इसलिये उन की तमाम कोशिशें बेकार सिद्ध हुईं। भाईजान के एक मित्र प्रोफेसर वहीद हैं। वे एक स्थानीय कालेज में काम करते हैं। भाईजान उन्हें अपना पक्का मित्र समझते थे और वास्तविकता यह है कि प्रोफेसर वहीद ने भी मित्रता का बदला चुका दिया। जब अशरत और ताहिरा के भाई ने यह देखा कि उनके सभी यत्न बेकार सिद्ध हुए तो उन्हों ने दोनों मित्रों की मित्रता से नाजायज़ लाभ उठाया।'

नसरत ने आश्चर्यपूर्वक पूछा—

'वह कैसे ? क्या प्रोफेसर वहीद ने इन दोनों से मिलकर नाजिम भाई को धोखा दिया ? लेकिन अभी-अभी तुम कह चुकी हो कि वहीद ने मित्रता का बदला चुका दिया।'

प्रवीण ने कहा—

'यह बात नहीं। वहीद वास्तव में भाईजान के मरते दम तक बेलाग मित्र रहे। बात असल में यों हुई कि अशरत और ताहिरा के भाई ने ताहिरा के सम्बन्ध की जाली सूचना वहीद को पहुँचा दी। प्रोफेसर वहीद को यह बिल्कुल पता नहीं था कि ताहिरा का पहिले से भाईजान के साथ सम्बन्ध तै हो चुका है। वे राय लेने भाईजान के पास पहुँचे और उन्हें ताहिरा की तस्वीर दिखा कर बोले—

'इस लड़की के रिश्ते का पत्र आया है। कहो तुम्हारी क्या राय है ?'

ताहिरा की तस्वीर देख कर भाईजान को बहुत दुःख हुआ। लेकिन उन्होंने प्रोफेसर वहीद को असल मामला न बताया और उसे राय दी कि 'हाँ' तुम्हारे लिये यह सम्बन्ध ठीक है।' भाईजान ने मन में यह विचार किया कि शायद ताहिरा और उसके माँ बाप ने अपनी राय बदल ली है और उन्होंने इस सम्बन्ध के लिये प्रोफेसर वहीद को चुन

लिया है। उन्हें यह भी विश्वास था कि वहीद जो पहिले सम्बन्ध का पता नहीं। नहीं तो वह 'हाँ' नहीं करता। उन्होंने प्रोफेसर वहीद को वास्तविकता से परिचित करवाना उचित न समझा और उन्हें ताहिरा से विवाह करने की सम्मति दे दी। प्रोफेसर वहीद के जाने के बाद भाईजान की दशा बिगड़नी आरम्भ हुई। वे लगातार कई घण्टे तक बेहोश रहे। डाक्टर ने यह कहा कि इन्हें कुछ दिनों तक कालेज नहीं जाना चाहिये और पूरी तरह आराम करना चाहिये। ताहिरा का भाई किसी बहाने से ताहिरा को कुछ दिन के लिये पेशावर ले गया। मतलब इससे केवल यह था कि उसे कुछ दिनों भाईजान से न मिलने दिया जाए ताकि उन्हें यह विश्वास हो जाए कि सम्बन्ध उस की इच्छा से हुआ है। ताहिरा का यह नियम था कि यदि भाईजान किसी कारण से कालेज न पहुँचते तो वह परेशान हो जाती और उन्हें देखने के लिये यहाँ आती। अब क्यों कि वह पेशावर गई हुई थी इस लिये उसे पता ही न चल सका कि कालेज में प्रोफेसर नाज़िम के न आने का वास्तविक कारण क्या है। भाईजान को उस के पेशावर जाने का कोई ज्ञान न था। जब वह उन्हें देखने के लिए न आई तो उन्हें विश्वास हो गया कि प्रोफेसर वहीद से उसका सम्बन्ध उस की इच्छा से हुआ है।

भाईजान ने अपने मित्र को ताहिरा से विवाह करने की सम्मति तो दे दी किन्तु उनके मस्तिष्क पर इसका बुरा प्रभाव हुआ। वे तीन चार दिन तक पलंग पर पड़े रहे। चौथे दिन सायं समय उन्होंने उठकर कपड़े पहिने और छड़ी हाथमें लेकर घूमने का बहाना कर घर से निकल गए। उन्होंने बाद में स्टेशन को मुंह मोड़ा। दिल्ली जाने वाली गाड़ी तैयार थी। वे उसमें बैठे और दिल्ली चल दिये। उनके जाने के बाद प्रोफेसर वहीद को वास्तविकता का पता चला। वे पछताए कि मुझे नाज़िम ने असल बात बताई ही नहीं, अन्यथा मैं उसी समय उन्हें कह देता कि मैं आपकी मंगेतर से विवाह नहीं करूंगा। यह शादी आप ही को मुबारिक हो।

उसके बाद प्रोफेसर वहीद ने भाईजान की खोज आरम्भ की किन्तु उनकी खोज का कोई परिणाम न निकला। एक दिन मैं कालेज गई तो मुझे वहाँ ताहिरा मिली। वह उसी दिन पेशावर से वापस आई थी। उसने मुझ से पूछा। "नाज़िम कहाँ हैं ?" मैंने उसे पूरी घटना कह सुनाई। वह यह सुनते ही तड़प सी गई और बोली 'नाज़िम से धोखा किया गया है। मैं और मेरे माँ बाप अभी तक इस सम्बन्ध पर दृढ़ हैं। प्रोफेसर वहीद के घर जाली खबर गई है।'

भाईजान दिल्ली पहुंचे और एक होटल में उतरे। वहाँ एक दिन सायं काल घूमते हुए लाल किले के सामने के मैदान में पहुँच गए। काफी देर तक वे वहीं घूमते रहे। रात के ग्यारह बारह बजे जब वे वहाँ से लौटे तो रास्ते में किसी तरह से उनके सिर पर चोट सी आई जिस से उनके नेत्रों की ज्योति जाती रही। उन्हें हस्पताल पहुंचा दिया गया जहां कुछ दिनों उनका इलाज होता रहा। इधर ताहिरा उन के वियोग को न सहन कर घर से भाग खड़ी हुई और दिल्ली पहुँच गई। वहीं एक हस्पताल में उसने भाईजान को ढूंढ लिया किन्तु क्योंकि उनकी ज्योति जाती रही थी इसलिये वे ताहिरा को न पहचान सके। स्वयं ताहिरा ने भी अपने आप को प्रकट न होने दिया। कहीं यह जान कर भाईजान को दुःख हो कि ज्योति के अभाव में मैं अब ताहिरा को देख भी नहीं सकता। ताहिरा अपनी एक सहेली लेडी डाक्टर की सहायता से वहीं नर्स हो गई और उसी वार्ड में काम करने लगी जहाँ भाईजान का इलाज हो रहा था। उसने भाई जान की खूब सेवा की। एक दिन भाईजान ने उस से कहा 'नर्स ! आप ने मेरी बहुत सेवा की है। मैं आप का बहुत कृतज्ञ हूँ किन्तु आप की आवाज से मुझे घृणा है।'

ताहिरा ने कहा 'क्यों ?'

भाईजान बोले—

'आपकी आवाज उस बेवफा औरत से मिलती जुलती है जिसने मुझे इस हालत को पहुँचाया।'

ताहिरा ने अपनी सफाई देने का यत्न किया किन्तु भाईजान इससे चिढ़े और बोले—

'नर्स ! मैं आपकी कदर करता हूँ मगर उस औरत की सफाई में कुछ सुनना नहीं चाहता। आप इसकी सफाई पेश न करें।'

दूसरे दिन ताहिरा ने फिर यही चर्चा छेड़ दी। भाई जान को उसकी यह बात बुरी लगी और विवश होकर ऐसे तड़पे कि उनकी लात ताहिरा के पेट में लगी और वह गिरकर तड़पने लगी। उधर भाई जान का सिर पलंग से टकराया और इस चोट से आश्चर्यपूर्ण ढंग से उनके नेत्रों की ज्योति लौट आई। उन्होंने देखा तो ताहिरा उनके सामने धरती पर पड़ी तड़प रही थी। वे जल्दी से उसकी तरफ लपके और बोले—

'ताहिरा ! तुम ?'

ताहिरा ने भाव पूर्ण दृष्टि से उन्हें देखते हुए कहा—

''हाँ नाज़िम ! मैं ही हूँ। मैं खुश हूँ कि इस डी मोना की मौत मुझे प्राप्त हो सकी। मुझे मेरे जीवन का लक्ष्य मिल गया है।'

भाईजान ने विवशता के साथ कहा—

'लेकिन इस नाटक को पूरा करने के लिए मुझे भी अपनी जान देनी होगी।'

ताहिरा को दिल्ली दरवाज़े के बाहर एक कब्रिस्तान में दफन कर दिया गया। भाई जान हस्पताल से छुट्टी पाने के बाद पूछते-पूछते उसकी कब्र पर पहुंच गए। एक गोरकुन ने मुझे बताया कि वे कई घण्टे ताहिरा की कब्र के सामने खड़े रहे। जब रात के बारह बजे तो वे कब्रिस्तान से निकले और एक सड़क पर लालकिले की ओर चल दिये। एक जगह उन्होंने रुककर अपनी जेब से जहर निकाला जो शायद उन्होंने पहिले से इसी इच्छा से रख छोड़ा था। उन्होंने जहर खा लिया और एक घण्टे के अन्दर-अन्दर प्राण छोड़ दिये। मैं और प्रोफेसर वहीद अचानक वहाँ पहुँच गए जहाँ भाई जान की लाश पड़ी थी। इसके बाद हम दोनों ने उनकी लाश को ताहिरा के निकट दफन करवा दिया और दोनों की

कब्रें पक्की करवा दीं। तो यह है भाईजान की प्रेम कथा का संक्षिप्त वृत्तान्त।

इतना कह कर प्रवीण चुप हो गई। उसने नसरत की ओर देखा तो उसके नेत्रों से आँसुओं का एक प्रवाह-सा उबल रहा था। प्रवीण ने उसे देखकर अपने नेत्र सामने की दीवार पर लटकी हुई एक तस्वीर पर गाड़ दिये। यह चित्र डाक्टर नाज़िम का था। वह काफी देर तक उसे देखती रही और यह सोचती रही कि क्या इस आकृति का व्यक्ति वास्तव में इस घर की चार दीवारी में रह चुका है? अब उसके नेत्र खुश्क थे किन्तु नसरत की रो-रोकर बुरी दशा हो रही थी।

नसरत कितनी ही देर तक प्रवीण के पास बैठी रोती रही और प्रवीण खुश्क और मौन दृष्टि से उसे तकती रही। वह मन ही मन यह सोच रही थी कि दूसरों को धैर्य और शान्ति का पाठ पढ़ाने वाले स्वयं क्यों अपनी भावनाओं पर अंकुश नहीं रख पाते ? यह कह देना कि भाई की मृत्यु को भूल जाओ साधारण-सी बात है किन्तु दूसरे के दुःख तथा क्लेश का अनुमान करने के पश्चात् यह अनुभव होता है कि कह देने और कर दिखाने में कितना अन्तर है ?

नसरत तो रो रही थी और प्रवीण की कल्पना भूत के अंधकार में बीती बातों की टोह लगा रही थी। बीते कुछ महीनों के अन्दर-अन्दर जो घटनाएँ सामने आईं वे उसके नेत्रों में घूम गईं। उसने इन घटनाओं पर दोबारा और तिबारा दृष्टि डाली और हर बार उसे कोई न कोई नई बात दिखाई पड़ी। उसकी कल्पना कालेज के क्लास रूम से आरम्भ होती और दिल्ली के कब्रिस्तान तक पहुँचती और फिर वापिस आ जाती। उसकी कल्पना में दो कब्रें नृत्य करती दिखाई पड़तीं। एक नाज़िम की कब्र थी और दूसरी ताहिरा की। वह सोचने लगी कि क्या एक साथ दफन होने से नाजिम और ताहिरा की आत्मा को कोई शान्ति प्राप्त हो सकती है ? यह विचार आते ही उसके दार्शनिक मस्तिष्क ने यह सोचना आरम्भ किया कि प्रेम तो मनुष्य की वह संज्ञा विशेष है जो उसके जीवन के साथ ही समाप्त हो जाती है। यदि वह संज्ञा नश्वर है तो स्पष्ट है कि उससे उत्पन्न हुआ प्यार भी अमर नहीं। ऐसी स्थिति

में प्रेमी और प्रेमिका की साथ-साथ बनी हुई कब्रें उनकी आत्मा को क्या शान्ति पहुँचा सकती हैं ?' यह सोचकर प्रवीण को दुःख हुआ कि उसने अपने भाई के शव को लाहौर लाकर क्यों न दफन किया ? नाज़िम की आत्मा के लिये तो लाहौर और दिल्ली में कोई अन्तर नहीं था । क्योंकि सांसारिक बन्धनों से मुक्त होने के उपरान्त यह भेद मिट जाता है । यदि नाज़िम का शव लाहौर में दफन किया जाता तो वह दूसरे तीसरे दिन जाकर अपने भाई की कब्र को देख आया करती ।

प्रवीण का ध्यान किसी एक विन्दु पर केन्द्रित न था । वह कभी अपने स्वर्गीय भाई के जीवन के विभिन्न अंशों पर दृष्टि डालती और कभी जीवन और मृत्यु के दर्शन पर विचार करती । उसकी दृष्टि कमरे में इधर-उधर घूमती हुई प्रतीत होती थी किन्तु उसका ध्यान किसी और तरफ था । अन्त में उसकी दृष्टि सामने लटकी हुई तस्वीर पर पड़ी और उसका ध्यान फिर अपने केन्द्र बिन्दु पर लौट आया । यहाँ से उसकी मानसिक यात्रा पुन: आरम्भ हुई और वह सोचने लगी कि क्या मृतकों का जीवित होना संम्भव है ? उसने इस प्रकार की अनेक कथाएं सुन रखी थीं जिनमें मृतकों के जीवित होने की चर्चा थी । यह ध्यान आते ही उसे अपने भाई की कब्र फिर दिखाई पड़ने लगी और उसने कुछ यों अनुभव किया जैसे कब्र फट जाती है और उसका भाई कफ़न सहित उस से निकल आता है ।

यह कुछ प्रवीण की ही ऐसी दशा न थी अपितु न्यूनाधिक प्राय: सभी शोकातुर व्यक्तियों की ऐसी दशा होती है । वे अपने नए-नए मरे हुये सम्बन्धियों के बारे में प्रायः यही सोचते रहते हैं कि क्या वे पुन: जीवित हो सकते हैं ? कुछ समय उपरान्त उन्हें स्वयं यह अनुभव हो जाता है कि उनका दृष्टिकोण अत्यन्त मूर्खतापूर्ण और उपासहनीय था । मरे हुए कभी जीवित नहीं हो सकते ।

प्रवीण इसी प्रकार के विचारों में डूबी थी कि नसरत ने भर्राई हुई आवाज़ में कहा—

'प्रवीण ! वाकई नाज़िम भाई की मौत हृदय विदारक है। मौत कोई भयानक चीज़ नहीं लेकिन हालात उसे ऐसा बना देते हैं। नाजिम भाई ने जिन हालात में जान दी उन्हें सुनकर मुझे बड़ा दुःख हुआ है।'

प्रवीण ने इसका कोई उत्तर न दिया और उसे कुछ इस प्रकार टकटकी बांधे देखती रही जैसे उसे नसरत के विचार परिवर्तन पर आश्चर्य हुआ हो। नसरत ने उसे मौन देखकर कहा—

'हां', तो वे प्रोफेसर वहीद आज कल कहाँ हैं ? उन्हें भी तो अपने मित्र की मृत्यु का बड़ा शोक हुआ होगा '

प्रवीण ने कहा—

'मुझ से अधिक दुःख हुआ है उन्हें। सुना है कि वे कालेज जाना छोड़ बैठे हैं और घर में बैठे रोते रहते हैं। उन्हें भाई जान से अत्यन्त प्रेम था।'

इसके उपरान्त कुछ समय तक मौन रहा फिर सहसा नसरत के शोक ग्रस्त मुख मण्डल पर मुस्कराहट खेल गई और अपने आँसू पोंछती हुई बोली।

'प्रवीण ! क्या तुम्हें अपने भाई से अत्यन्त प्यार था ?'

'इस में क्या सन्देह ?'

'क्या प्रोफेसर वहीद और नाज़िम भाई हार्दिक मित्र थे ?'

'बल्कि यों कहिये कि एक प्राण दो शरीर थे।'

'तुम्हारे मतानुसार प्रोफेसर वहीद ने मित्रता का कर्तव्य पूर्ण कर दिया।'

''बिल्कुल।''

'तो फिर मेरी एक सम्मति है यदि तुम मानो तो।'

'कहिये।'

'यह सम्मति ऐसी है कि प्रोफेसर वहीद को अपना खोया हुआ मित्र मिल जाएगा और तुम उस प्रेम को पूर्ण कर सकोगी जो ताहिरा और नाज़िम भाई में उत्पन्न हुआ। यह सम्मति तुम्हारे लिये भी शान्ति का

कारण होगी।

'क्या सम्मति है वह ?'

नसरत ने मुस्कराते हुए कहा—

'पहिले यह प्रण करो कि तुम मेरी सम्मति को मानोगी।

'लेकिन मालूम तो हो कि वह सम्मति क्या है ?' वह समझ गई थी कि नसरत क्या चाहती है किन्तु समझदारी से काम लेते हुए उसने कह दिया। नसरत ने कहा—

'पहिले वचन दो।'

'चलिये वचन देती हूँ कि आप की सम्मति से सहमत हूँगी।'

नसरत ने गम्भीरतापूर्वक कहा—

'प्रोफेसर वहीद से विवाह कर लो।'

प्रवीण ने अपना सिर झुका लिया और कुछ उत्तर न दिया।

नसरत के नेत्रों से फिर अश्रु प्रवाहित हो चले और बोली—

'प्रवीण ! तुम ने नाजिम भाई की मृत्यु की जो व्याख्या की वह अत्यन्त दुःख प्रद है। इसके साथ ही तुमने प्रोफेसर वहीद की जिस प्रकार चर्चा की उसने मेरे हृदय में अनजाने यह इच्छा उत्पन्न कर दी है कि तुम्हारा विवाह उनसे हो जाए। यह इच्छा क्यों उत्पन्न हुई है मैं नहीं जानती।'

प्रवीण ने पुनः कोई उत्तर न दिया। उसका सिर और नीचे झुक गया। नसरत ने उसे मौन देखा तो बोली—

'प्रवीण ! तुम मेरी बहिन भी हो और सहेली भी। मैं यह बात चीत तुमसे एक सहेली के रूप में कर रही हूँ बहिन के रूप में नहीं। सच सच कहो क्या प्रोफेसर वहीद की मित्र भावना का तुम्हारे हृदय पर कोई प्रभाव नहीं हुआ ? प्रेम के केन्द्र बिन्दु अनेक होते हैं जैसे सौन्दर्य और सहानुभूति। मैं यह नहीं जानती कि प्रोफेसर वहीद चेहरे मुहरे से कैसे हैं। हाँ, उनके बारे में सुन कर मुझे उनसे कुछ सहानुभूति सी उत्पन्न हो गई है किन्तु जो प्यार इस सहानुभूति का परिणाम

है वह ऐसा प्यार है जो भाई और बहिन में होता है। क्योंकि मैं तो एक विवाहित स्त्री हूँ। तुम्हारी स्थिति मुझ से भिन्न है। तुमने प्रोफेसर वहीद की मैत्री को अपनी आँखों से देखा है। वे तुम्हारे साथ अपने मित्र की खोज में मारे-मारे फिरते रहे हैं और अब तुम ही कहती हो कि नाज़िम भाई की मृत्यु का उन्हें अत्यन्त दुःख हुआ है और वे कालेज जाना छोड़ बैठे हैं। यदि तुम्हारा हृदय भावना से शून्य नहीं तो खुदा के लिये बताओ कि तुम पर इसका कुछ प्रभाव हुआ अथवा नहीं। क्या तुम्हें प्रोफेसर वहीद से सहानुभूति उत्पन्न नहीं हुई ? और यदि हुई तो इस की स्थिति तुम्हारे निकट क्या है ?

प्रवीण ने नसरत की इस बात का कोई उत्तर न दिया। हाँ, उस के सुन्दर नेत्रों से मोतियों के समान चमकते हुए अश्रु गिरने लगे जो इस बात के प्रमाण थे कि उसका हृदय प्यार की भावना से शून्य नहीं। नसरत की उपस्थिति में पहिले भी प्रवीण के नेत्र गीले हो गए थे किन्तु उस समय उसके अश्रुओं में शोक की झलक थी। अब उसके अश्रुओं में प्यार की चमक थी। नसरत समझ गई कि प्रवीण प्रोफेसर वहीद की मैत्री भावना से पहिले से प्रभावित है और उसने यह चर्चा छेड़ कर उसके हृदय की बात कह दी है। उसने फिर कहा—

'प्रवीण ! मैं पहिले भी कह चुकी हूँ कि मैं इस समय तुम्हारी सहेली के रूप में बात कर रही हूँ। तुम्हें इस समय कोई लाज शरम नहीं रखनी चाहिये और हृदय की बात कह देनी चाहिये। तुम स्त्री हो। तुम्हारा हृदय कोमल भावनाओं से परिपूर्ण है। यह बात संभव नहीं कि प्रोफेसर वहीद ने नाज़िम भाई के लिये इतना बलिदान किया हो और तुम प्रभावित न हुई हो।'

प्रवीण ने मौन दृष्टि से नसरत की ओर देखा। प्रवीण के नेत्रों में अश्रु झलक रहे थे किन्तु चेहरे पर मुस्कराहट थी। नसरत समझ गई कि वह उसकी सम्मति से सहमत है। वह केवल आनन्द लेने के विचार से उसकी जिह्वा से कहलवाना चाहती थी कि मैं प्रोफेसर वहीद से

प्यार करती हूँ और उससे विवाह करने की इच्छुक हूँ। उसने कुछ बिगड़ने के ढंग से कहा—

'प्रवीण ! यह बात अच्छी नहीं। साफ-साफ कहो।'

प्रवीण ने अपने मौन को तोड़ा और बोली—

'आप मेरी बड़ी बहिन हैं इसलिये मुझे मन की बात कहते हुए लाज आती है। इसके साथ ही क्योंकि आपने मेरी सहेली होने का वचन दिया है इस लिये अब मुझे यह कहने में झिझक नहीं कि आप के कहने से पहिले ही मैं उनके प्यार में डूबी हूँ। जब से मुझे यह मालूम हुआ है कि उन्होंने भाई जान के दुःख में कालेज जाना छोड़ दिया है मुझे अत्यन्त क्लेश हुआ है। मैं स्वयं भी अपने भाई की युवा मृत्यु से शोक संतप्त हूँ किन्तु न जाने इस मामले में प्रोफेसर वहीद से मुझे क्यों सहानुभूति है। मुझे दिन रात उन्ही का दुःख खाए जाता है मैं चाहती हूँ कि उनके पास जाकर उनको दिलासा दूं किन्तु यह मैं नहीं जानती कि उन्हें भी मुझ से कुछ लगाव है अथवा नहीं। इसलिये उनके यहाँ जाने से झिझकती हूँ।'

नसरत ने विजयी ढंग से कहा—

'प्रवीण ! दिल को दिल से राह होती है। यह तो हो नहीं सकता कि तुम उनसे प्यार करो और उन्हें तुम्हारा कोई ध्यान न हो। उन्हें भी निश्चय ही तुमसे प्यार होगा। अभी तक तुम दोनों को ऐसा कोई अवसर नहीं मिला कि तुम एक दूसरे से हृदय की बात कह सको लेकिन जब ऐसा अवसर आएगा तो तुम्हें मालूम हो जाएगा कि तुम दोनों समान रूप से एक दूसरे के प्यार में डूबे थे। किन्तु हाँ, तुम यह बताओ कि तुम्हें प्रोफेसर वहीद से कब से प्यार है ?'

प्रवीण ने कहा—

'प्रोफेसर वहीद एक सुन्दर नवयुवक है किन्तु भाईजान के जीवन काल में मुझे उन से कोई लगाव न था। मैं उन्हें केवल अपने भाई का

एक मित्र समझती थी। जब हमारे कष्टों का समय आरम्भ हुआ और प्रोफेसर वहीद ने हमारे इन कष्टों में साथ देना आरम्भ किया तो मुझे उनसे एक प्रकार का लगाव-सा उत्पन्न हो गया किन्तु यह लगाव ऐसा ही था जैसा घर के व्यक्ति से हो सकता है। पहले वे पराए थे फिर मैं उन्हें अपने घर का आदमी ख्याल करने लगी। जब प्रोफेसर वहीद ने भाईजान की खोज में अपने सारे काम-काज छोड़ दिये और देश भर की खाक छानते फिरे तो यह लगाव और अधिक हो गया किन्तु उसे प्यार अथवा आसक्ति का स्थान प्राप्त न था। जब वे भाईजान की खोज में दिल्ली गए तो मैं भी उनके साथ थी। स्त्री पुरुष का एक साथ सफर करना, एक साथ रहना और उनकी नीयतों में अन्तर न आना अवतारी गुण हैं। विरला ही कोई मनुष्य होगा जिसमें यह विशेषता हो किन्तु मैं काफी समय तक प्रोफेसर वहीद के साथ यात्रा पर रही मुझे स्मरण नहीं कि उन्होंने एक बार भी मुझसे आँख मिला कर बात की हो। मुझे देखते ही उन के नेत्र झुक जाते और वे मेरा अत्यन्त सम्मान करते। उनके सौन्दर्य से तो मैं प्रभावित नहीं हुई थी किन्तु व्यवहार से अत्यन्त प्रभावित हुई। और इसी चीज ने मेरे मन में प्यार की एक कसक-सी उत्पन्न कर दी। इसके अतिरिक्त मेरे स्वर्गीय भाई के लिये उन्होंने जो कष्ट उठाए उनसे मेरे हृदय में उनका सम्मान और अधिक बढ़ गया और अन्त में यह प्रेम आसक्ति में बदल गया। अब मैं उनके हृदय की दशा तो नहीं जानती। हाँ, मेरे मन की जो दशा है वह मैंने बता दी है।'

नसरत ने कहा—

'यह मुझे पहिले ही आशा थी। तभी तो मैंने यह चर्चा छेड़ दी।'

प्रवीण घबरा सी गई और बोली—

'तो क्या आप केवल यह भेद जानना चाहती थीं अन्यथा आपको इस मामले में मुझसे कोई सहानुभूति नहीं ?'

नसरत ने मुस्कराते हुए कहा—

'यह मैंने कब कहा है ? मुझे तो इस मामले में तुमसे अत्यन्त सहानुभूति है। यदि ये ही घटनाएँ मुझसे घटतीं तो मैं भी वही करती जो तुमने किया है और यदि न करती तो स्त्री कहलाने का मुझे कोई अधिकार न था। प्रवीण ! जो प्यार केवल सौन्दर्य के आधार पर किया जाए वह स्थायी नहीं होता किन्तु जो प्यार सहानुभूति और सद्व्यवहार की उपज हो उसमें कभी कमी नहीं हो सकती। जो लोग कहते हैं कि स्त्री सौन्दर्य पर मरती है वे बकते हैं। स्त्री जितनी सहानुभूति और सद्व्यवहार से प्रभावित होती है और किसी वस्तु से नहीं होती। मैं कुछ ऐसे पुरुषों को जानती हूँ जो सौन्दर्य के नाम पर शून्य हैं किन्तु उनकी अति सुन्दर पत्नियाँ उनपर प्राण छिड़कती हैं और वह इसलिये कि उनका व्यवहार उन्हें पसन्द है। मैं स्वयं भी ऐसी स्त्रियों में से हूँ जो सौन्दर्य से सद्व्यवहार को अधिक मान देती हैं और तुम्हारे बारे में भी मेरा यही निश्चय है। यदि तुम्हारे निकट सौन्दर्य का स्थान अधिक होता तो तुम प्रोफेसर वहीद से कभी भी प्यार करती होतीं और शायद आज तुम मियाँ बीवी भी बन चुके होते किन्तु तुमने उनके सौन्दर्य का कोई ख्याल न किया और उन्हें अपने भाई का मित्र ही समझती रही। हाँ, जब प्रोफेसर वहीद का सद्व्यवहार तुम्हारे सामने आया तो तुम उससे प्रभावित होकर उनके प्यार में डूब गईं। अस्तु, इस प्रकार के प्यार पर मैं तुम्हें बधाई देती हूँ और प्रार्थना करती हूँ कि इस प्यार का परिणाम सकुशल प्राप्त हो।'

प्रवीण यह सुनकर मुस्कराई और धीरे से बोली—

'आमीन' (ऐसा ही हो)

नसरत ने ठहाका लगाया और बोली—

'अच्छा, तो यह बात है। मतलब मुद्दई सुस्त गवाह चुस्त वाला मामला है।'

प्रवीण ने मुस्कराते हुए कहा—

'यह उदाहरण अवसर हीन है। इसमें यह संशोधन कर दीजिये कि

मुद्दई चुस्त गवाह सुस्त।'

'यह मुद्दई कौन है और गवाह कौन है ?'

'मुद्दई तो हर हालत में 'मैं' हूँ और गवाह आप।'

'तो मतलब तुम चुस्त हो और मैं सुस्त हूँ। लेकिन यह चर्चा छेड़ कर तो मैंने अपनी चुस्ती का प्रमाण दे दिया।'

'गवाह की चुस्ती अब इसमें भी तो है कि इस बेल को मंढ़े चढ़ाए। मुद्दई को तो आप सुस्त पहले ही कह चुकी हैं यदि गवाह ने भी चुस्ती न दिखाई तो इस प्यार का परिणाम सकुशल कैसे प्राप्त होगा ?'

नसरत ने प्रसन्नता के स्वर में कहा—

'हाँ, यह तुमने ठीक कहा है। अच्छा तो बताओ मैं तुम्हारी कैसे सहायता कर सकती हूँ ?'

प्रवीण ने कुछ देर मौन रहने के उपरान्त कहा—

'आप अब्बा जान के स्वभाव से परिचित हैं। वे बड़े पुराने विचारों के आदमी हैं और यह कभी सहन नहीं कर सकते कि लड़की अपने विवाह के बारे में सम्मति प्रकट करे। मैं तो उनसे कह ही नहीं सकती। हाँ, यदि आप चाहें तो उन्हें इस बात के लिए तैयार कर सकती हैं और मुझे आशा है वे खुशी से मान जाएंगे। अब जबकि आपने यह मामला छेड़ा है तो इसे पूरा करना आप का कर्तव्य है।'

नसरत ने कहा—

'बहुत अच्छा। मैं इसके लिये तैयार हूं। कोई उचित अवसर देख कर चचाजान से इसकी चर्चा कर दूंगी और तुम निश्चिन्त रहो मैं उन्हें तैयार कर ही लूंगी।'

यह कहते हुए नसरत ने अपनी रिस्टवाच की ओर देखा और यह कहती उठ खड़ी हुई—

'समय काफी हो गया है। अब खुदा ने चाहा तो परसों आऊँगी। और संभवतः उस दिन यह मामला तै करवा लूंगी।'

प्रवीण द्वार तक उसके साथ गई और उसे कार में बिठा कर वापस आ गई।

दिल्ली से वापिस आने के बाद वहीद की परेशानियाँ बढ़ गई थीं। एक मित्र का यों भरी जवानी में आत्म हत्या कर लेना उसके लिये एक बहुत बड़ी चोट थी। जिस समय उसे यह ध्यान आता कि नाज़िम की युवा मृत्यु का एक कारण वे सन्देह भी हैं जो मरने वाले को एक मित्र के बारे में हुए तो उसकी आत्मा उसे धिक्कारती सी प्रतीत होती। वह वास्तव में बिल्कुल निर्दोष था। उसे यह कदापि ज्ञात नहीं था कि नाज़िम पहिले से ताहिरा का मंगेतर है। उसे इस बात का खेद था कि उसने नाज़िम से सम्मति लेने से पूर्व वास्तविक स्थिति की जाँच पड़ताल करने का यत्न क्यों न किया। यदि वह ऐसा करता तो उसे एक प्रिय मित्र से हाथ न धोने पड़ते। और न मरने वाले को उसके विरुद्ध कोई सन्देह उत्पन्न होता और वे यों आत्महत्या करके अपने प्राण न दे देता।

वहीद इस मामले में कतई निर्दोष था किन्तु इसपर भी वह स्वयं को दोषी और पापी समझता था। इसका कारण वह प्यार और लगाव ही था जो उसे मरने वाले मित्र से था। यह एक वास्तविकता है कि अपराधी सदा स्वयं को निर्दोष समझता है किन्तु कुछ लोग जो बिल्कुल निर्दोष होते हैं अपने आपको अपराधी मानने लगते हैं। क्योंकि उनके अज्ञान का निशाना बनने वाले उनके प्रिय अथवा मित्र होते हैं। यही स्थिति वहीद की थी। वह कतई निर्दोष था किन्तु क्योंकि उसने अनजाने में एक मित्र को हानि पहुँचाई थी इसलिये वह अपने आपको दोषी समझ

लगा था। वहीद को जब पुरानी मुलाकातों की याद आती तो उसके दिल पर एक चोट सी लगती। वह अपने आपको सन्तुष्ट करने का यत्न करता किन्तु किसी प्रकार भी उसके मन को शान्ति प्राप्त न होती। वह और अधिक व्याकुल हो जाता। उसने नीति का सहारा लेकर अपने आपको निरपराध सिद्ध करना चाहा किन्तु उसका हृदय उसकी सम्पूर्ण युक्तियों को काट डालता और वह इस परिणाम पर पहुंचता कि सारा दोष उसी का है।

वहीद कई दिन से कालेज जाना छोड़ चुका था। उसके पिता ने उसे दिलासा देने का यत्न किया किन्तु यह यत्न भी व्यर्थ रहा। वह सारा दिन अपने कमरे में पड़ा रहता और इस मामले पर विचार करता रहता। वह जितना अधिक सोचता उतना ही अधिक उसे दुःख होता।

एक दिन वह अपने कमरे में लेटा इसी प्रकार के विचारों में खोया हुआ था कि प्रवीण उसके कमरे में प्रविष्ट हुई। वह उसे देखते ही उठ खड़ा हुआ और बोला—

'प्रवीण ! तुम यहाँ कैसे ?'

प्रवीण कुर्सी पर बैठ गई और कुछ देर तक चुप रहने के बाद बोली—

'मैंने सुना है कि आप कई दिन से कालेज नहीं गए।'

वहीद ने कहा—

'शायद अब मैं कालेज कभी न जाऊँगा।'

'क्यों ? क्या बात है ?'

'बात कुछ नहीं। अब कालेज जाने को जी ही नहीं चाहता।'

प्रवीण के नेत्रों में अश्रु झलक आए। वह उसकी ओर तकती हुई बोली—

'मैं यह जानती हूँ कि आपको भाईजान की मृत्यु का अत्यन्त दुःख हुआ है किन्तु मेरी ओर ही देखिये। मैं मरने वाले की बहिन हूँ लेकिन मरने वालों के साथ मरा तो नहीं जाता। संसार में रहना हो तो संसार

के कामों से जी नहीं चुराया जा सकता। मेरी खुशी इसी में है कि आप कालेज जाने लगें और इस दुःख को भूल जाएँ।'

वहीद ने भर्राई हुई आवाज में कहा—

'प्रवीण! तुम ये बातें केवल मेरा दिल बढ़ाने के लिये कर रही हो। अन्यथा मैं जानता हूँ कि तुम्हें अपने भाई की मृत्यु का कितना दुःख हुआ है। वैसे नाज़िम मेरे मित्र थे। उनकी मृत्यु मेरे लिये कुछ कम दुःख-दायी नहीं किन्तु जब मैं यह ख्याल करता हूँ कि मैंने अनजाने उनका मन दुखाया और उन्होंने अन्त में अपने प्राण दे दिये तो मुझे और भी दुःख होता है। मेरा मित्र तो अब संसार से जा चुका है इसलिये उससे क्षमा माँगने का प्रश्न ही नहीं उठता किन्तु मैं तुमसे क्षमा अवश्य माँगता हूँ। तुम्हारे भाई की मृत्यु का कारण मैं हूँ। मेरी ही गलती से नाज़िम ने अपनी जान दे दी।'

यह कहते-कहते वहीद ने बच्चों के समान फूट-फूटकर रोना आरम्भ कर दिया। प्रवीण भी न रह सकी और रोने लगी। वहीद ने रोते हुए कहा—

'प्रवीण! मैं अपने मां बाप का एक ही बेटा हूँ। मेरा संसार में और कोई भाई नहीं है। मैं नाजिम को अपना भाई समझता था। अफ-सोस, उसकी मृत्यु ने मेरी कमर तोड़ दी है और मैं अब अपने आपको इस संसार में अकेला अनुभव करता हूँ। वह जीवन जिसे मैं नाजिम के प्यार में अत्यन्त आकर्षक समझता था वह अब एक ऐसा बोझ सिद्ध हो रहा है जिसे ढोना मेरे बस की बात नहीं। नाजिम के बिना मुझे यह जीवन निरर्थक दिखाई पड़ता है। जीवन मित्रों और सगे सम्बन्धियों साथ तो एक स्वर्ग है किन्तु उनके बिना नरक से कम नहीं। अब इस जीवन में मुझे कोई आकर्षण अनुभव नहीं होता। हो भी कैसे? संसार में मेरा कोई मित्र नहीं। एक था सो वह मुझसे रूठ कर इस संसार से चल बसा।

प्रवीण की चीखें निकल गईं और रोती हुई बोली—

मैं भी तो अब इस संसार में अकेली हूँ। मेरा कोई दुःख दर्द का साथी नहीं। भाई का साथ छूट जाना मेरे लिये कोई साधारण बात नहीं। किन्तु क्या करूँ? कुछ नहीं कर सकती। पुरुष तो खैर अपने मन बहलाने का कोई साधन जुटा सकता है किन्तु स्त्री बेचारी क्या करे?'

प्रवीण को रोते देख कर वहीद ने उसे बढ़ावा देना आरम्भ किया और बोला—

'प्रवीण' तुम परवा न करो। मैं, तुम्हारी हर सेवा करने को तैयार हूं। तुम्हें देखकर मुझे कुछ धैर्य सा मिलता है। तुम मेरे स्वर्गीय मित्र की बहिन हो। वही चेहरा मुहरा, वही चाल ढाल, वही बातचीत करने का ढंग और वही आवाज में लोच। तुमको अपने सामने देखकर मुझे यह अनुभव होता है कि नाज़िम सामने बैठा है। तुम वह तो नहीं हो लेकिन उसकी बहिन तो हो। मेरे मित्र की जिन्दा तस्वीर हो। वह यदि मर गया है तो तुम्हारा प्यार तो मुझे प्राप्त है।'

कहते-कहते वहीद रुक गया और कुछ यों अनुभव करने लगा कि उसने एक ऐसी बात कह दी है जो उसे नहीं कहनी चाहिये थी। प्रवीण उसकी लज्जा को ताड़ गई और अपने अश्रु पोंछती हुई बोली—

'आप रुक क्यों गये? कहिये क्या बात है?'

वहीद ने कहा—

'मैं जल्दी में प्यार का प्रयोग कर गया हूँ मुझे इसका प्रयोग नहीं करना चाहिये था।'

प्रवीण के चेहरे पर हल्की मुस्कराहट-सी खेल गई और बोली—

'प्यार का शब्द कोई गाली तो नहीं।'

वहीद ने कुछ रुक कर कहा—

'हाँ, यह शब्द गाली तो निश्चय ही नहीं है किन्तु स्त्री और पुरुष का प्यार दो तरह का है।'

वह फिर चुप हो गया और कुछ सोचने लगा। प्रवीण ने मुस्कराते हुए कहा—

'हाँ, कहिये न कि प्यार दो तरह का कैसे होता है ?'

वहीद ने कहा—

'प्यार का एक रूप तो वह है जो तुम और स्वर्गीय नाजिम में था। अर्थात् भाई बहिन का प्यार। दूसरा वह जो पति-पत्नी में होता है।'

यह कहकर वहीद पुनः चुप हो गया। प्रवीण ने कहा—

'हाँ हाँ, यह सही है फिर ?'

वहीद ने प्रवीण की ओर देखते हुए कहा—

'मेरा मतलब यह था कि मालूम नहीं आप किस प्रकार के प्यार को पसन्द करती हैं। कुछ भी हो मैं दोनों प्रकार से तैयार हूँ।'

प्रवीण लजा-सी गई। उसने अपने दोपट्टे का आंचल सरका कर अपना माथा छुपाया और नीचे की ओर देखने लगी। दोनों कुछ देर तक मौन बैठे रहे। अन्त में वहीद ने इस मौन को भंग किया और बोला—

'प्रवीण ! तुमने मेरी बात का कोई उत्तर नहीं दिया।'

'क्या बात ?'

'मैंने पूछा है कि तुम किस प्रकार के प्यार को पसन्द करती हो। तुमने अभी-अभी यह कहा था कि भाई के मरने के बाद मैं अकेली रह गई हूँ। तुम्हारे इस अकेलेपन को दूर करने की विधि एक तो यह है कि तुम मुझे नाजिम की तरह समझने लगो। इस रूप में 'मैं' तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि मैं भी तुम्हें अपनी बहिन समझूंगा जैसा कि अब तक समझता हूँ। किन्तु यदि तुम दूसरी तरह के प्यार को उचित समझती हो तो मैं इसके लिये भी तैयार हूँ क्योंकि हम दोनों में कोई ऐसी शरई (धार्मिक) रुकावट नहीं जो सगे बहिन भाई में होती है।'

प्रवीण का सिर लाज के मारे और झुक गया। वहीद ने उसे मौन देख कर फिर कहा—

'हाँ, तो प्रवीण ! मेरी बात का उत्तर दो न ?'

प्रवीण के नेत्र गीले हो गए। उसने वहीद की ओर कुछ इस प्रकार

देखा जैसे वह उससे किसी सहायता की इच्छुक हो किन्तु जिह्वा से कुछ न कह सकी। वहीद ने कहा—

'हाँ हाँ' कहो क्या बात है ?'

प्रवीण ने लजाये हुए स्वर में कहा—

'आप मुझे किस प्रकार के प्यार के योग्य समझते हैं ?'

मैं तुम्हें दोनों प्रकार से एक समान ख्याल करता हूँ। किसी विशेष प्रकार पर इस लिये जोर नहीं देना चाहता कि कहीं तुम्हें किसी प्रकार का सन्देह न हो।'

'कैसा सन्देह ?'

'जैसे यह कि अपने स्वर्गीय मित्र की खोज में मैंने जो भाग दौड़ की है उसका मैं पारिश्रमिक माँग रहा हूँ। लेकिन प्रवीण। विश्वास करो कि *यह एक बिल्कुल अलग चीज है। मैं अपनी इस भाग दौड़ को* रिश्वत के रूप में पेश कर के तुम्हारी विवशताओं से कोई लाभ उठाना नहीं चाहता।'

'यह मैं जानती हूँ। आपके सद्व्यवहार पर मुझे कोई सन्देह नहीं। आप यह बताइये कि आप किस प्रकार के प्यार को पसन्द करते हैं ?'

'मेरे ख्याल में दूसरे प्रकार का प्यार अच्छा है क्योंकि वह अधिक मजबूत है। पहले प्रकार का प्यार भी मजबूत सिद्ध हो सकता है किन्तु क्यों कि हम दोनों में खून का कोई सम्बन्ध नहीं इस लिये हो सकता है कि हम दोनों पर अंगुलियाँ उठने लगें। ऐसी दशा में उचित यही है कि प्यार की एक ऐसी लड़ी में बन्द जाएं जिस पर संसार वालों को कोई आपत्ति न हो। कहो क्या राय है ?'

प्रवीण ने लजाई दृष्टि से उसे देखा फिर शीघ्र ही आँखें झुकाती हुई बोली—

'मैं आप से सहमत हूँ।'

वहीद ने मुस्कराते हुए कहा—

'यह तो कोई बात न हुई। तुमने एक सन्दिग्ध-सा वाक्य कह

दिया है। साफ-साफ कहो कि तुम मुझे नाजिम समझना चाहती हो या मियाँ।'

प्रवीण ने धरती पर दृष्टि गाड़े हुए कहा—

'आप मेरे मुंह से क्यों कहलवाना चाहते हैं? स्त्री का मौन ही इस की स्वीकृति है। यदि मैं आप से सहमत न होती तो खुले तौर पर कह सकती थी कि मैं आप की फरमाइश पूरी नहीं कर सकती किन्तु आश्चर्य है कि जब आप मेरे मौन का अर्थ न समझ सके तो मैंने जुबानी आपकी राय से सहमति प्रकट कर दी किन्तु आप ने मेरे इस वाक्य को सन्दिग्ध बना दिया। अब मैं कैसे आप को विश्वास दिलाऊं कि मैं आप की दासी बन कर रहने की इच्छुक हूं?'

वहीद का चहरा प्रसन्नता से चमक उठा और बोला—

'प्रवीण! अब मुझे यह अनुभव होने लगा है कि मेरा खोया हुआ मित्र मुझे मिल गया है। मैं अपनी हार्दिक शान्ति के लिए तुमसे फिर यह पूछ लेना चाहता हूँ कि मैंने यह निवेदन करके तुम को कोई विवश तो नहीं किया? क्या तुम अपनी इच्छा से मेरे प्यार के निमंत्रण को स्वीकार कर रही हो?

प्रवीण ने धीरे से कहा—

'यह आप ही की इच्छा नहीं मेरी भी हार्दिक इच्छा है। मैंने आप की फरमाइश को मानकर अपनी एक इच्छा को पूर्ण किया है। इसलिये विवशता का प्रश्न ही नहीं उठता।'

'तो क्या आप पहिले से यह चाहती थीं?'

'यह आप अपने मन से पूछिये।'

'हाँ, मैं तो पहिले से चाहता था किन्तु मुँह पर लाते डरता था कि कहीं तुम्हें मेरे बारे में कोई सन्देह न हो।'

'यही दशा मेरी थी।'

'तो फिर तुमने मुझे पहले से क्यों नहीं कहा।'

प्रवीण ने मुस्कराते हुए कहा—

'खूब प्रश्न किया है यह आपने। मेरा ख्याल है कि आपने स्त्री के भाव जगत् का अध्ययन नहीं किया। स्त्री क्योंकि कोमल भावों से ओत-प्रोत है इसलिए वह पुरुष से पहले प्रभावित होती है। किन्तु स्त्री होने के कारण अथवा स्वभावगत लाज से वह इसे व्यक्त नहीं करती और इस बात की इच्छुक होती है कि प्यार की पहल पुरुष की ओर से हो। अब आप ही कहिये कि मैं आप से इसकी चर्चा कैसे करती ?"

'प्रवीण ! यदि तुम्हारे कथनानुसार प्यार का आरम्भ तुम ही से हुआ है तो क्या मैं यह पूछ सकता हूँ कि तुम कब से मुझे चाहती हो ?'

'आप मुझे कब से चाहते हैं ?"

'पहले तो मैं तुम्हें अपने मित्र की बहिन ही ख्याल करता था। तुम से केवल इतना ही लगाव था जितना बहिन से हो सकता है किन्तु नाज़िम की मृत्यु के बाद जब मैंने तुम्हें बहुत ज्यादा दुःखी और बेचैन देखा तो तुमसे एक प्रकार की सहानुभूति सी उत्पन्न हो गई। इसके बाद न जाने यह विचित्र सी इच्छा क्यों उत्पन्न हुई कि तुम मेरी जीवन साथी हो। नाज़िम के जीवन काल में प्रायः तुमसे मिलने और बातें करने का अवसर प्राप्त हुआ किन्तु कभी यह इच्छा उत्पन्न न हुई हालाँकि मुझे विश्वास है कि नाज़िम इस मामले में मेरा साथ देते। कुछ भी हो, मैं नहीं जानता कि यह इच्छा कैसे उत्पन्न हुई। हाँ, तो यह कहो तुम कब से मुझे चाहती हो ?

प्रवीण थोड़ी देर तक चुप रही। फिर बोली—

'मैं' भी भाई जान के जीवन काल में आपको अपने भाई का मित्र मानती थी। मैंने यह कभी नहीं सोचा था कि आपके साथ कोई और सम्बन्ध भी निश्चित हो सकता है। भाई जान के लिए आपने जो दौड़ धूप की और आपको उनकी मृत्यु पर जो शोक हुआ मैं उससे प्रभावित हुए बिना न रह सकी और और मेरे मन में यह इच्छा करवटें लेने लगी कि यदि हम दोनों एक हो जाएं तो शायद यह दुःख हमें भूल जाए। संक्षेप में यह कि हम दोनों का प्यार सौन्दर्य और आसक्ति के बल पर

नहीं जो प्राय: किस्से कहानियों में पढ़ते रहते हैं बल्कि आपके सद् व्यवहार और सहानुभूति और मेरी विवशता और परेशानी से उत्पन्न प्रभाव का परिमाण है । आप खुदा की महरबानी से सुन्दर और युवक हैं किन्तु आपका सौन्दर्य मुझे प्रभावित न कर सका । हाँ, आपके सद् व्यवहार ने मुझे अवश्य अपने अधीन कर लिया । और यही स्त्री का स्वभाव है । वह सौन्दर्य से कहीं अधिक व्यवहार से होती है । अपने बारे में मेरी सम्मति यह है कि मैं कोई सुन्दर नहीं इसलिए यह बात निश्चित है कि आप भी मेरे रूप से प्रभावित नहीं हुए । हाँ, भाई की मृत्यु के उपरान्त मुझे जिन परेशानियों का सामना हुआ उन्हें देखकर आपके हृदय में सहानुभूति उत्पन्न हुई जिसने धीरे-धीरे प्रेम का रूप धारण कर लिया ।'

'वहीद ने ठण्डी साँस भरते हुए कहा---

'प्रवीण ! यह तुमने सही कहा है । मेरे मित्र और तुम्हारे भाई की मृत्यु ने हमारे हृदय पर जो गहरे घाव लगाए हैं आशा है वे हमारे आपसी प्रेम से मन्द पड़ जायेंगे । प्रवीण ! सत्य कहता हूँ जब मैं तुम्हें देखता हूँ तो मुझे विश्वास हो जाता है कि नाजिम मरा नहीं जीवित है ।'

प्रवीण ने कोई उत्तर न दिया । वह वहीद के सामने कुर्सी पर बैठी नीचे देख रही थी । वहीद पलंग पर टाँगें लटकाए बैठा उससे बातें कर रहा था । न जाने उसके मन में क्या आया कि उसने प्रवीण की कोमल और नरम कलाई को पकड़ कर उसे अपने पास पलंग पर खेंच लिया । वह चुपके से आकर उसके पास बैठ गई । वहीद ने चाहा कि उसके नरम और गदराए शरीर को अपनी गोद में लेने से पूर्व कोई भूमिका बांधे किन्तु उसकी बुद्धि में कोई बात न आ सकी । अन्त में उसने अपनी दाहिनी भुजा उसके गले में डाल दी । प्रवीण ने प्यार भरी दृष्टि से उसे देखा । वहीद को उसकी नरगसी और मस्त आँखें प्यार का निमंत्रण देती प्रतीत हुईं । यह देखकर उसकी शिराओं में एक बिजली की रौ

सी दौड़ गई। उसने उसके शरीर को अपनी गोद में ले लिया। वह अपने जीवन में अनेक बार अपने मित्रों से गले मिला था और उसे एक विशेष प्रकार की प्रसन्नता का अनुभव हुआ था किन्तु प्रवीण को गोद में लेकर वह एक इस प्रकार का माधुर्य अनुभव कर रहा था जिसका इसे पहिले अनुभव न था। दोनों के हृदय एक दूसरे से मिले हुए थे और वे उनकी धड़कनें आसानी से अनुभव कर रहे थे।

प्रवीण और वहीद काफी देर तक प्रेम और प्यार की बातें करते रहे। देखने में यह चीज़ बड़ी अस्वाभाविक प्रतीत होती है कि दोनों ने नाज़िम की मृत्यु का मातम करते-करते एक दूसरे से प्रेम करना आरम्भ कर दिया। बहिन अपने प्रिय भाई की मृत्यु को और मित्र अपने प्रिय मित्र की मृत्यु को भूल गया और दोनों प्यार के रंगीन प्रदेश में पहुँच गए किन्तु यदि दोनों के प्रेम के केन्द्र बिन्दु को सामने रखा जाए तो उनके प्यार में कोई अस्वाभाविकता दिखाई न देगी। प्रवीण और वहीद का पारस्परिक लगाव कोई नजर बाजी का परिणाम न था बल्कि उस सहानुभूति और सद् व्यवहार का परिणाम था जो एक बहुत बड़ी घटना के पश्चात् उनके हृदय में एक दूसरे के प्रति उत्पन्न हुए। वास्तविक चीज़ वही घटना थी किन्तु इसका जो प्रभाव हुआ उसने उन दोनों के ज़ख़मी हृदयों पर फाहे का काम किया। प्रवीण और वहीद को नाज़िम की मृत्यु का समान कष्ट था और यही स्वभाव अन्त में प्यार का रूप धारण कर गया।

कुछ देर के बाद प्रवीण ने कहा—

'अब मुझे घर चलना चाहिए। अब्बाजान परेशान हो रहे होंगे।'

'वहीद ने कुछ परेशानी के स्वर में कहा—

'तो प्रवीण ! अब यह हमारी प्यार की बेल कैसे मढ़े चढ़ेगी ?

प्रवीण ने मुस्कराते हुए कहा—

'इसका प्रबन्ध मैंने कर रखा है।'

'तो क्या तुमने पहले से इसका प्रबन्ध कर रखा है ?'

'हाँ, इसमें आश्चर्य की कौन सी बात है ?

'आश्चर्य की बात तो है ही। यह कहानी आज तो आरम्भ हुई और तुम कहती हो कि मैंने पहले से इसका प्रबन्ध कर रखा है ?'

'यह कहानी आज से आरम्भ नहीं हुई काफी देर से हो चुकी है। आज तो हमने केवल एक दूसरे को अपनी भावना से परिचित किया है।'

'हाँ, यह तुम्हारा कहना सही है। फिर क्या प्रबन्ध किया तुमने इस बारे में ?'

'मेरे चचा की एक बेटी है।' मैंने उन्हें यह काम सौंपा है। यह तो आप जानते हैं कि इस मामले में सीधे मैं अपने अब्बा से कुछ नहीं कह सकती। पहले तो मैं स्वयं भी इस बारे में उनसे कुछ कहना उचित नहीं समझती। दूसरे मेरे अब्बा पूरे पुरातन पंथी हैं और वे इस बात को बुरा समझते हैं कि बेटी अपनी शादी के बारे में बाप को कोई राय दे।'

वहीद ने कहा—

'हाँ, यह तुमने ठीक कहा है। मेरा विचार है कि तुम्हारी चचेरी बहिन की सहायता से यह काम हो जाएगा।'

प्रवीण ने वहीद को प्रेमपूर्ण दृष्टि से देखते हुए कहा—

'खैर, यह काम तो खुदा ने चाहा हो जाएगा। अब आप यह कहिये कि कालेज जाना कब आरम्भ करेंगे ? सच पूछिये तो यह सुन कर मुझे अति खेद हुआ है कि आपने भाईजान की मौत के दुःख में कालेज जाना भी छोड़ दिया है। मैं केवल आपको धैर्य देने के लिये आई थी किन्तु खुदा को यही स्वीकार था कि हम इस भेंट में एक दूसरे की हार्दिक दशा से परिचित हो जाएं। मेरे विचार में यह भी अच्छा ही हुआ है। अच्छा, मेरी बात का उत्तर दीजिये। क्या आप कल से कालेज जायेंगे ?'

वहीद ने उसका हाथ अपने हाथ में लेते हुए कहा—

'हाँ कल से मैं कालेज जाना आरम्भ कर दूंगा। मुझे अपने मित्र के मरने का अति क्लेश हुआ था और यह सोच भी नहीं सकता था कि कुछ दिनों तक कालेज जाने के योग्य हो सकूंगा किन्तु प्रवीण ! तुम्हारे प्यार ने मेरी टूटी कमर को सहारा दे दिया है और अब मैं यह अनुभव करने लगा हूँ कि अपनी नौकरी पर हाजिर होने के योग्य हो गया हूँ।'

प्रवीण ने एक ठण्डी साँस भर कर कहा—

'यही दशा मेरी थी। जीवन मेरे लिये बोझ बन गया था किन्तु आजसे मैं यह अनुभव करने लगी हूँ कि अभी मैं जीवित रह सकती हूँ। अपने लिये नहीं, आप के लिये।'

वहीद ने कहा—

'एक सच्चे मित्र की मृत्यु के पश्चात् मेरे मन की दुनिया सूनी सी हो गई थी। आज मैं फिर उसमें जीवन के लक्षण देख रहा हूँ। मैं निराशा के अंधकार में घिरा हुआ था। आज इस अथाह अंधकार में मुझे आशा की एक किरण दिखाई पड़ रही है। आज से हम दोनों एक हो गए हैं किन्तु दुनिया वालों की दृष्टि में अभी अलग-अलग हैं। खुदा करे यह दिखावटी जुदाई भी समाप्त हो जाए।'

प्रवीण ने मुस्कराते हुए कहा—

'आमीन' (ऐसा ही हो)

यह सुन कर वहीद खिलखिला कर हँस पड़ा और प्रवीण भी उस की हँसी में सम्मिलित हो गई। नाजिम की मृत्यु के पश्चात् शायद यह पहला अवसर था कि दोनों हंसे। वे लोगों को हँसते देख कर चकित होते थे कि दुःख दर्द में डूबी दुनिया में कहकहों का क्या काम ? किन्तु आज उन्हें प्रतीत हुआ कि इस दुनिया में कहकहे भी है और आहें भी। कहकहे प्रसन्नता को प्रकट करते हैं और आहें दुःख दर्द की भावना का पता देती हैं किन्तु वहीद और प्रवीण की हँसी कुछ भिन्न प्रकार की

थी। यह ऐसी हंसी थी जो एक लम्बी बीमारी से छुटकारा पाने वाले रोगी के होंठों पर प्रकट होती है। वे शोक और दुःख के रोगी थे जो उन्हें नाज़िम और उसकी पवित्र मृत्यु पर हुआ। नाज़िम की मृत्यु पर वे वैसे ही शोक ग्रस्त रहे किन्तु प्रेम पुनः जीवित हो उठा और उनका क्लेश प्रसन्नता में बदल गया। यह एक दार्शनिक सत्य है कि एक के बाद एक यदि दो प्रकार के शोक से सामना आ पड़े तो मनुष्य अत्याधिक दुःखी हो जाता है किन्तु यदि एक शोक जाता रहे तो दूसरा उस की प्रसन्नता में भूल जाता है। इन दोनों को दो प्रकार के शोक थे। एक नाज़िम की मृत्यु का शोक और दूसरा नाज़िम और ताहिरा के प्रेम की मृत्यु का। क्यों कि यह प्रेम एक नई करवट ले कर दूसरे मार्ग पर बढ़ चला और उसने पुनरुज्जीवन ने नाज़िम की मृत्यु को अपनी ओट में ले लिया इस लिये प्रवीण और वहीद नाज़िम की मृत्यु को भूल गए।

प्रवीण उठ कर खड़ी हो गई और बोली—

'अब मुझे आज्ञा दीजिये।'

वहीद ने उसके साथ ही उठते हुए कहा—

'मेरे विचार में शादी तक यदि यह मुलाकातों का क्रम चलता रहे तो क्या हर्ज है?'

प्रवीण ने कनखियों से उसे देखते हुए कहा—

'कोई हर्ज नहीं।'

'तो फिर तुम कभी कभार आ जाया करो।'

'आपकी आज्ञा का निश्चय ही पालन होगा किन्तु यदि आप भी कभी-कभी हमारे मकान पर आ जाया करें तो क्या ही अच्छा हो। अब्बाजान भी यह चाहते हैं कि आप उनसे मिलते रहा करें। वे आप का बहुत सम्मान करते हैं।'

'बहुत अच्छा, मैं भी तुम्हारे मकान पर आता रहूँगा।'

प्रवीण ने पग बढ़ाते हुए कहा—

'खुदा हाफिज़।'

यह कह कर वह वहीद के कमरे से निकल गई। सामने ही कोठी के आँगन में उसकी कार खड़ी थी उसपर बैठ कर वह अपने घर की ओर चल दी।

जब वह वहीद से मिलने के लिये उसके मकान पर पहुँची थी तो उसका मन शोक ग्रस्त था किन्तु वह एक ऐसी प्रसन्नता ले कर घर को लौटी जिसने उसके समस्त दुःख भुला दिये। उसकी कार लाहौर की बड़ी-बड़ी सड़कों पर से होती हुई बड़ी तेज गति से जारही थी। उसने सड़क के दोनों ओर दृष्टि डाली। शाम हो चुकी थी और लोग चहल कदमी करते हुए दिखाई पड़ते थे। सड़क के दोनों ओर बिजली के बल्ब चमक रहे थे और रात की फैलती अंधियारी उनके प्रकाश को स्पष्ट करती प्रतीत हो रही थी। प्रवीण ने मन ही मन अनुभव किया कि एक वस्तु के आकर्षण को स्पष्ट करने के लिये उसके विरोधी तत्व का होना आवश्यक है। प्रसन्नता के मूल्य को जानने के लिये दुःख और क्लेश भी उतने ही आवश्यक हैं। जब उसे संसार में कोई दुःख न था तो प्रसन्नता उसके निकट निरर्थक सी थी किन्तु जब उसे अपने भाई की मृत्यु देखनी पड़ी तो साधारण सी प्रसन्नता भी उसे बड़ी प्रतीत होने लगी। निःसन्देह उसे भाई की मृत्यु का अत्यन्त शोक था किन्तु वहीद से प्यार करके उसे जो प्रसन्नता हुई शोक की अनुभूति ने उसे इतना उजागर कर दिया कि वह अपने आपको अत्यन्त भाग्यशालिनी अनुभव करने लगी। आज जब वह कार में बैठी अपने घर की ओर जा रही थी तो उसे लाहौर का वातावरण प्रसन्नता से नृत्य करता प्रतीत हो रहा था और वह कुछ यों अनुभव कर रही थी जैसे वही प्रसन्न नहीं सारा संसार प्रसन्न है और दुःख क्लेश का नाम निशान तक मिट गया है।

बहुत दूर क्षितिज पर उसे कुछ मेघ लहराते हुए दिखाई पड़े और उसे ऐसा प्रतीत हुआ जैसे किसी मधुशाला से पियक्कड़ झूमते-झामते निकल रहे हों। उसने दूसरी ओर देखा तो सामने एक दूकान से रेडियो बजने की आवाज आ रही थी और उस के गीत वातावरण में

एक माधुर्य-सा उत्पन्न कर रहे थे। उसके निकट ही एक होटल था जिसके द्वार पर पाँच दस कारें खड़ी थीं। एक कार से कुछ सजीले युवक और युवतियाँ उतर कर होटल में प्रवेश कर रहे थे। उनके अट्टहास से आस-पास का वातावरण गूंज रहा था। इतने में उसकी कार एक और सड़क पर मुड़ी। उसकी नुक्कड़ पर अंग्रेजों का एक छोटा सा कब्रिस्तान था। उसकी दृष्टि श्वेत रंग कब्रों पर उड़ती हुई एक सिरे से दूसरे सिरे तक गई और उसे कुछ ऐसा प्रतीत हुआ जैसे मरने वालों की इस आरामगाह में भी जीवन नृत्य कर रहा है और यहाँ की खामोशी जीवन में संगीत उगल रही है। संक्षेप में यह कि उसे संसार की हर वस्तु प्रसन्नता से नृत्य करती हुई प्रतीत होती थी। उस ने मन ही मन में कहा कि यह सब कुछ मेरी अनुभूति के कारण है।

जब उसकी कार कोठी के भीतर आकर रुकी तो वह उसी प्रकार अपने विचारों में खोई हुई थी और एक ऐसी स्थिति में पहुँची हुई थी जहाँ प्रसन्नता ही प्रसन्नता हो और दुःख दर्द का नाम तक न हो। शोफर ने उसे सम्बोधित करते हुए कहा—

'बीबी जी! अब उतरिये ताकि कार गैराज में ले जाकर खड़ी कर दूँ।'

वह अपने विचारों से चौंकी और कार से उतरते हुए बोली—

'ओहो, तो क्या हम घर पर पहुँच गए हैं?'

शोफर मुस्कराया और कार को गैराज की ओर ले गया।

जब प्रवीण अपने कमरे में प्रविष्ट हुई तो वहां उसे नसरत भी बैठी हुई दिखाई पड़ी। वह उसे देखते ही बोली—

'कयामत की प्रतीक्षा करवाई तुमने। कहाँ गई थीं?'

प्रवीण ने अपने चेहरे को गम्भीर बनाते हुए कहा—

'तबीयत कुछ परेशान थी इसलिए टहलने नहर पर चली गई थी।'

नसरत ने मुस्कराते हुए कहा—

'अब तो तुम्हारी तबीयत खुश है न?'

यह सुनकर प्रवीण कुछ घबराई और बोली—

'मैं आपका मतलब नहीं समझी।

'मतलब तो समझ गई हो किन्तु थोड़ी गम्भीरता से काम ले रही हो।'

'यह एक और पहेली है मेरे लिये।'

'बात वास्तव में यह है कि जब कोई व्यक्ति बहुत प्रसन्न होता है और कुछ सोचकर अपनी प्रसन्नता को छुपाना चाहता है तो प्रदर्शनार्थ परेशानियों का कोई छोटा-मोटा किस्सा घड़ लेता है। यही अब तुमने किया है।'

'तो क्या आपका ख्याल है कि मैं प्रसन्न हूँ?'

'हाँ ख्याल तो यही है।'

'यह कैसे मालूम हुआ आपको?'

'तुमने अपने चेहरे पर बनावटी परेशानी लाते हुए शब्द परेशान कुछ इस ढंग से कहा कि तुम्हारी प्रसन्नता और अधिक नग्न हो गई। यदि तुम वास्तव में परेशान होती तो अपने परेशान होने की चर्चा न करती बल्कि अपनी परेशानी को छुपाने का यत्न करती। यों मालूम हुआ मुझे कि तुम परेशान नहीं हो, प्रसन्न हो।'

प्रवीण चुप हो गई। उसका चेहरा और खिल उठा। किन्तु उस विलास में लाज की भी कुछ मिलावट दिखाई पड़ती थी। इसकी यह दशा देखकर नसरत को वास्तविकता का ज्ञान हो गया और वह कहने लगी।

'तो मतलब तुम प्रोफेसर वहीद से मिलकर आ रही हो?'

प्रवीण के सुन्दर चेहरे पर कुछ लाज मिश्रित मुस्कराहट खेलने लगी। कुछ देर तक मौन रहने के बाद वह बोली—

'आपने तो पोल ही खोल दी है।'

नसरत ने विजयी ढंग से कहा—

'मैं मानव स्वभाव की विशेषज्ञ हूँ। तुम क्या समझती हो मुझे?'

प्रवीण ने मुस्कराते हुए कहा—

'खैर, अब तो मैं आपको बहुत कुछ समझने लगी हूँ। वास्तव में मैं वहीद से मिलकर आ रही हूँ।'

नसरत कुर्सी घसीट कर उसके निकट आ गई और बोली—

'तो सुनाओ क्या मामला रहा वहां ?'

'कैसा मामला ?'

'फिर वही बात ? मालूम होता है तुम्हें मुझ पर विश्वास नहीं है। मैं तुम्हें पहले भी कह चुकी हूँ कि इस मामले में मैं तुम्हारे साथ हूँ। और तुम्हारी पूरी-पूरी सहायता करूंगी। फिर मुझसे वास्तविक बात छुपाने का कारण ? और मैं तुम्हारी सहेली भी तो हूँ ?'

प्रवीण ने लजाते हुए कहा—

'प्रोफेसर वहीद से आज मेरी विस्तार से बातचीत हुई है।'

'यह चर्चा कैसे छिड़ी ?

'बस यों समझ लीजिये कि बातों-बातों में चर्चा चल निकली। मेरा ख्याल था कि शायद मैं ही उनके प्यार में तड़प रही हूँ किन्तु पता चला कि वे भी मेरे लिए बेचैन हो रहे हैं। यह आपने सही कहा था कि मन को मन की राह होती है। मुझे उनसे जैसा प्यार है वैसा ही उन्होंने बताया।'

'तो तात्पर्य यह हुआ कि तुम दोनों ने मिल कर मामला तै कर लिया है।'

'हाँ, बिल्कुल यही हुआ है किन्तु क्या तुम्हें मेरा उनसे यों मिलना पसन्द नहीं ?'

'यह तुमने कैसे समझ लिया है ?'

'आपकी बातचीत के ढंग से यह प्रतीत होता है।'

'यह तुमने गलत समझा है। बल्कि मेरा विचार यही था कि इससे पूर्व कि मैं चचा जान से यह चर्चा करूँ तुम दोनों मिलकर सारा मामला तै कर लो। यह तुमने बड़ा अच्छा किया कि प्रोफेसर वहीद से मिलकर

बातचीत कर ली। किन्तु हाँ, यह कहो कि प्रोफेसर वहीद इस सम्बन्ध से प्रसन्न तो हैं ?'

'हाँ, हाँ, वे बहुत प्रसन्न हैं।'

'बिल्कुल तुम्हारे समान ?'

'हाँ, बिल्कुल मेरे समान।

नसरत ने कुछ परिहास के स्वर में कहा—

'अच्छा यह बताओ क्या कुछ बातें हुई तुम दोनों में ? तुम दोनों ने खूब आहें भरी होंगी और एक दूसरे को उपालम्भ दिये होंगे। मेरा मतलब यह है कि ऐसी मुलाकातों में प्रायः यही कुछ होता है।'

प्रवीण कुछ लजा सी गई और बोली—

'बहिन ! आप भी हद करती हैं। ये बातें हम में क्यों होने लगीं ?'

'तब फिर क्या तुम दोनों में ऋतु विषयक बातचीत होती रही ?'

प्रवीण हंस पड़ी और बोली—

'यह भी खूब रही। हमारी बातों में मौसम कहां से टपक पड़ा ?'

नसरत ने आनन्द लेते हुए कहा—

'नहीं, ऐसी मुलाकातों में प्रायः ऋतु की चर्चा चल जाया करती है। हाँ, सब किस्सा सुनाओ मुझे। यों आनन्द नहीं आएगा।'

'बहिन ! जाने दो ऐसी बातों को। वल्लाह, मुझे शरम आती है।'

'एक पुरुष के साथ ऐसी बातें करते हुए तो तुम्हें शरम नहीं आई और एक सहेली को सारा किस्सा सुनाते हुये लजा रही हो। यह तो ठीक बात नहीं है'

'बहिन ! बस यों समझ लो कि वे मुझे बहुत चाहते हैं।'

'यह तो मैं भी जानती हूं लेकिन मैं वह पूछती हूँ कि चर्चा कैसे चली। क्या-क्या बातें हुई। आमने सामने बैठकर बातचीत होती रही या एक ही जगह बैठकर।'

प्रवीण ने दोनों हाथों से अपना मुँह ढाँपते हुये कहा—

'हाय अल्लाह ! ये किस तरह की बातें पूछ रही हैं ?'

नसरत ने उसे अपनी दोनों भुजाओं में लेकर भींचा और बोली—

'प्रवीण ! शायद तुम यह नहीं जानती कि खलीक (नसरत के पति का नाम) से मुझे विवाह से पहिले ही प्यार था। विवाह का वास्तविक कारण भी यही था। मैं भी तुम्हें बताऊँगी कि हम दोनों में कैसे प्रेम आरम्भ हुआ। हमारी मुलाकातों में क्या कुछ होता रहा। तुम इस समय जीवन के जिस अंश में प्रवेश कर रही हो वह मेरे लिए कुछ नया नहीं। इन हालात से मैं भी गुजर चुकी हूँ। हाँ, ऐसी चर्चा सुन नेमें मुझे कुछ आनन्द-सा आता है, न जाने क्यों ?' हाँ, तो आरम्भ करो अब। कैसे चर्चा छिड़ी ? लेकिन तुम्हें मेरे सिर की सौगन्ध सच बताना। कोई बात छूटे नहीं।'

यह सुनकर प्रवीण की लाज दूर हो गई और उसने नसरत के सामने यह चर्चा आरम्भ कर दी कि पहले पहल इन दोनों में क्या बात चीत रही। फिर वास्तविक चर्चा कैसे चली। कैसे वहीद ने उसे अपने पास बिठा कर प्यार किया। और किस प्रकार उन दोनों में प्यार के वचन का लेन देन हुआ।

जब प्रवीण नसरत को घटना सुना रही थी तो उसे एक प्रकार के आनन्द का सा अनुभव हो रहा था। उसे कुछ यों प्रतीत हो रहा था जैसे वह अब भी वहीद से प्यार की बातें कर रही है और वहीद उसे गोद में लिये बैठा है और अपनी अँगुलियों से उसकी लटों में कंघी कर रहा है। उसने कई बार अपनी सहेलियों के मुँह से ऐसी ही आप बीतियाँ सुनी थीं और उसे आश्चर्य होता था कि ये लड़कियाँ बीती बातें क्यों दोहराती हैं ? आज उस पर मनोवैज्ञानिक वास्तविकता स्पष्ट हुई कि इस प्रकार की घटनाओं की चर्चा में भी सुनाने वाले को एक विशेष प्रकार का आनन्द अनुभव होता है। यह और बात है कि वह वास्तविक आनन्द से कुछ कम होता है क्योंकि नकल और असल में भी तो अन्तर है।

जब प्रवीण अपनी आप बीती सुना रही थी तो नसरत उसे गोद में

लिये बैठी थी। घटना के अनुसार उसकी भुजाओं की पकड़ में खिंचाव और ढील उत्पन्न हो रही थी और प्रवीण यह समझ रही थी कि ठीक उसी के समान नसरत भी इन बातों से आनन्द ले रही है।

जब प्रवीण पूरी घटना सुना चुकी तो नसरत ने उसे जोर से भींचा और उसके गुलाब की पंखड़ियों जैसे पतले-पतले होठों का चुम्बन लेती हुई बोली—

'काश ! मैं प्रोफेसर वहीद के रूप में होती ?'

प्रवीण यह सुनकर खिलखिला का हँस पड़ी और बोली—

'अच्छा तो अब आपको भी मुझसे इश्क करने का शौक पैदा हुआ है ?'

नसरत ने कहा—

'क्यों ? हर्ज है इसमें ? मेरी ही क्या बात है, तुम्हारा सौन्दर्य हर देखने वाली आँख को आकृष्ट करने के लिये पर्याप्त है।'

प्रवीण ने हँसते हुए कहा—

'बस साहब ! आगे न बढ़िये। मुझे आपने हरजाई क्यों समझ लिया ?'

नसरत ने अट्टहास किया और बोली—

'हाँ यह मुझसे भूल हुई है। मुझे यह नहीं कहना चाहिये था। तुम्हारे सौन्दर्य का आनन्द लेने का अधिकार अब केवल प्रोफेसर वहीद ही को है। मैं तो केवल कमीशन ले रही हूँ।'

यह कहते हुए नसरत ने अपने होंठ फिर प्रवीण के होठों पर रख दिये।

नसरत और प्रवीण काफी देर तक हास-परिहास करती रहीं। नसरत प्रवीण से कोई तीन-चार वर्ष बड़ी थी इसलिये प्रवीण उसका बहुत सम्मान करती थी और उसे अपनी बड़ी बहिन ख्याल करती किन्तु दो ही मुलाकातों में वे एक दूसरी से बहुत अधिक घुल मिल गईं। प्रवीण एक सभ्य लड़की थी। उसका अपनी एक चचेरी बहिन से जो आयु में उससे बड़ी थी यों घुलने मिलने का निश्चय कभी न था किन्तु नसरत ने कुछ कारणों से सहेलीपन का सम्बन्ध बीच में लाकर उसे घुलने मिलने के लिये विवश कर दिया और यही हुआ। वे बहिनों से सहेलियाँ बन गईं। आज की भेंट में वे दोनों एक दूसरी से खूब पटती रहीं। दो स्त्रियों के यों आपस में लिपटने का कोई विशेष परिणाम तो नहीं होता किन्तु सुना है कि जो नवयुवतियाँ कुछ सामाजिक और धार्मिक बन्धनों के कारण पुरुषों से मिलने में स्वतंत्र नहीं होतीं वे इसी प्रकार अपनी तसल्ली कर लेती हैं किन्तु यह कहना कठिन है कि नसरत और प्रवीण का यह चुम्बन आलिंगन उसी तसल्ली का कारण था अथवा प्यार के उस आधिक्य का जो दो बहिनों में सहेलीपन उत्पन्न हो जाने से हो गया था। इसके अतिरिक्त नसरत एक विवाहिता और प्रवीण अत्यन्त लजालु लड़की थी इसलिये यह बात कुछ अनुमान के बाहिर की प्रतीत होती है कि उनका परस्पर यों लिपटना उन भावनाओं की पूर्ति के लिये हो जो कुछ बन्धनों के कारण प्रायः बस के बाहर हो जाती हैं। हाँ, यह सम्भव है कि दोनों के हृदय में प्यार की एक चुभन

सी उपस्थित थी इसलिये उन्होंने वास्तविक आनन्द की अनुभूति के लिये नकल का सहारा लिया हो। कुछ भी हो वे काफी समय तक एक दूसरी की गोद में लिपटी रहीं। अन्त में प्रवीण ने नसरत की पकड़ से स्वतन्त्र होते हुए कहा—

'तो क्या तुमने हमारे प्यार की पूर्ति का भी कोई प्रबन्ध किया ? सच पूछो तो यह आग तुम्हारी ही लगाई हुई हैं।'

नसरत ने हँसते हुए कहा—

'तो मतलब यह हुआ कि दोनों में वास्तव में कोई प्यार न था और इसको आरम्भ करने वाली मैं ही हूँ किन्तु शायद तुम यह नहीं जानती कि प्रेम दो दिलों की भावगत एकता का नाम है। किसी तीसरे व्यक्ति के आरम्भ किये वह पैदा नहीं होता। हाँ, तुम यह कह सकती हो कि प्यार करने का जो रास्ता तुमने निश्चित किया था वह बहुत लम्बा था और मेरे कारण उसकी लम्बाई बहुत कम हो गई।'

प्रवीण ने कुछ बिगड़ने के ढंग पर कहा—

'तो क्या तुमने अब प्रेम पर दार्शनिक चर्चा आरम्भ कर दी ? चलो, मैं यह मानती हूँ कि हम दोनों में पहिले से प्यार था किन्तु इस आग को हवा और तेल देकर भड़काने वाली तो तुम ही हो।'

'यह अपराध वास्तव में मेरा है। अब जो दण्ड तुम देना चाहो उसे मैं सहन करने को तैयार हूँ।'

'दण्ड यही है कि अब इस प्यार की पूर्ति का कोई प्रबन्ध करो। और अब्बाजान से कह कर यह सम्बन्ध तै करवा दो।'

'मुझे इससे कब इन्कार है ? बल्कि सच पूछो तो मैं आज इसी मतलब से आई हूँ।'

'तो फिर मिल लो अब्बाजान से। वे इस समय अपने कमरे में हैं।'

'बहुत अच्छा। अभी लो।'

यह कहते ही नसरत उठकर मियाँ मैराज-उद्दीन के कमरे की ओर चल दी और प्रवीण के देखते-देखते उसमें जा पहुँची। उसका हृदय

ज़ोरों से धड़क रहा था और वह यह सोच रही थी कि देखें नसरत यह बातचीत कैसे आरम्भ करती है ? उसे डर था कि कहीं नसरत इस बातचीत को गलत ढंग से आरम्भ न कर दे किन्तु नसरत व्यवहार कुशल और बुद्धिमती लड़की थी और जानती थी कि मियाँ मैराज-उद्दीन जैसे पुरातन पंथी और पुराने विचारों के व्यक्ति से यह बातचीत कैसे आरम्भ करनी चाहिये। मियाँ मैराज-उद्दीन कमरे में बैठे एक पुस्तक के पृष्ठ पलट रहे थे। नसरत ने प्रवेश करते हुए कहा—

'चचाजान ! आदाब अर्ज करती हूँ।'

मियाँ मैराज-उद्दीन ने उसे देखते हुए कहा—

'जीती रहो बेटी ! कहो क्या हाल है तुम्हारा ?'

नसरत ने उनके सामने बैठते हुए कहा—

'चचाजान ! खुदा का शुक्र है। कहिये, आप तो अच्छे हैं न ?'

'हाँ, बेटी जीवन के भले बुरे दिन काट रहा हूँ। नाजिम के मरने के बाद तो इस दुनिया से कोई लगाव नहीं रहा। अब जी तो रहा हूँ लेकिन जीने की कोई इच्छा नहीं।'

'चचाजान ! नाज़िम भाई की मृत्यु का दुःख तो मुझे भी अत्यन्त है किन्तु क्या करूँ ? धैर्य ही करना पड़ता है।'

'हाँ, बेटी ! यह तुमने सही कहा। इसके सिवा और हो भी क्या सकता है ? हाँ, सुना है तुम्हारे अब्बाजान ने विवाह कर लिया है ? इस बुढ़ापे में उन्हें क्या सूझी ? मुझे उन्होंने विवाह में सम्मिलित होने का निमंत्रण दिया था किन्तु मुझे अब इस प्रकार के उत्सवों में सम्मिलित होते हुए कुछ कोफ्त सी होती है। मालूम नहीं क्यों ?'

'हाँ, अब्बाजान ने दोबारा शादी कर ली है। मैं स्वयं भी इस विवाह में सम्मिलित नहीं हुई। इस लिये नहीं कि मैं इस विवाह के विरुद्ध थी बल्कि इस लिये कि मैं उन दिनों बीमार थी और विवाह में सम्मिलित होने के योग्य न थी।'

'बेटी ! मुझे तो यह बुढ़ापे की शादी पसन्द नहीं। हमें अपने बच्चों

की शादी की ओर ध्यान देना चाहिये न कि अपनी शादियाँ रचाने बैठ जाएं। अब देखो प्रवीण अब माशा अल्लाह जवान है। और मुझे हर समय यही चिन्ता रहती हैं कि अपने जीते जी इसके विवाह का कर्तव्य पूरा कर दूं। अब यदि मैं उसके विवाह से आंखें मूंद कर स्वयं किसी ऐसे झमेले में फंस जाऊँ तो मेरे लिये यह उचित न होगा।'

नसरत इस अवसर की खोज में ही थी कि यह चर्चा छेड़ने का कोई कारण उत्पन्न हो जाए। जब मियाँ मैराज-उद्दीन ने प्रवीण के विवाह की चर्चा की तो इसे अवसर हाथ लग गया और उसने उनकी बात काटते हुए कहा—

'हाँ, चचा जान! प्रवीण का सम्बध अभी कहीं हुआ या नहीं? मेरा भी यही ख्याल है कि अब उसका विवाह कर देना चाहिये।'

मियाँ मैराज-उद्दीन ने एक ठण्डी सांस छोड़ते हुए कहा—

'बेटी' इसी चिन्ता में मुझे रात-रात भर नीन्द नहीं आती। हमारे खानदान की तो यह पुरानी रसम है कि इधर बेटी जवान हुई उधर इसका विवाह कर दिया। क्या करूं? अभी तक प्रवीण के विवाह का कोई प्रबन्ध नहीं हो सका कोई ढंग का रिश्ता भी तो मिले? वैसे उसके लिये पैगाम तो कई आ चुके हैं किन्तु अभी तक कोई सही लड़का. नहीं मिल सका। हाँ, तो तुम्हारी निगाह में है कोई अच्छा रिश्ता?'

नसरत कुछ देर तक सोचती रही फिर बोली—

चचा जान! प्रोफेसर वहीद के बारे में आप की क्या राय है? वही प्रोफेसर वहीद जो स्व० नाज़िम भाई के मित्र थे। मैंने सुना है कि उन्होंने नाज़िम भाई के लिये बड़ी दौड़ धूप की और उन्हें उसकी मृत्यु का अत्यन्त दुःख हुआ है। सभ्य होने के अतिरिक्त चलन और व्यवहार से भी सुना है अच्छे हैं। यदि उन्हीं से प्रवीण का सम्बन्ध हो जाए तो क्या हर्ज?'

यह सुनकर मियाँ मैराज-उद्दीन कुछ सोच में पड़ गए और चार पाँच मिनट तक सिर झुकाए बैठे रहे। नसरत ने फिर कहा—

'चचा जान ! आप ने कुछ उत्तर नहीं दिया ? क्या आप को यह सम्बन्ध पसन्द नहीं ?'

मिया मैराज-उद्दीन ने कहा—

'बेटी ! मुझे आज तक यह ख्याल ही नहीं आया था कि प्रवीण से वहीद का विवाह कर दिया जाए। मेरे ख्याल में लड़का अच्छा है और फिर पढ़ा लिखा है। यदि यह सम्बन्ध हो जाए तो मुझे कोई आपत्ति नहीं किन्तु यह बात मुझे कुछ उचित प्रतीत नहीं होती कि रिशते का पैगाम हमारे यहाँ से जाए। क्योंकि एक तो यह हमारी वंश परम्परा के विरुद्ध है दूसरे यदि मैंने ऐसा किया तो क्या आश्चर्य कि वे लोग इस सम्बन्ध को स्वीकार करने से इनकार कर दें। ऐसी स्थिति में मेरी क्या इज़्ज़त रहेगी ? उचित यही है कि यह मांग उन्हीं की ओर से आए। मैं उसे प्रसन्नता पूर्वक स्वीकार कर लूंगा। किन्तु हाँ, क्या तुम उन लोगों को जानती हो ?'

नसरत ने कहा—

'मैं उन लोगों को जानती तो नहीं किन्तु यदि आप आज्ञा दें तो किसी उचित ढंग से उन्हें इस सम्बन्ध के लिये तैयार करने का यत्न किया जा सकता है।'

मियाँ मैराज-उद्दीन कुछ देर रुक कर बोले—

'हाँ, हाँ, इस में क्या हर्ज है ? तुम्हें मेरी तरफ से पूरा-पूरा अधिकार है बेटी ! बात वास्तव में यह है कि मैं स्वयं भी वहीद को पसन्द करता हूँ। स्व० नाज़िम का मित्र है। कई वर्षों से उसका हमारे घर आना जाना रहा है। मैंने उसमें कोई बुरी बात नहीं देखी। यदि यह सम्बन्ध हो जाए तो मैं शान्ति के साथ मर सकूंगा।'

यह कहते हुए मियाँ मैराज-उद्दीन के नेत्रों से आँसु झरने लगे। नसरत ने उनका हौसला बढ़ाते हुए कहा—

'चचा जान ! आप कोई चिन्ता न करें। पूरा प्रयत्न करूंगी और खुदा ने चाहा तो यह सम्बन्ध हो जाएगा। आप धैर्य रखें। मांग उन

ही लोगों की ओर से आएगी और आपके अहम् पर कोई आंच न आएगी।

मियाँ मैराज-उद्दीन ने कहा—

'हां बेटी ! यह मामला अब तुम्हारे हाथ में है और मेरा ख्याल है यह काम जितना शीघ्र हो जाए उचित है। मुझे अब अपने जीवन का कोई भरोसा नहीं। साठ वर्ष की आयु हो चुकी है। यदि नाज़िम की मृत्यु का दुःख न होता तो शायद दो चार वर्ष और जीवित रहने की आशा होती किन्तु इस घटना ने मुझे और अधिक निर्बल कर दिया है। अब मैं एक टिमटिमाता हुआ दीपक हूँ जो वायु के साधारण झोंके से बुझ सकता है। मेरी शक्ति अब किसी साधारण सी बीमारी का भी सामना नहीं कर सकती। स्वयं मैं भी अब जीवित रहना नहीं चाहता किन्तु यह इच्छा अवश्य है कि मरने से पूर्व प्रवीण अपने मियाँ के घर में पहुंच जाए।'

नसरत ने उठते हुए कहा—

'चचा जान ! विश्वास रखिये। खुदा ने चाहा तो यह काम हो कर ही रहेगा। मैं अपनी ओर से कोई कसर उठा न रखूंगी।'

इसके पश्चात् नसरत आदाब कहकर कमरे से बाहर निकल गई। प्रवीण उसकी प्रतीक्षा में अपने कमरे के द्वार पर खड़ी थी। उसे देखते हुए कुछ व्याकुलता के साथ बोली—

'कहो क्या मामला तै हुआ ?'

नसरत ने अपने चेहरे पर बनावटी गम्भीरता लाते हुए कहा—

'प्रवीण ! खेद है मैं अपने उद्देश्य में असफल रही हूँ।'

प्रवीण घबरा गई और बोली—

'साफ-साफ कहो क्या बात हुई है ?'

नसरत ने अपनी मुस्कराहट को छुपाते हुए कहा—

'मैंने चचाजान से चर्चा की थी किन्तु वे वहीद से तुम्हारा विवाह करने को तैयार नहीं।'

यह सुनते ही प्रवीण के दिल पर एक चोट-सी लगी। उसे कमरे का वायुमण्डल घूमता-सा प्रतीत हुआ। वह गिरने ही को थी कि नसरत को खतरे का आभास हो गया और शीघ्रता से बोली—

'अरे, मैं तो हँसी कर रही थी। तुमने सच मान लिया इसे ? मैं तुम्हें बधाई देती हूं कि चचाजान ने यह सम्बन्ध स्वीकार कर लिया है।'

प्रवीण का हृदय जोर से धड़क रहा था। यह सुनते ही उसकी परेशानी कुछ कम हुई और बोली—

'क्या सच कह रही हो ?'

वल्लाह सच कह रही हूँ। चचाजान को यह सम्बन्ध स्वीकार है।'

'क्या कहा उन्होंने ?'

'फिर वही बात ? कह जो दिया कि उन्होंने यह सम्बन्ध स्वीकार कर लिया है और वे यह चाहते हैं कि वहीद से तुम्हारा विवाह शीघ्र से शीघ्र हो जाए। हाँ, एक शर्त उन्होंने लगा दी है।'

प्रवीण का दुःख प्रसन्नता में बदल चुका था और उसके चेहरे पर मुस्कराहट फैल गई थी किन्तु शर्त का नाम सुनते ही वह फिर परेशान हो गई और उतावली से बोली—

'वह शर्त क्या रखी है उन्होंने ?'

'शर्त कोई ऐसी कड़ी नहीं।'

'फिर भी पता तो चले कि वह शर्त है क्या ?'

'शर्त यह है कि सम्बन्ध की माँग वहीद के यहाँ से आए। बस इतनी सी बात है।'

प्रवीण का चेहरा प्रसन्नता से चमक उठा और बोली—

'यह तो कोई ऐसी शर्त नहीं है जो पूरी न हो सके। वहीद को भला मांग भिजवाने पर क्या आपत्ति हो सकती है ?'

नसरत ने कहा—

'अब यह बताओ कि वहीद के यहाँ से माँग भिजवाने का क्या उपाय हो। मैं तो उन लोगों को नहीं जानती। हाँ, चचा जान को मैंने

यह वचन दे दिया है कि मैं उन लोगों को इस सम्बन्ध के लिए तैयार करूँगी और माँग भिजवाने का प्रबन्ध करूँगी। मेरा विचार है यह काम अब तुम्हें करना चाहिए। तुम वहीद से सीधे कह सकती हो। हाँ, यदि तुम्हें कोई आपत्ति हो तो मैं ही इसका कोई उपाय करूं।

प्रवीण ने कहा—

'तुम इसकी चिन्ता न करो। यह काम तुम मुझ पर छोड़ दो। मैं स्वयं वहीद से बातचीत करके इसका प्रबन्ध कर लूँगी। तुम खाम-खाँ इस उलझन में क्यों पड़ती हो ?'

नसरत ने एक अट्टहास किया और बोली—

'अच्छा तो अब मेरे लिए यह उलझन है। विचित्र कृतघ्न हो तुम। जब मैंने इतना कुछ किया है तो एक साधारण-सी बात मेरे लिए उलझन क्यों होने लगी ?

प्रवीण ने उसकी चिरौरी करते हुए कहा—

'बस इतनी सी बात से क्रुद्ध हो गईं। मेरा मतलब यह था कि यह काम मैं आसानी से कर सकती हूं।

नसरत ने उसके कोमल गुलाबी गालों पर धीरे-धीरे तमाचे लगाते हुए कहा—

'अरे, मैं तो हंसी कर रही हूँ। मैं क्रुद्ध क्यों होने लगी ? अच्छा तो फिर तुम दो एक दिन के अन्दर-अन्दर वहीद से मिलकर सारा मामला तै कर लो और मुझे इसकी सूचना दो। फिर मैं जानूं और मेरा काम।

'बहुत अच्छा ? मैं कल ही उनसे बातचीत कर लूंगी।'

'अच्छा, अब मुझे आज्ञा दो। काफी रात जा चुकी है। खलीक मेरी प्रतीक्षा कर रहे होंगे। मैं उनसे कह कर आई थी कि एक घण्टे के अन्दर-अन्दर वापस आ जाऊँगी। कोई सात बजे मैं आई थी अब दस बजने को हैं। पूरे तीन घण्टे हो गए हैं मुझे यहां आये हुये। अच्छा खुदा

हाफिज ।'

यह कह कर नसरत ने प्रवीण से हाथ मिलाया और कमरे से निकल कर कोठी के बाहर आ गई । प्रवीण भी उसके पीछे-पीछे आई । जब नसरत कार में बैठकर कोठी से निकल गई तो वह अपने कमरे में वापिस आ गई ।

प्रवीण के मन की विचित्र दशा हो रही थी । उसका मन प्रसन्नता से भरपूर था । वह अपने पूरे जीवन में पहले कभी इतनी प्रसन्न न हुई थी । यह प्रसन्नता कुछ विचित्र सी थी । इसमें एक प्रकार का माधुर्य और मस्ती सी थी । प्रसन्नता का केन्द्र प्राय: उद्देश्य की उपलब्धि होता है । मानव की प्रसन्नता इस बात का प्रमाण होती है कि वह किसी उद्देश्य में सफल हुआ है । वह भी एक उद्देश्य में सफल हुई थी किन्तु यह प्रसन्नता एक भिन्न प्रकार की प्रसन्नता थी । परीक्षा में उत्तीर्ण हो कर उसे जो प्रसन्नता होती थी वह कुछ इस प्रकार की होती थी जो किसी बहुत बड़े युद्ध को विजय करने से होती है । उससे उसकी ऐसी भावनाओं में बढ़ोत्तरी होती थी जो उसके गर्व को बढ़ा दें । और उसके मन में व्यक्तिगत सम्मान की अनुभूति उत्पन्न कर दें किन्तु वहीद से सम्बन्ध निश्चित हो जाने पर उसे जो प्रसन्नता हुई वह कुछ और ही प्रकार थी । वह कुछ यों अनुभव कर रही थी कि एक बिजली की लहर हृदय से आरम्भ होकर उसकी शिराओं में दौड़ रही है । उसके शरीर में एक विशेष प्रकार की कपकपी थी जो किसी प्रिय से आलिंगन करने से पूर्व उत्पन्न हो जाती है । वहीद उसके समीप न था किन्तु वह उसकी कल्पना से एकाकार हो रही थी । उसकी विचार शक्ति अत्यधिक तीव्र हो गई थी और वह एक ऐसे काल्पनिक संसार में पहुँच गई थी जहाँ वहीद और उसके सिवा और कोई न था । ऐसा संसार जो आनन्द, मौज और संगीत का संसार है । जहाँ चिन्ता और परेशानियों की पहुँच नहीं । जहाँ प्रसन्नता ही प्रसन्नता है ।

उसके कल्पना चित्र अन्त में सुहाग रात तक पहुँचे जहाँ उसने स्वयं

को और वहीद को प्यार तथा मुहब्बत करते हुए देखा। वह घूंघट निकाले वहीद के सामने बैठी थी और वह उसके सुन्दर चेहरे को घूंघट की कारा से स्वतंत्र करने का यत्न कर रहा था। अन्त में उसने घूंघट उठा दिया। दोनों की भुजाएं एक दूसरे की गरदन की शोभा बढ़ाने लगीं और वह शून्यता समाप्त हो गई जो संसार वालों की दृष्टि में उनके मध्य विस्तृत थी।

इतने में एक नौकरानी किसी काम से अन्दर आई और वह अपने काल्पनिक जगत् से फिर इस जगत् में आ गई। वह पंलग पर लेटी हुई थी। सामने की खिड़की खुली थी और उसमें से उसे बाहर के वृक्ष वायु में लहलहाते दृष्टिगत हो रहे थे। दीवार पर लगे हुए घण्टे की ओर उसने करवट लेकर आंखें बन्द कर लीं और सोने का यत्न करने लगी।

६

दूसरे दिन प्रातःकाल उठ कर प्रवीण ने एक बढ़िया साड़ी पहनी और केश आदि संवारने के पश्चात् वहीद के घर जाने के लिए तैयार हो रही थी कि किसी ने पीछे से आकर उसकी आंखों पर हाथ धर दिये। प्रवीण ने अपनी कोमल और नाजुक अंगुलियों से हाथों को टटोलते हुए कहा—

'क्या नसरत आयी है?'

पीछे से वहीद ने एक अट्टहास किया और बोला—

'बस, इतनी जल्दी भूल गई मुझे?'

प्रवीण अत्यन्त प्रसन्न हुई और विवश उसके मुख से निकल गया—

'प्यारे वहीद!'

वहीद ने उसकी श्वेत ठोड़ी को अपनी अंगुलियों पर नचाते हुए कहा—

'प्यारी प्रवीण!'

प्रवीण ने उसे कनखियों से देखते हुए कहा—

'मैं आप ही के घर जाने के लिए तैयार हो रही थी।'

वहीद ने मुस्कराते हुए कहा—

'किन्तु मेरी विवश भावनाओं को देख लो कि तुम्हारी प्रतीक्षा किये बिना यहाँ पहुँच गया।'

'धन्यवाद!'

'और फिर किस को नींद आई है रात भर।'

'तो आपका तात्पर्य यह है कि मैं घोड़े बेच कर सोती रही हूँ। यही बात है न ?'

'मैंने तो अपने बारे में कहा है।'

'तब स्वयं मेरी यही दशा हो तो नींद न आना एक साधारण सी बात होकर रह जाती है किन्तु आपने यह चर्चा ऐसे की है जैसे यह केवल आपही तक सीमित है और मैं इससे खाली हूँ।'

यह कहते हुए प्रवीण ने एक अट्टहास किया। वहीद ने कुछ लघु होते हुए कहा—

'हाँ साहब ! अपनी एक व्याकुलता की चर्चा करके मैंने भूल की है। मुझे यह चर्चा नहीं करनी चाहिए थी। अस्तु, मैं क्षमा चाहता हूँ।'

प्रवीण ने प्यार से उसके गले में बाहें डालते हुए कहा—

'यह आप मुझे अब पाप कुण्ड में डाल रहे हैं। मैं तो आप की तुच्छ सी दासी हूँ। यदि मुझसे कोई भूल हो जाए तो क्षमा मुझे माँगनी चाहिए। आपका यह स्थान नहीं है।'

वहीद ने हंसते हुए कहा—

'तो इसका अर्थ यह हुआ कि मेरे सब अपराध क्षम्य हैं। यदि मैं कोई भूल भी करूँ तो तुम्हारे निकट वह मेरा एक बड़ा महत्वपूर्ण कार्य होगा। यही बात है न ?'

प्रवीण के नेत्रों में अश्रु छलक आए और बोली—

'एक भले घर की लड़की के लिये यही उचित है कि वह मियाँ की हर बात पर सिर झुका ले और उसकी बुराइयाँ भी उसे विशेषता दिखाई पड़ें।'

वहीद फिर हंसा और बोला—

'प्रवीण ! अभी तो हमें मियाँ बीबी बनने में पता नहीं कितनी सीढ़ियाँ तै करनी पड़ें। और तुम अभी से अपने आप को बीबी और मुझे मियाँ समझ रही हो।'

प्रवीण ने कहा—

'प्यारे वहीद ! निकाह वास्तव में स्वीकृति ही का नाम है और वह हम में हो चुका है। हाँ, प्रारम्भ के अनुसार कुछ गवाहों के सामने हमारे इस आपसी समझौते की स्वीकृति होना शेष है। आशा है कुछ दिनों तक यह काम भी तै हो जाएगा। कुछ भी हो मुख्य सीढ़ी तै हो चुकी है और मैं आज से स्वयं को आप की एक अकिन्चन दासी ख्याल करती हूँ।'

यह सुन कर वहीद ने उसे लिपटा लिया। उसके नेत्र भी गीले हो गए और बोल—

'प्रवीण ! देखें हमारा प्यार हमें कहाँ पहुँचाता है ? इसका अन्त वही होता है जो नाजिम और ताहिरा के प्यार का हुआ अथवा कुछ और।'

प्रवीण ने उसका उत्साह बढ़ाते हुए कहा—

'खुदा ने चाहा तो हमारे प्यार का परिणाम अच्छा ही होगा। भाईजान और ताहिरा को जिन परिस्थितियों से गुजरना पड़ा वे हमारी परिस्थितियों से भिन्न थीं। उनका प्यार दूसरों के षड्यंत्रों का निशाना बना किन्तु हमारे प्यार में कोई वस्तु रुकावट नहीं। हमें किसी अच्छे परिणाम की ही आशा करनी चाहिये।'

इतने में वहीद को कुछ ख्याल आया और वह प्रवीण से एक डग पीछे हट कर खड़ा हो गया। प्रवीण ने चिन्तित दृष्टि से उसकी ओर देखते हुए कहा—

'क्यों, क्या बात है ?'

'नहीं, ऐसी कोई बात नहीं। तुम यह बताओ कि तुमने इस सम्बंध के बारे में क्या कुछ किया ?'

'हाँ, सब कुछ हो चुका है।'

वहीद ने उत्सुक स्वर में कहा—

'क्या हुआ ? मुझे भी तो पता चले ?'

प्रवीण ने मुस्कराते हुए कहा—

'कल शाम जब मैं आप के घर से यहाँ पहुंची तो यहाँ नसरत पहुंची हुई थी । वही नसरत जिसके बारे में मैंने कहा था कि मेरी चचेरी बहिन है । और मैंने इस मामले में उसे आगे रखा है ।

'हाँ, हाँ, तुम ने नसरत की चर्चा की थी । हाँ, तो क्या उसने कोई विधि सोची इसकी ?'

'विधि क्या सोची ? वह इस काम के लिये अब्बाजान से रात को मिली । बातों बातों में मेरे विवाह की चर्चा छिड़ गई । नसरत बहिन ने छूटते ही आपका नाम सामने रख दिया । अब्बाजान उसी समय मान गए और बोले कि यदि वे लोग प्रवीण के सम्बन्ध के इच्छुक हों तो मैं स्वीकार कर लूँगा किन्तु एक शर्त लगा दी है उन्होंने ।'

वहीद ने हँसते हुए कहा—

'शर्त तो शायद मैं सिंहनी का दूध लाने की भी पूरी करने के लिये तैयार हो जाऊँ । प्यार की माँग यही है किन्तु बताओ तो सही वह शर्त क्या है ?'

प्रवीण ने कहा—

'कोई ऐसी कड़ी शर्त नहीं ।'

'फिर भी मालूम तो हो ।'

'शर्त यह है कि सम्बन्ध की माँग आप के यहाँ से आनी चाहिये । क्योंकि लड़की के सम्बन्ध की माँग भेजना कुछ हमारी वंश परम्परा के विरुद्ध है । मैं स्वयं तो इन परम्पराओं को नहीं मानती किन्तु आप जानते हैं मेरे अब्बाजान इस मामले में कुछ पुरातन पंथी हैं ।'

'बहुत अच्छा । यह माँग हमारे यहाँ से ही आएगी किन्तु प्रश्न यह है कि इस माँग को स्वीकार भी कर लिया जाएगा अथवा नहीं ।'

प्रवीण ने मुस्कराते हुए कहा—

'मेरा तो यही ख्याल है कि स्वीकार कर ली जाएगी किन्तु अब यह मामला आप के घर वालों की पसन्द अथवा ना पसन्द पर है ।'

'इस का भार मैं लेता हूँ। वे बड़ी खुशी से माँग भिजवा देंगे।'

'फिर इस बात का भार मैं लेती हूँ कि यह मांग प्रसन्नता पूर्वक स्वीकार कर ली जाएगी।'

'धन्यवाद।'

यह कहते हुए वहीद हंस पड़ा और बोला—

'प्रवीण ! बात वास्तव में यह है कि मियाँ बीवी राजी तो क्या करेगा काजी वाला मामला है यह। खैर, हम काजियों को भी मना लेंगे।'

प्रवीण भी हंस पड़ी और कुछ देर रुक कर बोली—

'हाँ, आपने कल कहा था कि मैं कालेज जाऊंगा।'

'कहा तो था किन्तु मन ने यही कहा कि कालेज जाने के स्थान पर जरा प्रवीण के घर तक चले चलो।'

'आप की इस कृपा के लिये धन्यवाद। किन्तु प्यार में संसार को भूल जाना तो ठीक नहीं है। प्रेम और कर्तव्य को अपने-अपने स्थान पर आवश्यक समझना चाहिये।'

'किन्तु यह बात कुछ प्रयोग के अयोग्य सी है कि प्यार में मनुष्य कर्तव्य का भी अनुभव करे।'

'मेरी सम्मति इसके विपरीत है और वह यों है कि प्यार में मनुष्य कर्तव्य को तो भुला नहीं सकता। हाँ, कर्तव्य की तीव्र अनुभूति से वह प्यार को अवश्य भूल जाता है। किन्तु मैं इस न्यूनाधिक्य के विरुद्ध हूं। दोनों चीजें अपने-अपने स्थान पर आवश्यक हैं।'

वहीद ने हंसते हुए कहा—

'मैं अपनी सम्मति के प्रमाण स्वरूप कह सकता हूँ कि मैं कालेज नहीं गया। तुम्हें देखने चला आया हूँ। अर्थात् मैंने प्यार के लिये कर्तव्य की अवहेलना की।'

प्रवीण कुछ निरुत्तर सी हो गई और अपनी सम्मति पर जोर देने के स्थान पर बोली—

'अच्छा तो आप यह कहिये कि कल कालेज जाना आरम्भ करेंगे ?'

'जाना आरम्भ करूंगा कुछ दिनों तक। कोई जल्दी थोड़ी है। अच्छा यह कहो अब क्या कार्यक्रम है ?'

'बस और क्या कार्यक्रम है ? आपके यहाँ जाने का निश्चय था। जब आप यहीं आ गए तो कार्यक्रम समाप्त हो गया। अब सारा दिन घर पर ही रहूँगी।'

'तो फिर यों करो। चलो मेरे साथ। कहीं घूम फिर आओ। और हाँ, तुम्हारे अब्बा को तो मेरे साथ तुम्हारे जाने पर कोई आपत्ति न होगी ?'

प्रवीण ने मुस्कराते हुए कहा—

'कल तक तो नहीं थी शायद आज से हो।'

'यह क्या बात हुई ?'

'बात सीधी से है कि अब आप मेरे मंगेतर हैं और कुछ लोग इस बात को अच्छा नहीं समझते कि विवाह से पहिले लड़का और लड़की मटर वटर करते फिरें।'

'किन्तु अभी तो तुम विधि विधान से मंगेतर भी नहीं हो।'

प्रवीण ने हँसते हुए कहा—

'हाँ, यह सही है किन्तु बात तो चल पड़ी है।'

'तो इसका मतलब यह है कि तुम मेरे साथ नहीं जाओगी।'

'जाऊँगी, और अवश्य जाऊँगी।'

'अभी तुम यह कह रही थीं कि अब्बाजान इस बात को पसन्द नहीं करते ?'

'पसन्द तो वे हमारी मुलाकातों को भी नहीं करते। जब इसपर भी चोरी छुपे की भेंट जायज है तो इकट्ठे घूमने फिरने में कौन प्रलय होने वाली है ? केवल इतने से बचाव की आवश्यकता है कि उन्हें इस बात का पता न चलने पाए।'

'किन्तु क्या उन्हें यह मालूम नहीं होगा कि हम दोनों यहाँ बैठे

बातें कर रहे हैं।'

'वे कभी मेरे कमरे में नहीं आते।'

वहीद ने हँसते हुए कहा—

'क्या यह बात भी आप की वंश परम्परा में सम्मिलित है ?'

प्रवीण ने गम्भीरता से कहा—

'बिल्कुल यही बात है। पुराने विचार के आदमी बहुत कम अपनी बहू बेटियों के सामने होते हैं।'

'अच्छा तो चलो।'

वहीद यह कहता हुआ उठ खड़ा हुआ। और कमरे के द्वार की ओर चल दिया। प्रवीण उसके पीछे-पीछे हो ली और उसके निकट होकर बोली—

'कार आपकी है या मैं अपनी कार निकलवाऊँ ?'

वहीद ने कहा—

'हाँ, मैं अपनी कार अपने साथ ही लाया हूँ। सामने आँगन में खड़ी है। उसी में बैठकर चलते हैं। वापसी पर मैं तुम्हें यहाँ उतार जाऊँगा।'

यह कहते हुए वहीद कार के निकट पहुँच गया और अगला पट खोलकर खड़ा हो गया। प्रवीण अगली सीट पर बैठ गई। वहीद ने कार का पट बन्द कर दिया और दूसरी ओर से होकर अगली सीट पर बैठ गया और कार को लेकर चल दिया। जब कार कोठी से निकल कर सड़क पर पहुँची तो उसने प्रवीण से कहा—

'कहो, कहाँ चलें ?'

'लारंस गार्डन चलिये।'

वहीद ने 'बहुत अच्छा' कहकर कार का मुँह लारंस गार्डन की ओर कर दिया और कार सड़क पर बड़ी तेजी के साथ दौड़ती हुई दिखाई दी। दिन के कोई आठ बजे होंगे। सैर सपाटा करने वालों का सड़क पर तांता सा लगा हुआ था। पैदल चलने वालों की पटरी पर

एक नवयुबक और नवयुवती धीरे-धीरे चल रहे थे। प्रवीण ने उन दोनों को देखते हुए कहा—

'प्रतीत होता है ये दोनों मंगेतर हैं।'

वहीद ने मुस्कराते हुए कहा—

'मियाँ बीबी क्यों नहीं हो सकते ?'

प्रवीण खिलखिला कर हँस पड़ी और बोली—

'हो सकता है ऐसा ही हो। न जाने मुझे यह ख्याल क्यों आया कि ये दोनों मंगेतर ही हो सकते हैं।'

वहीद ने कहा—

'मैंने भी पहले यही ख्याल किया था कि ये दोनों मंगेतर हैं।'

'तो मतलब यह था कि हम दोनों का सोचने का ढंग गलत था।'

'बिल्कुल यही बात है। सच पूछो तो जब तक हमारा विवाह नहीं हो जाता इन सड़कों पर फिरते हुए सभी मियाँ बीवी हमें मंगेतर दिखाई देंगे। और जब विवाह हो जाएगा तो फिर हर सभ्य पुरुष पर हमें मियाँ बीवी का सन्देह होने लगेगा चाहे वे बहिन भाई क्यों न हों।'

प्रवीण ने एक और अट्टहास किया और बोली—

'यह आपका कहना सही है। बात वास्तव में यह है कि मनुष्य हर वस्तु को अपनी भावना की ऐनक से देखने का अभ्यस्त है। यदि दो बहिन भाई हमें सैर करते हुए देख लें तो आप जानते हैं वे हमें क्या समझेंगे ?'

वहीद ने हँसते हुए कहा—

'बस बस और आगे कुछ न कहो नहीं तो…

प्रवीण ने कहा—

'नहीं तो क्या ? अभी हम किसी ऐसे बंधन में नहीं बंधे कि आपको नहीं तो कहने की आवश्यकता पड़े।'

वहीद ने मुस्कराते हुए कहा—

'हाँ, यह तुम्हारा कहना सत्य है।'

कार लाहौर की विभिन्न सड़कों पर से होती हुई अन्त में लारंस गार्डन में प्रविष्ट हुई और मिण्टगुमरी हाल के सामने जाकर रुकी। दोनों उतर कर निकट ही के एक प्लाट में टहलने लगे। वहीद ने गुलाब का एक पुष्प तोड़ा और प्रवीरा के सुनहरे और घुंघरियाले केशों में लगाता हुआ बोला—

'इस प्रकार की चीजों से प्राकृतिक सौंदर्य की कुछ वृद्धि तो नहीं हो सकती इसे दरवेश की भेंट ही समझो।'

प्रवीरा ने मुस्कराते हुए कहा—

'फिर आपको मेरे केशों में कोई हरा पत्ता लगाना चाहिये था।'

वहीद हँस पड़ा और बोला—

'बड़ी दूर की सूझी तुम्हें ?'

प्रवीरा ने शरारत के स्वर में कहा—

'प्रसन्नता के अवसर पर मालिक की पहुँच दूर-दूर तक होती है।'

प्रवीरा का कोमल और गदराया स्फटिक हाथ वहीद के हाथ में था और दोनों धीरे-धीरे टहल रहे थे। आकाश पर मेघ छाए हुए थे और हल्की हल्की वायु चल रही थी। वृक्ष कुछ इस प्रकार झूम रहे थे जैसे उन पर हाल छाया हो। सामने एक वृक्ष की चोटी पर कबूतरों का एक जोड़ा चोंच से चोंच मिलाए बैठा था। वहीद ने उस जोड़े की ओर संकेत करते हुए कहा—

'प्रवीरा ! वह देखो सामने वृक्ष की चोटी पर।'

प्रवीरा कबूतरों को देख कर बोली—

'मेरा ख्याल है यह दोनों भी मंगेतर हैं।'

वहीद हँसता हुआ बोला—

'विधि विधान से मंगेतर नहीं बल्कि अभी हमारे समान अनियमित मंगेतर ही मालूम होते हैं।'

इतने में एक बूढ़ा और बुढ़िया उनके निकट पहुँचे। ये दोनों भिखारी थे। बूढ़े ने अपना कमण्डल आगे करते हुए कहा—

'बाबा ! खुदा के नाम पर कुछ दे दो । सुबह से भूखे हैं ।'

वहीद ने अपनी जेब से कुछ इकन्नियां निकाल कर उनके कमण्डल में डाल दीं और प्रवीण का हाथ थामे आगे बढ़ गया । जब वह उनसे कुछ दूर निकल गया तो बोला—

'कहो, ये दोनों कौन थे ?'

प्रवीण ने हँसते हुए कहा—

'ये भी मंगेतर मालूम होते थे मुझे ।'

वहीद खिलखिला कर हँस पड़ा और बोला—

'हां, साहब ! अब तो संसार की कोई वस्तु मंगेतर शब्द की सीमा के बाहर नहीं ।'

वे दोनों दो घन्टे तक बाग में घूमते रहे । अन्त में प्रवीण ने कहा—

'अब हमें वापस चलना चाहिये ।'

वहीद ने कहा—

'बहुत अच्छा, चलो ।'

दोनों कार में बैठ गए और घर की ओर चल दिये ।

७

जिस दिन प्रवीण और वहीद लारंस गार्डन की सैर को गए थे उसके दूसरे दिन ही मियाँ मैराज-उद्दीन को दिल की बीमारी का दौरा पड़ा। वैसे तो वे इस रोग के वर्षों से रोगी थे किन्तु नाजिम की मृत्यु के बाद यह रोग अधिक तेज़ हो गया था। अब की बार उन्हें जो दौरा पड़ा वह बहुत ही अधिक तीव्र प्रकार का था। वे कोई घन्टे डेढ़ घन्टे तक बेहोश पड़े रहे। प्रवीण अत्यधिक परेशान हुई। उसने उसी समय डाक्टर को बुलाया और उसके साथ ही चचा मियाँ कमर-उद्दीन और उनकी बेटी नसरत को अपने पिता की बीमारी की सूचना कर दी। डाक्टर अभी मियाँ मैराज-उद्दीन को देख ही रहा था कि मियाँ कमर-उद्दीन और नसरत पहुँच गए। मियाँ कमर-उद्दीन मियाँ मैराज-उद्दीन के छोटे भाई थे। जब उन्होंने अपने बड़े भाई की यह दशा देखी तो बहुत घबराए। मियाँ मैराज-उद्दीन कोइ डेढ़ घण्टा से बेहोश पड़े थे और डाक्टर उन्हें कोई इंजेक्शन दे रहा था। मियाँ कमर-उद्दीन ने प्रवीण को सम्बोधन कर कहा—

'क्यों बेटी ! इनकी यह हालत कब से है ?'

प्रवीण ने चिन्तित स्वर में कहा—

'चचा मियाँ ! यह तो आप जानते हैं कि अब्बाजान बरसों से दिल की बीमारी के रोगी हैं किन्तु इससे पहिले इन्हें इतना तेज दौरा नहीं पड़ा था। लगभग डेढ़ घन्टे से इसी दशा में पड़े हैं।'

'जिस समय इन्हें दौरा पड़ा उस समय तुम कहाँ थी ?'

'वैसे तो रात से इनकी तबीयत ज्यादा खराब थी। मैं प्रातः इनके कमरे में बैठी इनसे बातें कर रही थी। बीमारी की कमजोरी अवश्य थी किन्तु वैसे भले चंगे थे और भाई जान की चर्चा छिड़ी हुई थी। इतने में फिर दौरा पड़ा और ये बेहोश हो गए। बस इतनी से बात है।'

मियाँ कमर उद्दीन ने कहा—

बेटी! तुम्हें यह मालूम है कि इन्हें नाज़िम की मौत का बहुत ज्यादा दुःख है। इनके सामने कोई ऐसी बात नहीं करनी चाहिये और यदि वह स्वयं ऐसी ही चर्चा छेड़े तो बात को टाल देना चाहिये।'

प्रवीण ने कहा—

'हाँ, चचा मियाँ! मैं तो स्वयं बहुत सावधान रहती हूँ। न स्वयं उन के सामने स्वर्गीय भाई जान की चर्चा करती हूँ और न उन्हें करने देती हूँ आज जब अब्बाजान ने यह चर्चा छेड़ी तो मैंने बात को टालने का यत्न किया। इतने में इन्हें दौरा पड़ गया।'

डाक्टर ने पन्द्रह बीस मिनट के अन्दर-अन्दर मियाँ मैराज-उद्दीन को दो चार अलग-अलग प्रकार के इंजैक्शन दिये। अन्त में उन्होंने आँखें खोलीं और धीरे-धीरे उन्हें होश आ गया। यह देखकर डाक्टर चला गया।

अपने छोटे भाई मियाँ कमर-उद्दीन को देखकर मियाँ मैराज उद्दीन के चेहरे पर मुस्कराहट फैल गई और परिहास के स्वर में बोले—

'कहो भई! सुना है तुमने शादी कर ली?'

'हाँ, करली है। लेकिन अफसोस है आप उसमें शामिल न हुए।

'अरे भई! मेरी तबीयत कुछ इस तरह की हो गई है कि इस तरह के हंगामों में शामिल होते हुए मुझे भय-सा लगता है। न जाने क्यों पच्छा, यह कहो, दुलहिन अच्छी मिल गई?'

दुलहिन का नाम सुनकर नसरत और प्रवीण मुस्कराने लगीं। मियाँ उद्दीन कुछ झेंप से गए और बोले—

'भाई जान ! यह दुलहिन का शब्द तो आपने यों कहा है जैसे मैं सेहरा बाँध कर दूल्हा बना और बाकायदा बारात लेकर गया ।'

मियाँ मैराज-उद्दीन ने व्यंग्य पूर्ण धैर्य से काम लेते हुए कहा—

'तो क्या तुम ने सेहरा नहीं बाधाँ ? अफसोस है । सेहरा बांधने और बारात ले जाने की इच्छा भी निकल ही जाती तो अच्छा था ।'

बेचारे मियाँ कमर-उद्दीन बड़े लज्जित से हुए और कुछ देर तक चुप रहने के बाद बोले—

'इस बुढ़ापे में सेहरा बाँधते और बारात ले जाते हुए मुझे शरम न आती ?'

मियाँ मैराज-उद्दीन हंस पड़े और बोले—

'वाह भाई ! यह भी खूब कही तुमने । इसमें शरम की क्या बात थी ? यदि बुढ़ापे में शादी की शरम को तुम सहन कर सकते हो तो सेहरा बाँधने या बारात ले जाने में तुम्हें क्या शरम थी ?'

'भाई जान ! यह शादी थोड़े ही थी । यह तो निकाह था ।'

'मतलब निकाह और शादी दो भिन्न चीजें हैं ?'

'हाँ, भिन्न तो हैं ही शादी तो वह है जो खूब धूमधाम से की जाए और निकाह वह है जो कुछ आदमियों के सामने चुप चाप किया जाए ।'

'लेकिन भई ! उद्देश्य तो एक ही है न ? हाँ, तो यह बताओ कि इस शादी या विवाह की तुम्हें आवश्यकता क्या थी ?'

मियाँ कमरुद्दीन ने कुछ रुक कर कहा—

भाई जान ! यह तो आप जानते हैं कि हम केवल दो भाई हैं । संसार में और हमारा कोई नहीं । मेरी एक बेटी और आप का एक बेटा और एक बेटी । यह थी हमारे सारे वंश की बिसात । किन्तु नाज़िम के मरने के बाद यह आशा भी समाप्त हो गई कि भविष्य में हमारा वंश चलेगा । यदि नाज़िम जीवित रहता तो मैं कदापि विवाह न करता क्योंकि मुझे आशा होती कि हमारे बाद दादा का नाम चलता रहेगा किन्तु उसके मरने के बाद मेरी सारी आशाएं समाप्त हो गईं' । मैंने विवाह केवल

इस लिये किया है कि शायद इस बुढ़ापे में ही कोई बेटा हो जाए और हमारा वंश चलता रहने का कोई उपाय निकल आए। सच पूछिये तो यही नींव है विवाह की। नहीं तो मुझे शौक नहीं था इसका। जब नसरत की अम्मा मरीं उस समय मैं युवा था और दोबारा विवाह कर सकता था। किन्तु मैंने ऐसा नहीं किया। मैंने यही समझा कि नाज़िम मेरा ही बेटा है और उसके होते हुए मुझे और सन्तान की आवश्यकता नहीं किन्तु खेद कि उसकी मृत्यु ने मेरी सम्पूर्ण आशाओं पर पानी फेर दिया। और मेरा संसार अंधियारा हो गया। आप जानते हैं कि वंश की परंपरा स्थिर रखने का विचार प्राकृतिक वस्तु है। यदि नाज़िम की मृत्यु के बाद यह विचार मेरे मन में भी जीवित हो गया है तो यह कोई आश्चर्य की बात नहीं।'

मियाँ-मैराज-उद्दीन मौन अपने छोटे भाई की बात सुन रहे थे। उनके चेहरे की दशा कुछ विचित्र सी होती जा रही थी। प्रवीण इस स्थिति को ताड़ गई। उसने अपने चचा को संकेत से रोका किन्तु इतने में मियाँ मैराज-उद्दीन की स्थिति अधिक बिगड़ गई और बीमारी का दौरा आरम्भ हो गया। वे फिर निश्चेष्ट हो गए।

यह देखकर सब लोग घबरा गए। मियाँ कमर-उद्दीन ने जल्दी से डाक्टर को फोन किया। वह कुछ मिनटों में आ पहुँचा और मियाँ मैराज-उद्दीन के दिल की परीक्षा करते हुए बोला—

'आप ने कोई बात की है इन से?'

मियाँ कमर-उद्दीन ने कहा—

'बस, इनके स्वर्गीय पुत्र की चर्चा हो रही थी और तो कोई बात नहीं।'

डाक्टर ने चिन्तित स्वर में कहा—

'यह अच्छा नहीं किया आप लोगों ने। इनके सामने कोई ऐसी बात नहीं करनी चाहिये थी। आपको मालूम होना चाहिये कि इनके बीमार

होने का वास्तविक कारण ही इनके बेटे की मौत है।'

मियाँ कमर-उद्दीन घबरा गए और बोले—

'तो क्या कोई उलझन पैदा हो गई है बीमारी में ?'

डाक्टर ने कहा—

'बहुत अधिक उलझन पैदा हो गई है। मुझे यह आशा नहीं कि अब ये ठीक हो सकें। हाँ मैं इंजैक्शन लगा कर देखता हूँ। शायद उसका कुछ प्रभाव हो।'

यह सुन कर नसरत और प्रवीण रोने लगीं। मियाँ कमर-उद्दीन ने उनका उत्साह बढ़ाते हुए कहा—

'बेटी ! यह क्या कर रही हो तुम ? खुदा ने चाहा तो भाई जान ठीक हो जाएँगे।'

डाक्टर ने कहा—

'उचित यह है कि आप सब लोग दूसरे कमरे में चले जाएँ। जब ये होश में आ जाएंगे तो मैं आप को बुला लूंगा।'

यह सुन कर मियाँ कमर-उद्दीन, नसरत और प्रवीण दूसरे कमरे में चले गए। और उस कमरे में केवल मियाँ मैराज-उद्दीन और डाक्टर रह गए। हम तीनों के दिल तीव्रता से धड़क रहे थे और इस बात की प्रतीक्षा में थे कि देखें डाक्टर क्या बताता है ? इतने में डाक्टर कमरे में आया। मियाँ कमर-उद्दीन ने उस से पूछा—

'कहिये, क्या हालत है उनकी ?'

डाक्टर ने निराश के स्वर में कहा—

'दिल बिल्कुल बेकार हो चुका है और मियाँ साहब के जीवन की कोई आशा नहीं। वैसे उन्होंने आँखें खोल दीं हैं और वे कुछ होश में हैं किन्तु यह स्थिति अस्थायी है! यदि आप लोग उनसे कुछ बातचीत करना चाहें तो कर लें।'

यह सुनते ही प्रवीण पर एक बिजली सी गिरी और वह हृदय पर हाथ रख कर वहीं बैठ गई। मियाँ कमर-उद्दीन तो दौड़ कर उस कमरे

में चले गए और नसरत ने प्रवीण को ऊपर उठाते हुए कहा—

'प्रवीण ! धैर्य रखो। अपने बाप से कोई बात करनी चाहो तो करलो।

नसरत के नेत्र भी अश्रु पूर्ण थे किन्तु वह अपने आप पर अंकुश रखे हुए थी। उसने बड़ी कठिनाई से प्रवीण को उठाया और उसे सहारा देकर मियाँ मैराज-उद्दीन के पलंग के पास ले गई। मियाँ मैराज-उद्दीन अत्यन्त निर्बल दिखाई पड़ रहे थे। उनके नेत्र खुले थे। उन्होंने प्रवीण की ओर देखते हुए धीरे से कहा-

'बेटी ! जीवन की अन्तिम यात्रा अब आरम्भ होने वाली है। अब मैं तुम्हें तुम्हारे चचा के हाथों सौंपता हूँ। उन ही को अपना अब्बा समझो अब।'

यह सुनकर प्रवीण की चीखें निकल गईं। नसरत भी रोने लगी। मियाँ मैराज-उद्दीन ने उन दोनों को देखते हुए कहा—

'मुझे तुम लोगों से कुछ बातें करनी हैं। यदि तुम रोते-धोते ही रहे तो शायद समय निकल जाए और मैं तुम से कुछ न कह सकूं।'

मियाँ कमर-उद्दीन ने प्रवीण और नसरतको सहारा देते हुए कहा—'बेटी ! यह समय रोने का नहीं है। भाई जान जो कहते हैं उसे ध्यान से सुनो।'

यह सुनकर दोनों ने अश्रु पोंछ लिये और चुप हो गईं। मियाँ मैराज-उद्दीन ने अपने छोटे भाई से कहा—

'अब प्रवीण तुम्हारे हवाले है।'

मियाँ कमर-उद्दीन ने कहा—

'भाईजान ! आप चिन्ता न कीजिये। मैं प्रवीण को नसरत से भी अधिक चाहता हूँ।'

मियाँ मैराज-उद्दीन रुकते हुए बोले—

'मुझे अपनी मृत्यु का कोई दुःख नहीं। हाँ इस बात का दुःख अवश्य है कि अपने जीवन में प्रवीण का विवाह न कर सका।'

मियाँ कमर-उद्दीन की आँखें डबडबा आईं। उन्होंने अपने अश्रु पोंछते हुए कहा—

'इनशा अल्लाह, यह फर्ज मैं पूरा करूंगा। और मेरा ख्याल है यह काम आपकी इच्छा के अनुसार ही होगा।'

इस के पश्चात मियाँ मैराज-उद्दीन ने नसरत की ओर देखा और बोले—

'बेटी ! वह जो तुमने वचन दिया था ?'

नसरत ने शीघ्रता से कहा—

'चचाजान ! खुदा ने चाहा तो आप की आज्ञा का पालन होगा।'

यह सुन कर मियां मैराज-उद्दीन को कुछ धैर्य सा प्राप्त हुआ और उन्होंने आँखें बन्द कर लीं। कुछ देर के बाद उन्होंने फिर आँखें खोलीं। उनका दम रुक रहा था और हिचकियाँ सी आ रही थीं। उन्होंने पहले प्रवीण की ओर और फिर नसरत और अपने छोटे भाई की ओर देखा।

मियाँ कमर-उद्दीन उनका तात्पर्य समझ गए और रोते हुए बोले—

'भाईजान ! आप प्रवीण के बारे में निश्चिन्त रहिये। प्रवीण मेरी बेटी है।'

मियाँ मैराज-उद्दीन ने सबको भावपूर्ण दृष्टि से देखा और रुकते हुए बोले --

'खुदा हाफिज !'

इतना कहने के उपरान्त उनकी आँखें बन्द हो गईं। फिर एक अन्तिम हिचकी आई और उनकी आत्मा इस संसार से विदा हो गई।

उनके मरते ही घर में कुहराम सा मच गया। नसरत और प्रवीण धाड़ें मार-मार कर रोने लगीं। मियाँ कमर-उद्दीन ने उन्हें धैर्य दिलाने का यत्न किया किन्तु स्वयं उन की अपनी दशा खराब हो रही थी। बड़े भाई की मृत्यु की चोट उनके लिये असह्य हो रही थी। वे स्वयं भी बच्चों के समान फूट-फूट कर रोने लगे।

अपने दयालु पिता की मृत्यु का प्रवीण को अत्यन्त दुःख था।

नाज़िम की मृत्यु के उपरान्त उसका यही एक सहारा था सो वह भी जाता रहा। उसने रो-रो कर अपना बुरा हाल कर लिया। नसरत ने उसको बहुत दिलासा दिया। किन्तु उस का रोना न थमा।

वहीद को जब मियाँ मैराज-उद्दीन की मृत्यु की सूचना मिली तो वह बहुत घबराया। उसे मालूम था कि प्रवीण को अपने पिता की मृत्यु का अत्यन्त दुःख हुआ होगा। वह उससे मिल कर उसे धैर्य दिलाना चाहता था किन्तु उसे इस हंगामे में इसका अवसर न मिल सका। मियाँ मैराज-उद्दीन को लाश को मियानी साहब के कब्रिस्तान में दफन कर दिया गया। इस के बाद वहीद दो चार दिन तक लगातार प्रवीण के मकान पर पहुँचता रहा। वहाँ शोक प्रकट करने वालों का इतना जमघट होता था कि उसे प्रवीण से भेंट करने और शोक प्रकट करने का कोई अवसर ही नहीं मिलता था।

प्रवीण कोई आठ दस दिन तक अपने मकान पर ही रही। उसका चचा और नसरत भी उस के साथ ही रहे। इस समय नसरत ने उसे काफी धैर्य दिलाया। यह एक प्राकृतिक बात है कि कुछ समय के बाद मनुष्य कठिन से कठिन चोट को भी भूल जाता है। प्रवीण कुछ दिन तो बहुत दुःखी रही। दिन-रात रोती रहती। अन्त में उसके मन को धैर्य सा प्राप्त हुआ और सब्र करके बैठ गई।

जब शोक प्रकट करने आने वालों की भीड़ कुछ कम हुई तो मियाँ कमर-उद्दीन ने एक दिन प्रवीण से कहा—

'बेटी ! अब तुम्हारा इस मकान में रहना उचित नहीं है। अब तुम मेरे साथ ही चलो। तुम्हारी चची तुम्हारा हर प्रकार का ध्यान रखेंगी।'

इससे पूर्व कि प्रवीण इसका कुछ उत्तर देती नसरत ने कहा—

'हाँ, प्रवीण ! अब तुम्हारा यहां पड़े रहना व्यर्थ है। यदि तुम यहीं रहोगी तो हम लोगों को भी तुम्हारे कारण परेशानी होगी। यदि तुम हमारे यहाँ ही चली जाओगी तो कम से कम हमें तसल्ली तो रहेगी। और मेरा ख्याल है वहाँ तुम यहाँ की अपेक्षा प्रसन्न रहोगी। कोई बात-

चीत करने वाला तो होगा तुम से वहाँ। यहाँ इस जहाज से बड़े मकान में अकेली रहकर क्या करोगी ?'

प्रवीण ने कहा—

'बहुत अच्छा चचाजान ! मैं तैयार हूँ।'

मियाँ कमर-उद्दीन ने प्रसन्न होते हुए कहा—

'बेटी ! वहाँ तुम्हें हर प्रकार का आराम प्राप्त होगा ! तुम अभी तक अपनी चची से नहीं मिलीं। वे स्वभाव की बहुत अच्छी हैं। तुम उनसे मिलकर बहुत प्रसन्न होगी।'

नसरत ने धीरे से प्रवीण के कान में कहा—

'मिली मैं भी नहीं हूँ इस लिये मैं नहीं जानती कि वे स्वभाव की कैसी हैं किन्तु अब जब कि तुम वहाँ जा रही हो तो विवश मुझे भी उन से भेंट करनी पड़ेगी। फिर मालूम होगा कि वे स्वभाव की कैसी हैं।'

यह सुनकर प्रवीण मुस्कराई और धीरे से बोली—

'हाँ, यह तो तुम्हारा कहना सही है।'

मियाँ कमर-उद्दीन सिर झुकाए उनसे बातें कर रहे थे। उन्हें हम दोनों की कानाफूसी का पता न चल सका। कुछ देर तक चुप रहने के बाद बोले—

'अच्छा तो प्रवीण चलो अब तुम मेरे साथ।'

प्रवीण ने धीरे से कहा—

'बहुत अच्छा चचा जान !'

यह सुन कर वे बाहिर निकले और शोफर को कार लाने को कहा। शोफर कुछ ही मिनटों में कार लेकर आ गया और मियां कमर-उद्दीन और प्रवीण दोनों उस में बैठ गए।

प्रवीण ने नसरत से कहा—

'तुम भी तो साथ चलो।'

नसरत ने मुस्कराते हुए कहा—

'तुम तो जाओ। मैं फिर किसी दिन आऊँगी।'

यह कहती हुई वह अपनी कार में बैठ कर अपने घर को चल दी मियाँ कमर-उद्दीन प्रवीण को लेकर अपने घर में आ गए और घर के द्वार में प्रवेश करते हुए प्रवीण से बोले—

'चलो बेटी ! मैं तुम्हें तुम्हारी चची से मिला दूँ ।'

प्रवीण ने धीरे से कहा—

'चलिये ।'

यह कह कर मियाँ कमर-उद्दीन उसे अपने साथ लेकर एक कमरे में गए और एक कुर्सी पर बैठते हुए एक नौकरानी से बोले—

'ज़रा बेगम को बुलाओ ।'

नौकरानी बाहर चली गई । इतने में एक नवयुवती गुलाबी रंग की साड़ी में सज्जित भीतर प्रविष्ट हुई । मियाँ कमर-उद्दीन ने उसकी ओर देखते हुए कहा—

'प्रवीण ! अपनी चची से मिलो ।'

इसके साथ ही उन्होंने अपनी पत्नी से सम्बोधन कर कहा—

'बेगम ! ये मेरी भतीजी प्रवीण हैं । बड़ी आज्ञाकारी लड़की है । यह अब तुम्हारे साथ ही रहेगी । तुम भी इन्हें अपनी बेटी ही समझो ।'

प्रवीण ने जब उस स्त्री की ओर देखा तो उसका रंग उड़ गया । वह स्त्री भी उसे देख कर बेहद घबराई । वह उसकी भावज अशरत थी ।

दोनों को एक दूसरी से परिचित करवा कर मियाँ कमर-उद्दीन बाहिर चले गए । अशरत प्रवीण के सामने ही कुर्सी पर बैठ गई । प्रवीण की आँखों से आँसू गिर रहे थे । शायद उसे यह ख्याल आ रहा था कि निराश्रित होने के बाद जिन लोगों के पास पहुंची हूँ वे भी शायद उसे आश्रय नहीं दे सकेंगे । अशरत ने भावज होते हुए उससे जो बर्ताव किया था और उसे जो जली कटी सुनाई थीं वे उसे याद थीं । उसे यह भी मालूम था कि उसके घर के उजड़ने का कारण अशरत ही है । अब जब उसने अशरत को चची के रूप में देखा तो वह समझ गई कि कष्टों

का एक नया दौर आरम्भ होने वाला है। वह काफी समय तक कुर्सी पर बैठी बीती घटनाओं पर विचार करती रही और यह सोचती रही कि भविष्य में किस-किस क्लेश की आशा हो सकती है। अशरत उसके सामने दूसरी कुर्सी पर बैठी थी और उसके चेहरे की दशा को देख कर यह अनुमान करने का यत्न कर रही थी कि वह क्या सोच रही है ? अचानक उसने कहा—

'प्रवीण !'

प्रवीण के मुंह से सहसा निकल गया—

'हाँ, भाभी जान !'

अशरत मुस्कराई और बोली—

'अब मैं तुम्हारी भाभी नहीं चची हूँ।'

प्रवीण ने सहमे स्वर में कहा—

'हाँ, चची जान ! यह आपने ठीक कहा है।'

वह अशरत से कुछ यों भयभीत हो रही थी जिस प्रकार एक विवश पक्षी शिकारी के जाल में फंस जाता है और उससे डरता है। अशरत समझ रही थी कि प्रवीण उससे घबरा रही है। उसने इससे जो दुर्व्यवहार किया था उसे भी वह जानती थी और समझती थी कि प्रवीण को घबराना ही चाहिए। अन्त में उसने प्रवीण के कंधे पर हाथ रखते हुए कहा—

'प्रवीण ! आज मैं तुमसे दिल खोलकर बातें करना चाहती हूं। ताकि तुम्हें कोई गलतफहमी न रहे। तुम्हें अब यहीं रहना है। यदि गलत फहमियों का यह क्रम चलता रहा तो यह घर हम दोनों के लिये नरक का नमूना बन जायेगा।'

प्रवीण ने कुछ सहमी हुई दृष्टि से उसकी ओर देखा और बोली—

'हाँ, यह तो आपने ठीक कहा है।'

अशरत ने कहा—

मैंने तुम से जो दुर्व्यवहार किया उसकी मुझे पूरी तरह याद है

और मैं लज्जित हूँ। जब तुम स्वयं सोचोगी कि उस समय मेरा और तुम्हारा सम्बन्ध ननद भावज का था और ननदों और भावजों में झगड़ा होना एक साधारण सी बात है तो शायद तुम मुझे इतना दोषी न समझोगी। अब मैं तुम्हरी चची हूं और मां के समान हूँ। तुम मेरी बेटी हो। इसलिए भविष्य में इसमें किसी प्रकार के झगड़े की सम्भावना नहीं हो सकती। यदि तुम अपने आपको मेरी बेटी और मैं अपने आपको तुम्हारी मां समझती रहूँ तो कोई बात ही नहीं होगी। पहिले जो कुछ हो चुका है उसे भूल जाओ। मैं अपने अपराध को मानती हूँ किन्तु अब तुम्हारे मन में कोई शत्रुता नहीं रहनी चाहिए।'

प्रकट में अशरत के ये शब्द ऐसे थे कि प्रवीण का मन उसकी ओर से साफ हो जाना चाहिए था किन्तु अशरत का दोष केवल इतना ही नहीं था कि उसने अपनी ननद से बदसलूकी की और उसके बारे में कुछ अनुचित शब्द कहे अपितु सारे घर की बरबादी का कारण वही थी। उसी के षड़यंत्र से नाज़िम को ताहिरा और उसके पिता के बारे में गलतफहमी हुई और वह लाहौर छोड़कर दिल्ली चला गया और वापस न आ सका। अशरत के षड़यन्त्र का ही परिणाम था कि मियाँ मैराज-उद्दीन अपने युवा पुत्र की मृत्यु के दुःख में दिलकी बीमारी का आखेट बने। और अन्त में इस संसार से सिधारे। अशरत ने अपनी बात में केवल बदसलूकी की चर्चा की जो उसने भावज के नाते से प्रवीण के साथ की थी और उन षड़यंत्रों के बारे में कुछ न कहा जो सारे घर के विनाश का कारण हुये। प्रवीण अशरत की चिकनी चुपड़ी बातों से प्रभावित होकर उसके दुर्व्यवहार को भूल सकती थी किन्तु उसके उन अपराधों से आँखें न मूंद सकती थी जो अधिक विनाशकारी सिद्ध हुए। वह एक स्पष्ट वादी लड़की थी और कोई लगी लिपटी रखना नहीं जानती थी। जब अशरत ने अपनी सफाई देने का यत्न किया तो उसने कहा—

'चची जान! जिस दुर्व्यवहार की आप ने चर्चा की है उसका मुझे

कतई दुःख नहीं। ननदों और भावजों में इस प्रकार के झगड़े वास्तव में होते रहते हैं। हाँ, यह मैं स्पष्ट कहे देती हूँ कि आपके जो षड़यंत्र हमारे घर के विनाश के कारण हुए उन्हें शायद मैं न भूल सकूं। यह बात मैंने केवल इसलिए कह दी है कि शायद मेरे मन में आपके बारे में शत्रुता रहे और आपके कहे अनुसार यह घर हम दोनों के लिए नरक का नमूना बन जाये।'

अशरत ने अपनी परेशानी प्रकट करते हुए कहा—

'वे षड़यंत्र कौन से हैं, मुझे बताओ। शायद उनके बारे में भी मैं सफाई दे सकूं।'

प्रवीण उत्तर में कुछ न बोली और दृष्टि नीची किये कुछ सोचती रही। अशरत ने फिर कहा—

'हाँ, तो प्रवीण! तुमने बताया नहीं। किन षड़यंत्रों की अपराधी हूँ मैं? यह तुमने बड़ा अच्छा किया है कि यह बात खोल दी है क्योंकि आगे चलकर ऐसी बातें और अधिक झगड़ों का कारण होती हैं। अच्छा तो उन षड़यंत्रों का नाम लो।'

प्रवीण कुछ देर तक उसके चेहरे को चुपचाप तकती रही। फिर बोली—

'प्रोफेसर वहीद के यहाँ ताहिरा के जाली सम्बन्ध की सूचना किस ने पहुँचाई थी?'

अशरत ने घबराहट के स्वर में कहा—

'तो क्या तुम्हारा मतलब यह है कि यह काम मैं ने किया?'

'मेरा यही ख्याल है।'

'यदि मैं यह कह दूं कि यह बात गलत है? मैंने ऐसा नहीं किया और न मेरे संकेत पर ऐसा हुआ तो निश्चय ही तुम्हारी तसल्ली न होगी। यदि मैं इनकार करके ही इस दोष से मुक्त हो जाती तो निश्चय ही ऐसा करती किन्तु मैं जानती हूँ कि इस इनकार में कोई वज़न नहीं है और तुम्हारी पूर्ति इससे नहीं हो सकेगी। मेरे विचार में यही उचित

है कि अभी इस विवाद को फिर किसी समय के लिए छोड़ दिया जाए और समय की प्रतीक्षा की जाए जब मैं अपनी सफाई दे सकूं और तुम्हें मेरी निर्दोषता का विश्वास हो जाए। मैं तुमसे कदापि यह नहीं कहती कि तुम अपने सन्देह समाप्त कर दो किन्तु यह अवश्य ख्याल रखो कि अभियुक्त को भी सफाई का अवसर देना धर्म और कानून के अनुसार अत्यावश्यक है। अभियोग सिद्ध हुए बिना किसी को अभियुक्त मानना न्याय का खून करना है। मैं अभी अपनी सफाई देती हूँ और तुम्हें सिद्ध करने का यत्न करती किन्तु अभी उन ठोस प्रमाणों का उपलब्ध होना थोड़ा कठिन है जो मैं अपनी सफाई में देना चाहती हूँ। मैं केवल कोरी बातों से ही तुम्हें अपनी निर्दोषता का विश्वास दिलाना नहीं चाहती अपितु सप्रमाण यह सिद्ध करूँगी कि जिन षड़यंत्रों की तुमने चर्चा की है उनसे मेरा कोई सम्बन्ध नहीं।'

अशरत के पास अपनी सफाई में कोई प्रमाण न था किन्तु वह मनोवैज्ञानिक वास्तविकता को जानती थी कि इनकार सफाई के लिए पर्याप्त नहीं है अपितु अनेक बार सफाई देने से इनकार करना ही एक बहुत बड़े प्रमाण का स्थान रखता है। उसने प्रकट रूप से सफाई देने से इनकार कर दिया था और इस विवाद को भविष्य पर छोड़ दिया था। किन्तु बातचीत उसने इस ढंग से की जो स्वयं एक सफाई का स्थान रखती थी। वह एक बड़ी अनुभवी और चालाक स्त्री थी और जानती थी कि प्रवीण जैसी सीधी सादी लड़की को वश करने के लिए किसी दार्शनिक विवाद की आवश्यकता नहीं।

प्रवीण ने जब अशरत की बातचीत सुनी तो उसे यह ख्याल सा हो गया कि संभव है अशरत का कोई अपराध न हो। आखिर उसने इन षड़यंत्रों की चर्चा किसी से सुनी ही तो थी। देखा तो न था। इसलिए यह बात सम्भव है कि वह अशरत के बारे में अपनी राय बदल ले।

अपनी बात समाप्त करने के बाद अशरत ने प्रवीण से कहा—

'जो कुछ मैं कह रही हूँ सुन रही हो ?'

प्रवीण ने कहा—

'हाँ, सुन रही हूँ।'

अशरत ने उसकी ओर झुकते हुए कहा—

'मैं यह जानती हूँ कि मैंने जो कुछ कहा है इससे उस अपराध की निर्दोषता सिद्ध नहीं होती जो मुझ पर थोपा गया है। मेरा तात्पर्य केवल इतना है कि जबतक मैं इस अपराध को कतई धो नहीं देती और अपने निष्पाप होने का प्रमाण नहीं देती उस समय तक हममें स्थायी सन्धि नहीं तो अस्थाई सन्धि अवश्य हो जानी चाहिए। ताकि हम दोनों एक दूसरे के लिए बोझ सिद्ध न हों। पहला अपराध मैंने मान लिया है और उसके साथ ही क्षमा भी माँग ली है किन्तु दूसरे अपराध में इनकारी दूं और यदि अपराध सिद्ध हो गया तो मैं उसके लिए कदापि क्षमा नहीं चाहूंगी। क्योंकि यह अपराध इतना बड़ा है कि उसके लिए क्षमा का प्रश्न ही नहीं उठता अपितु वचन देती हूं कि अपराध सिद्ध होने पर हर उस दण्ड के लिए तैयार रहूँगी जो तुम मेरे लिए उचित समझोगी।'

यह सुनकर प्रवीण का दिल नरम हो गया और बोली—

'चची जान! अब मुझे विश्वास हो गया है कि आप निर्दोष हैं इस लिए सफाई देने की आवश्यकता नहीं।

अशरत मन ही मन अति प्रसन्न हुई कि उसने अपनी वक्तृता के बल पर एक भोली लड़की का मन जीत लिया है और उसे उसके निर-पराध होने का विश्वास हो गया है। प्रवीण के शब्द सुनकर उसने बल देते हुए कहा...

'नहीं, सफाई तो मैं दूंगी और ऐसा करना मेरा कर्तव्य है। हां, यह हम में तै हो जाना चाहिए कि जबतक मैं ऐसा नहीं करती कम से कम उस समय तक मैं तुम्हें अपनी बेटी और तुम मुझे अपनी माँ समझो। बस, इससे अधिक मैं और कुछ कहना नहीं चाहती।

प्रवीण के मन पर और भी अधिक प्रभाव हुआ। उसके नेत्र गीले हो गए और बोली—

'हाँ, मैं आपको अपनी माँ ही समझती हूं और समझूंगी। मैं इस बारे में भाग्यहीन हूँ कि मुझे भावज न मिल सकी किन्तु इस प्रकार भाग्यशाली हूं कि दोबारा मुझे मेरी माँ मिल गई। आज से आप मेरी माँ हैं।'

यह सुनकर अशरत ने उठकर प्रवीण को गले से लगा लिया और उसका मस्तक चूमते हुए बोली—

'जीती रहो बेटी ! मुझे तुम से यही आशा थी।'

८

ताहिरा का भाई शमीम अब भी अशरत से मिलता रहता था। वह प्राय: नित्य इस घर में आता जाता था। प्रवीण ने उसे पहले कभी नहीं देखा था इसलिये वह यह न समझ सकी कि ये हजरत ताहिरा के भाई हैं। अशरत को यह ख्याल था कि कहीं वह शमीम के बारे में किसी प्रकार का कोई सन्देह करने लगे। एक दिन उसने प्रवीण से कहा—

'ये मेरे फूफीजाद भाई हैं।'

प्रवीण के चचा को भी यही ख्याल था कि शमीम उसकी पत्नी का फुफेरा भाई है इसलिये उसने कभी शमीम के आने जाने पर आपत्ति न की। अशरत प्राय: सिनेमा या सैर का बहाना करके शमीम के साथ भटरगश्त करने के लिये निकल जाती किन्तु मियाँ कमर-उद्दीन और प्रवीण यही ख्याल करते कि फुफेरे भाई के साथ कहीं आने-जाने में कोई हर्ज नहीं।

प्रवीण इस घर में आने के बाद भी प्रोफेसर वहीद से मिलती रही। वह हर दूसरे तीसरे दिन उसे मिलने के लिये उसके मकान पर चली जाती। वे अनेक बार इकट्ठे सिनेमा भी गए। अशरत छत्तीस घाट का पानी पिये थी। उसे यह सन्देह हुआ कि यह जाती कहाँ है? किन्तु उसने इस बारे में उससे कुछ नहीं कहा और कभी देर से घर आने पर उसने आपत्ति न की। जो स्त्री स्वयं दुश्चरित्र और आवारा हो उसे दूसरी स्त्रियों के बारे में भी यही सन्देह होता है। यदि वे किसी आवश्यक

काम से भी घर से निकलें तो वह यही ख्याल करती हैं कि वे भी उनके समान पर पुरुषों के साथ मटर गश्त करतीं और आवारा घूमती हैं। अशरत का प्रवीण पर सन्देह करना भी एक स्वाभाविक बात थी किन्तु उसने प्रवीण से कभी कोई ऐसी बात न की जिससे उसे यह सन्देह होता कि वह उसी चाल ढाल पर सन्देह करती है। इसके प्रतिकूल उसने प्रवीण से और भी अच्छा व्यवहार करना आरम्भ कर दिया। वह उसके आराम का पूरा-पूरा ध्यान रखती और कभी कोई ऐसी बात न करती जिससे प्रवीण को दुःख हो।

अशरत के बारे में प्रवीण की सम्मति यह थी कि वह एक झगड़ालु स्त्री है और किसी से उसकी निभ नहीं सकती किन्तु जब उसने उसमें इतना परिवर्तन देखा तो पह चकित रह गये। उसने सुना था कि मनुष्य अपने स्वभावगत दोषों को दूर नहीं कर सकता किन्तु जब उसने अशरत के व्यवहार को देखा तो उसे विश्वास हो गया कि यत्न करने पर स्वभाव भी बदल सकता है। प्रवीण ने ख्याल किया कि अशरत को अपनी गलतियों का जो दण्ड भुगतना पड़ा है उसने इसे सुधार दिया है और उसके रंग ढंग बदल गए हैं।

एक दिन शाम के समय प्रवीण वहीद के साथ सिनेमा देखने चली गई और कोई रात के दस बजे घर लौटी। अपने कमरे में प्रविष्ट हुई तो अशरत वहीं बैठी थी। वह उसे देखकर घबराई और बोली—

'क्षमा कीजियेगा, आज मैं देर से घर आई हूँ।'

अशरत ने मुस्कराते हुए कहा—

'नहीं, कोई बात नहीं। लेकिन हाँ, देखो। यदि कहीं जाना हो तो खाना खाकर जाया करो। अब खाना ठण्डा हो गया है और नौकर चाकर भी सो गए हैं।'

प्रवीण ने लज्जित स्वर में कहा—

'बहुत अच्छा। भविष्य में ऐसा ही होगा।'

अशरत ने कहा—

'तुम्हारे सैर सपाटे पर मुझे कोई अपत्ति नहीं। कहीं यह गलत फहमी न हो जाए तुम्हें। मैं अनेक बार स्वयं शमीम के साथ घूमने फिरने के लिये चली जाती हूँ। इसमें कौन सी बुराई है। अच्छा, तुम बैठो मैं अभी खाना गरम करके लाती हूँ।'

प्रवीण ने कहा—

'नहीं नहीं, आप बैठिये। यह काम मैं स्वयं किये लेती हूं। मेरे होते आपको यह कष्ट करने की आवश्यकता नहीं।'

अशरत ने उसके सिर पर हाथ फेरते हुए कहा—

'प्रवीण! खाना मैं स्वयं ही गरम करूँगी। न जाने क्या बात है मुझे तुम्हारा काम करते हुए कुछ संतोष-सा अनुभव होता है।'

प्रवीण ने कहा—

'यह आप की कृपा है। बचपन में ही माँ का हाथ मेरे सिर से उठ गया था। यह मेरा सौभाग्य है कि मुझे आप जैसी कृपालु मां दोबारा मिल गई हैं।'

अशरत ने जल्दी से स्टोव पर साग की प्लेटें गरम कीं और खाना प्रवीण के सामने एक तिपाई पर रख दिया। प्रवीण तो खाना खाने लगी और अशरत उसके पास बैठ कर इधर उधर की बातें करने लगी। कुछ देर तक देश की राजनीति की चर्चा करती रही फिर सहसा बात बदल कर बोली—

'प्रवीण! आज इतनी देर तुमने कहाँ लगा दी?'

प्रवीण कुछ देर तक चुप रही फिर बोली—

'सिनेमा देखने चली गई थी।'

'हाँ, आजकल सिनेमा से बढ़कर और कोई मनोरंजन नहीं है। कौन सा फिल्म देखा तुमने?'

'तूफान। एक अमरीकन फिल्म है।'

'बड़ा अच्छा फिल्म है। मैं इसे दो तीन बार देख चुकी हूँ। शायद शमीम थे मेरे साथ। बात वास्तव में यह है कि सिनेमा के मनोरंजन के

लिये किसी साथी का होना अत्यावश्यक है। मैं तो हर बार शमीम को साथ ले लेती हूँ। वे बेचारे भी चुपके से साथ चल देते हैं।'

'हाँ, यह आपने सही कहा। किसी साथी के बिना सिनेमा का मनोरंजन बेकार है।'

'आज किसके साथ सिनेमा देखा तुमने ?'

प्रवीण को इस प्रश्न की आशा न थी। वह कुछ परेशान सी हो गई और कुछ उत्तर न दे सकी।

अशरत उसकी परेशानी को ताड़ गई और गम्भीरता से बोली—

'अकेले मे देखा होगा तुमने सिनेमा ? मेरे ख्याल में भविष्य में किसी को साथ ले लिया करो। इससे सिनेमा का आनन्द दुगना हो जाता है।'

यह सुनकर प्रवीण का उत्साह कुछ बढ़ा और धीरे से बोली—

'आज भी तो मैं अकेली नहीं गई थी ?'

'कौन थे साथ ?'

'प्रोफेसर वहीद।'

'अच्छा, वे प्रोफेसर जो तुम्हारे भाई के मित्र थे ?'

'हाँ, वे ही।'

'बहुत अच्छे आदमी हैं। मैं तो उनका बहुत सम्मान करती हूँ। स्व० नाजिम को उनसे बहुत प्रेम था।' यह कहते हुए अशरत ने एक ठण्डी सांस ली।

प्रवीण ने मुस्कराते हुए कहा—

'किन्तु उन्हें तो आप से बहुत बडी शिकायत है।

'क्यों ?'

'वे कहते हैं कि ताहिरा के विवाह का जाली पत्र पहुँचाने में आप का हाथ था।'

'बहुत अच्छा। वे यह समझते हैं तो समझते रहे। किन्तु हां, तुमने

उनसे यह चर्चा कर दी है कि अब मैं इस घर में हूँ ?'

'नहीं मैंने यह चर्चा नहीं की।'

'अच्छा, यह बताओ। प्रोफेसर वहीद से तुम्हारी जान पहचान कैसे हुई ? यह तो मैं जानती हूँ कि वे स्व० नाजिम के मित्र थे और आते जाते थे। वे तुम्हें निश्चय ही जानते होंगे। मेरा मतलब यह है कि सिनेमा इकट्ठे देखने का अर्थ तो यही है कि तुम दोनों के सम्बन्ध कुछ अधिक हो गए हैं।'

प्रवीण कुछ लजा सी गई। अशरत ने मुस्कराते हुए कहा—

'नहीं, इसमें लजाने की कोई बात नहीं है। यह तो यों ही एक बात हो रही है।'

प्रवीण ने दृष्टि नीची करते हुए कहा—

'वे मेरे मंगेतर हैं। अब्बा जान ने अपने जीवन में ही मेरी मँगनी उनसे कर दी थी।'

'अच्छा यह बात है। फिर तो कोई हर्ज की बात नहीं।'

'तभी तो मैं कभी कभार उनके साथ घूमने फिरने के लिये चली जाती हूँ।'

'हाँ, हाँ, तब तो उनके साथ घूमना फिरना जायज़ है। प्रवीण ! बात वास्तव में यह है कि हमारे समाज में लड़कों और लड़कियों के मेल-मिलाप पर जो बन्धन लगे हुए हैं मैं उन्हें बहुत बुरा समझती हूँ। यह बड़ी अच्छी बात है कि तुम्हें विवाह से पहले ही अपने होने वाले पति के स्वभाव और रंग-ढंग का पता करने का अवसर मिल गया है। इसका प्रभाव तुम्हारे आने वाले जीवन पर बहुत अच्छा पड़ेगा। हाँ, तो आज मुझे यह पहिली बार मालूम हुआ है कि तुम प्रोफेसर वहीद की मंगेतर हो। तुम्हारे चचा ने भी तो यह चर्चा मुझसे नहीं की।'

'मेरा ख्याल है चचा जान को इस बात का पता नहीं है। हाँ, नसरत के सामने यह मामला तै हो चुका है। यह तो हो नहीं सकता कि चचा मियाँ को पता हो और वे आप से इसकी चर्चा न करें।'

'हाँ, तुम्हारा यह कहना सही है। नसरत नगोड़ी मुझसे मिलती ही नहीं। नहीं तो उसकी जुबानी यह सब कुछ मालूम हो जाता। जब से मैं इस घर में आई हूं वह एक बार भी तो नहीं आई। मैंने अनेक बार उसे बुलाया है किन्तु वह हर बार कोई न कोई बहाना करके टाल देती है। मालूम नहीं मैंने उसका क्या अपराध किया है? यदि उसके अब्बा ने विवाह कर लिया तो उसे अपने अब्बा से शिकायत होनी चाहिये न कि मुझसे। तुम ही कहो, इसमें मेरा क्या दोष है?'

'आपका कोई दोष नहीं। किन्तु जहाँ तक मैं जानती हूँ नसरत आपके विरुद्ध भी नहीं। खैर, मैं उसे किसी दिन पकड़ कर लाऊंगी यहां।'

'हां, हां, उसे किसी दिन अवश्य यहां लाओ।'

अशरत मन ही मन प्रसन्न थी कि नसरत उसके यहाँ नहीं आई क्योंकि नसरत एक बुद्धिमती और विचारशील स्त्री थी और उसे भय था कि यदि उसने आना आरम्भ कर दिया तो उसके कृत्यों का सारा कच्चा चिट्ठा एक न एक दिन प्रकट हो जाएगा और उसे इस घर से भी अपमानित हो कर निकलना पड़ेगा। प्रवीण और पति को तो उसने यह विश्वास दिलाया था कि शमीम उसका फुफेरा भाई है किन्तु नसरत के सामने उसका यह दाव कदापि न चल सकता और वह झट वास्तविक मामले की तह तक पहुंच जाती। अशरत ने कहने को तो प्रवीण से यह कह दिया कि 'हाँ, हाँ, किसी दिन लाओ नसरत को यहां।' किन्तु हृदय से वह उसके विरुद्ध थी और यह नहीं चाहती थी कि नसरत उस समय तक उस घर में कदम रखे जब तक उसके पांव मज़बूत नहीं हो जाते।

अशरत और प्रवीण काफी देर तक बातें करती रहीं। अन्त में अशरत ने पुनः वास्तविक विषय पर आते हुए कहा—

'हाँ, अब तो फिर वहीद मियाँ इस घर के दामाद हैं। उन्हें किसी दिन खाने पर बुलाओ।'

प्रवीण बहुत प्रसन्न हुई । उसने मन ही मन कहा कि वहीद से मिलने में जो थोड़ी बहुत रुकावट है वह बिल्कुल जाती रहेगी । यदि एक बार वह खाने पर आ गए तो भविष्य के लिये उनका मार्ग साफ हो जाएगा और वे उससे मिलने के लिये बिना झिझक आ जाया करेंगे । फिर अशरत भी तो इस असामयिक मेल मिलाप के विरुद्ध नहीं ।

यह सोच कर उसने कहा—

'हाँ, हाँ, किसी दिन मैं उन्हें अवश्य बुलाऊंगी किन्तु एक ध्यान रखना पड़ेगा और वह यह कि उन्हें आप का नाम और पता मालूम न होने पाए । वे यही समझें कि आप मेरी चची हैं और बस । उन्होंने आप को अब तक नहीं देखा । यह स्वयं ही उन्होंने एक दिन कहा था । इस लिये उन्हें आप को देख कर यह पता ही नहीं लग सकता कि आप वास्तव में मेरी भावज हैं ।'

अशरत ने मुस्कराते हुए कहा—

'किन्तु यदि यह मालूम भी हो जाए तो इसमें बुराई क्या है ?'

प्रवीण ने कुछ देर रुक कर कहा—

'बात वास्तव में यह है कि वे आप को अच्छा नहीं समझते हैं । यह मैं मानती हूं कि उनको केवल गलतफहमी हुई है । उन्होंने केवल सुनी सुनाई बातों पर विश्वास कर लिया है । किन्तु मेरा विचार है कि वे आपके व्यवहार से बहुत प्रभावित होंगे और जब वे आपकी प्रशंसा करने लगेंगे जैसी कि मुझे आशा है तो फिर मैं उन्हें बता दूंगी कि मेरी 'ये चची कभी मेरी भावज थीं ।' इससे एक तो आनन्द रहेगा दूसरे उनकी गलतफहमी भी दूर हो जाएगी ।'

अशरत ने कहा—

'बहुत अच्छा । यों ही सही किन्तु उन्हें खाने पर बुलाओ अवश्य ।'

'हाँ, हाँ, वह तो मैंने कहा है कि किसी दिन उन्हें अवश्य बुलाऊंगी ।'

'किसी दिन क्या ? कल ही बुलाओ ।'

'बहुत अच्छा । मैं कल ही उन्हें रात के खाने पर बुला लूंगी ।'

'आ जाएंगे न वे ?'

'हाँ, हाँ, आ जाएंगे। वे भला क्यों इनकार करने लगे ? हां, यदि उन्हें यह मालूम हो जाए कि चची के रूप में आप मेरी भावज हैं तो शायद इनकार कर दें।'

'किन्तु यह तो तुमने कहा है कि उन्हें नहीं बताया जाएगा।'

'यह उन्हें क्यों बताया जाएगा ? यह तो वैसे मैंने कहा है।'

'तो फिर यों करो कि कल प्रातः ही उन्हें रात के खाने का निमंत्रण भेज दो। बल्कि उचित यह होगा कि स्वयं चली जाओ और उन्हें खाने के लिये कह आओ। घर में तुम्हें और कोई काम तो है नहीं।'

'हां, यह ठीक है।'

'अरे ! ग्यारह बज गए ? समय बीतते देर नहीं लगती। अच्छा प्रवीण ! अब तुम आराम करो। मैं भी जाकर सोती हूँ।'

यह कहती हुई अशरत उठकर चली। द्वार पर पहुंच कर उसने पीछे मुड़कर प्रवीण की ओर देखा और बोली—

'देखो भूल न जाना। ज़रा सवेरे ही वहीद मियां के यहां चली जाना। ऐसा न हो कि वे कहीं बाहर निकल जाएं ?'

प्रवीण ने कहा—

'बहुत अच्छा। मैं सवेरे उठते ही चली जाऊंगी।'

यह सुनकर अशरत अपने कमरे में चली गई। प्रवीण ने उठकर खाने के बर्तनों की एक तिपाई एक ओर रखी और रात्रि के वस्त्र पहनने लगी।

६

दूसरे दिन प्रातः उठते ही प्रवीण ने वस्त्र आदि पहिने और कार में बैठकर वहीद के घर की ओर चल दी। वह अत्यन्त प्रसन्न थी और मन ही मन कह रही थी कि मेरे सुनहरे स्वप्नों का अब फल प्राप्त होने वाला है। उसे पहिले से यह मालूम न था कि उसकी नई चची वास्तव में उसकी भावज है। जब उसने उसे देखा तो वह बहुत घबराई और उसे भय उत्पन्न हुआ कि कहीं वह उसके प्रेम में विघ्न बन जाए किन्तु उसने उसे बड़ा बदला हुआ पाया। वह अब वह अशरत नहीं थी जो किसी समय उसके घर में उसकी भावज के रूप में आई थी। उसमें उसे असाधारण परिवर्तन दिखाई पड़ा। वह अब पहिली सी झगड़ालु नहीं रही थी अपितु अत्यन्त मिलनसार और सभ्य स्त्री दिखाई पड़ती थी। प्रवीण ने ख्याल किया कि उसे अपने जीवन में जो कटु अनुभव हुए हैं उन्होंने इसकी स्वाभाविक निर्बलताओं को विशेषताओं में परिवर्तित कर दिया है किन्तु यह प्रवीण की भूल थी। पर्वत अपने स्थान से टल जाए तो टल जाए मानवी स्वभाव परिवर्तित नहीं हो सकता। अशरत का झगड़ालु स्वभाव और कुप्रवृत्ति उसके स्वभाव में प्रविष्ट हो चुके थे और उनका परिवर्तित होना एक असम्भव सी बात थी। मनुष्य को कुसंगत से प्राप्त दुर्गुण इन बातों से प्रभावित नहीं हो सकते। अशरत की स्वभावगत निर्बलताओं का दूर होना तो असम्भव था। हाँ, उसने यह अवश्य सीख लिया था कि इन निर्बलताओं को मक्कारी और चालाकी से कैसे छुपाया जा सकता है। वह अब भी वैसे ही झगड़ालु

और दु:स्वभाव की स्त्री थी। हाँ, उसने मक्कारी और प्रवंचना भी अब सीख लिये थे क्योंकि उसे यह अनुभव हो चुका था कि इन निर्बलताओं को छुपाने के लिये इस शस्त्र की अत्यावश्यकता है।

प्रवीण के साथ असाधारण नरमी से बर्ताव करने का एक कारण यह भी था कि वह अपने पति को अपने बीते जीवन से परिचित नहीं होने देना चाहती थी। दूसरे शमीम के साथ उसके जो असंगत सम्बन्ध थे उनपर भी पर्दा डालना चाहती थी। उसे यह मालूम था कि यदि उसने प्रवीण से पहिले सा अपव्यवहार रखा तो वह अपने सम्बन्धों का भेद-भेद न रह सकेगी। वह जानती थी कि प्रवीण एक सीधी सादी लड़की है। यदि उसने उसे शीशे में उतार लिया तो वह इसके बारे में अपने चचा को कुछ नहीं कहेगी। इसका अर्थ यह भी नहीं कि उसने अपनी निर्बलताओं को छुपाने के लिये प्रवीण के बारे में अपना रवैय्या बदल लिया हो। उसके मन में वही पहले सी शत्रुता विद्यमान थी और वह उसे अपमानित करने पर तुली थी किन्तु इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये किसी ऐसे उपाय से काम लेना चाहती थी जिससे उसकी आवारा-गरदी और काले कारनामे भी प्रकट न होने पाए और प्रवीण से भी बदला लिया जा सके।

प्रवीण बेचारी सादा स्वभाव की लड़की थी। उसे अशरत के मानसिक पाप का कुछ ज्ञान न था। वह हृदय से यही समझती थी कि अशरत अब उसकी सहायक और भलाई चाहने वाली है और वहीद और उसके सम्बन्ध को पूर्ण करने में उसकी सहायता करेगी। जब अशरत ने उसे कहा कि वहीद को अवश्य खाने पर बुलाओ तो उसके आग्रह को देखकर उसे विश्वास हो गया कि उसका भला चाहने वाली है और इस काम में किसी प्रकार की रुकावट उत्पन्न करने के स्थान पर उसकी सहायता करना चाहती है।

प्रवीण कार में बैठी यही सोचती जा रही थी कि अब अशरत की सहायता से यह काम सहज से हो सकेगा और उसकी एक इच्छा पूर्ण

हो सकेगी। वह मन ही मन में कह रही थी—

'काश ! अशरत भावज के रूप में भी ऐसी ही भली सिद्ध होती और हमारा घर उजड़ने से बच जाता।'

उसकी कार कुछ मिनट के बाद वहीद की कोठी में जाकर रुकी। वहीद कोठी के सामने खड़ा टहल रहा था। वह उसे देखकर उसकी ओर बढ़ा और बोला—

'यह सवेरे-सवेरे मेरा भाग्य कैसे जाग उठा है ?'

प्रवीण ने मुस्कराते हुए कहा—

'एक काम से आपके पास आई हूँ ?'

'कहिये, क्या काम है ?'

'मेरी चची ने कहा है कि आज रात का खाना आप हमारे यहाँ खाएँ।'

'तो क्या यह दावत चची के कहने से हो रही है ?'

'हाँ, हाँ, उन ही के कहने से हो रही है।'

'बड़ी कृपा की उन्होंने ? क्या उन्हें मेरे और तुम्हारे सम्बन्ध का ज्ञान है ?'

'पहले तो नहीं था। अब हो गया है।'

'तुम ही ने बताया होगा ?'

'हाँ, कल रात जब मैं आपके साथ सिनेमा देखने के बाद घर पहुँची तो चची ने मुझसे पूछा 'इतनी रात गए तक कहाँ रही ?'

'वे कुछ क्रुद्ध हुई होंगी ?'

'सुनिये तो। वे क्रुद्ध कहाँ हुईं ? यह आपने क्यों अनुमान कर लिया ?'

'अच्छा तो फिर तुमने उनकी बात का क्या उत्तर दिया ?'

'मैंने स्पष्ट कह दिया कि मैं आपके साथ सिनेमा देखने गई थी।'

'फिर क्या हुआ ?'

'फिर उन्होंने पूछा कि ये प्रोफेसर वहीद कौन हैं ? मैंने उन्हें बता

दिया कि वे मेरे मंगेतर हैं। यह सुनकर उन्होंने कहा 'मैं उन्हें देखना चाहती हूँ। आज रात उन्हें खाने पर बुलाओ। सो यह बात है सारी।'

'तो क्या वे इस सम्बन्ध के पक्ष में हैं?'

'हाँ, हाँ, उन्हें भला इस सम्बन्ध पर क्या आपत्ति होने लगी? बल्कि वे तो यह चाहती हैं कि यह काम जितना शीघ्र हो जाए अच्छा इसीलिये तो उन्होंने आपको बुलाया है। मेरा विचार है यह अच्छा ही शकुन है।'

वहीद ने प्रसन्न होते हुए कहा—

'फिर तो बड़ी अच्छी बात है। मैं अवश्य खाने पर पहुंचूंगा। किन्तु हाँ, रात का खाना ही तुम ने कहा है न?'

हाँ, हाँ, रात का खाना। कोई और काम तो नहीं आपको?'

'यदि हो भी तो वह टाला जा सकता है। ये अवसर रोज-रोज थोड़े ही मिलते हैं?'

यह कहते हुए वहीद ने एक अट्टहास किया और प्रवीण भी हँसने लगी। कुछ देर के बाद प्रवीण ने कहा—

'इस निमंत्रण से एक और लाभ पहुँचेगा हमें।'

'वह क्या?'

'वह यह कि आपका वहां आना-जाना हो जाएगा और हमें एक दूसरे से मिलने में कोई कठिनाई न रहेगी।'

'हां, यह तो तुम्हारा कहना सही है। यह चोरी छुपे की भेंट का किस्सा समाप्त हो जाएगा।'

'बात वास्तव में यह है कि मेरी चची नए विचार की स्त्री हैं। उनका विचार है कि विवाह से पूर्व लड़के और लड़की का एक दूसरे से मिलते रहना आवश्यक है। ताकि वे एक दूसरे के स्वभाव से परिचित हो जाएँ और उनकी गृहस्थी में कोई कड़वाहट उत्पन्न न हो।'

वहीद ने हंसते हुये कहा—

'यह तो उनका ख्याल बिल्कुल सही है। मेरी राय यह है कि हमें

उनके इस ख्याल से पूरा-पूरा लाभ उठाना चाहिए और एक दूसरे के स्वभाव तथा रंग ढंग को जांचने के लिए इन मुलकातों का क्रम और अधिक तेज कर देना चाहिए।'

प्रवीरा ने कुछ बिगड़ने के स्वर में कहा—

'हाँ, यह तो आप हृदय से चाहते होंगे। आप तो चाहते ही यही हैं कि यह मुलाकातों का क्रम समाप्त ही न होने पाए किन्तु मैं इसके विरुद्ध हूं।'

'तुम क्या चाहती हो ?

'मैं यह चाहती हूं कि जिस उद्देश्य से ये मुलाकातें होती हैं' वह शीघ्र से शीघ्र प्राप्त हो जाए और ये मुलाकातें समाप्त हो जाएँ। मेरे निकट इस उद्देश्य की पूर्ति मुख्य है और इन मुलाकातों की गौरा।'

'हाँ, तुम्हारा यह कहना सही है किन्तु शायद तुम यह नहीं जानतीं कि उद्देश्य प्राप्त करने में उतना आनन्द नहीं होता जितना उस संघर्ष काल में होता है जो उद्देश्य की उपलब्धि के लिए किया जाता है।'

'किन्तु मैं इस दर्शन की कायल नहीं हूँ।'

वहीद ने हंसते हुए कहा—

'तो बहुत अच्छा। मैं भी तुम्हारा अनुमोदन करता हूं। क्या करूँ मेरा काम ही अनुमोदन करना है।'

प्रवीरा मुस्कराई और बोली—

'हाँ साहब ! सब कुछ जानती हूँ। आप बड़े वे हैं।'

'वे क्या ?'

'मतलब प्रोफेसर वहीद एम० ए०।'

इसके बाद दोनों खिलखिला कर हंस पड़े और वातावरण उनके अट्टहास से गूँजने लगा। वहीद ने हंसते हुए कहा—

'वह की यह व्याख्या मैंने पहली बार सुनी है।

'अभी कई नई-नई बातें आपको मालूम होंगी।'

'कब।'

'जैसे आज रात ही आपको कई नई बातें मालूम होंगी ।

यह कहते-कहते प्रवीरा रुक गई । उसने अनुभव किया कि यह उसे नहीं कहना चाहिए था । यह कहने से उसका उद्देश्य यह था कि रात को उसे यह मालूम हो जाएगा कि उसकी चची वास्तव में कौन है ? किन्तु वह यह जानती थी कि वहीद को उससे हार्दिक घृणा है । सम्भव है इस भेद के खुलने से कोइ नई उलझन उत्पन्न हो जाए । वह विवाह तक उसे इस भेद से परिचित करना नहीं चाहती थी । उसने कहने को तो यह कह दिया कि रात आपको कई नई-नई बातें मालूम होंगी किन्तु बाद में वह परेशान हुई और उसने अधिक कुछ कहना उचित न समझा । वहीद ताड़ गया कि उसने बात अधूरी छोड़ दी है । अतः उसने उत्सुक स्वर में कहा--

'हाँ, तो वे नई-नई बातें क्या मालूम होंगी मुझे ?

इस प्रश्न पर प्रवीरा बहुत घबराई और मन ही मन सोचने लगी कि इसका क्या उत्तर दे । वह अभी यह सोच रही थी कि वहीद ने पुनः इस प्रश्न को दोहराया और कहा—

'प्रवीरा ! बताओ, वे नई-नई बातें क्या होंगी ?'

प्रवीरा ने कहा—

'मेरा मतलब यह था कि रात को आप नए-नए आदमियों से मिलेंगे । उन व्यक्तियों से जिन्हें आप पहले से नहीं जानते।'

'अच्छा, यह बात है ? मैं भी चकित था कि मालूम नहीं वे नई-नई बातें क्या हैं ?'

प्रवीरा और वहीद काफी देर तक बाग़ में टहलते रहे और इधर-उधर की बातें करते रहे । इतने में नौकर आकर कहा—

'हुज़ूर ! नाश्ता तैयार है ।'

वहीद ने प्रवीरा से कहा—

'चलो प्रवीरा ! नाश्ता कर लें ।'

प्रवीरा ने कहा—

'नाश्ता के लिए मुझे विवश न कीजिये । मैं घर जाकर ही नाश्ता करूँगी । मेरी चची मेरी प्रतीक्षा कर रही होंगी। उन्होंने भी मेरी प्रतीक्षा में नाश्ता नहीं किया होगा । अब यह बात अच्छी नहीं कि मैं यहीं नाश्ता कर जाऊँ ।'

'तो यों कहो न कि आजकल तुम दोनों में खूब निभ रही है ?'

'यह तो आपने यों कहा है जैसे भविष्य में हम दोनों में लड़ाई हो जायेगी ?'

'नहीं तो, यह मैंने कब कहा है ? यह तो एक बात से बात निकली है ।'

'बात वास्तव में यह है कि चची मुझे बहुत अधिक चाहती हैं ।'

'तो मुबारिक हो फिर । केवल हम ही कम चाहते है तुम्हें ।'

'यह एक और ऐसी ही हाँक दी आपने ।'

वहीद हंस पड़ा और बोला—

'मैं तो पहले भी यह कह चुका हूँ कि बात से बात यों ही निकलती है ।'

'बात से बात निकलने पर मुझे कोई आपत्ति नहीं किन्तु निकलने वाली बात असम्बद्ध तो न हो ।'

'हाँ यह तुमने सही कहा है । भविष्य में ध्यान रखूंगा ।'

प्रवीण हंसने लगी और बोली—

'हाँ, इस बारे में आपको ध्यान ही रखना चाहिए ।

वहीद ने विषय बदलते हुए कहा—

'फिर चलो थोड़ा सा नाश्ता कर लो । शेष अपनी चची के साथ जाकर कर लेना ।'

प्रवीण ने कार में बैठते हुए कहा—

'मैं किस्तों में नाश्ता करने के विरुद्ध हूँ ।'

वहीद ने एक अट्टहास किया । वह कुछ और कहना ही चाहता था कि कार चल दी और प्रवीण के ये शब्द उसे सुनाई दिये—

'खुदा हाफिज ।'

प्रवीण जब घर पहुँची तो अशरत ने कहा—

'कहो, निमंत्रण दे आईं प्रोफेसर वहीद को ?'

'हाँ, हाँ मैंने उन्हें कह दिया है और उन्होंने निमंत्रण स्वीकार कर लिया है ।'

'खैर, यह बड़ा अच्छा हुआ । हाँ प्रवीण ! मेरा ख्याल है कि शमीम भाई को भी इस भोजमें सम्मिलित किया जाए । मेरा मतलब यहहै कि अच्छी खासी चहल-पहल रहेगी । शमीम हंसोड़ आदमी हैं । उनके चुटकलों से भोज में और अधिक गरमी पैदा हो जाएगी ।'

प्रवीण ने कहा—

'हाँ हाँ, क्या हर्ज है ? शमीम भाई को अवश्य बुलाना चाहिए ।'

'तो मैं अभी उन्हें सन्देश भिजवा देती हूं ।'

यह कह कर अशरत बाहर निकल गई और कुछ देर बाद वापस आकर बोली—

'मैंने शमीम भाई को टेलीफोन पर सूचित कर दिया है । उन्होंने निमन्त्रण स्वीकार कर लिया है ।'

प्रवीण मुस्कराती हुई बोली—

'चलो, यह भी अच्छा हुआ । रात को खूब रौनक रहेगी ।'

प्रवीण का ख्याल था कि आज की रात का भोज उद्देश्य प्राप्ति का कारण सिद्ध होगा किन्तु अशरत का उद्देश्य कुछ और था । वह वहीद की सख्त विरोधी थी और जब से उसे प्रवीण की जुबानी यह मालूम हुआ था कि वहीद उसे अच्छा नहीं समझता उसकी शत्रुता और बढ़ गई थी और वह बदला लेने पर तुली हुई थी । वह बड़ी मक्कार स्त्री थी । उसका मस्तिष्क षड़यंत्र सोचने के मामले में बड़ा चलता था । भोज की आड़ में वह शमीम के साथ मिलकर एक ऐसा नाटक खेलना चाहती थी जो प्रवीण और वहीद के प्रेम कथानक का अन्तिम अध्याय सिद्ध हो । वह कदापि यह नहीं चाहती थी कि प्रवीण से वहीद का

विवाह हो। क्योंकि इस दशा में उसकी अपनी पोल खुलने का भय था कि यदि यह विवाह हो गया तो सम्भव है कि यही उसके विनाश का कारण बन जाए। प्रवीरण ऐसी सीधे स्वभाव की लड़की को तो वह साँचे में ढाल सकती थी और उसकी दृष्टि में पवित्र बनी रह सकती थी किन्तु वहीद जैसे पढ़े-लिखे और छत्तीस घाट का पानी पिये व्यक्ति के सामने उसकी एक न चल सकती थी और एक दिन में यह भेद प्रकट हो सकता था कि शमीम और उसमें क्या सम्बन्ध है और वह अपने गत जीवन में क्या क्या कारनामे कर चुकी है? वह यह जानती थी कि यदि उसने प्रवीरण को इस विवाह से रोकने का यत्न किया और बातचीत से उसे सहविचार बनाना चाहा तब एक तो प्रवीरण को उसके हार्दिक पाप का पता चल जाएगा और वह उसे अपना शत्रु समझने लगेगी। दूसरे विवाह को रुकवाने का काम और भी कठिन हो जाएगा। इन सब बातों का ख्याल रखते हुए उसने एक ऐसी चाल आरम्भ की जिससे प्रवीरण को भी उसके बारे में किसी प्रकार का सन्देह न हो और यह काम भी रुक जाए।

सायंकाल खाने-पीने की चीजें खाने के कमरे में ढंग से लगा दी गईं और प्रवीरण और अशरत ड्राइंग रूम में बैठकर अतिथियों की प्रतीक्षा करने लगीं। सब से पहिले शमीम पहुंचा और आते ही बोला—

'भई! यह भोज किस खुशी में है यह मुझे मालूम ही न हो सका।'

अशरत टेलीफोन पर उसे सब कुछ बता चुकी थी और कह चुकी थी कि उसे इस नाटक में क्या अभिनय करना होगा किन्तु उसने केवल सूझ-बूझ से काम लेते हुए आते ही यह प्रश्न जड़ दिया।

अशरत ने उसे आंख का संकेत करते हुए कहा—

'यह भोज एक शुभ अवसर पर हो रहा है।'

'आखिर मालूम तो हो वह शुभ अवसर क्या है?'

'प्रवीरण के मंगेतर को खाने पर बुलाया है।'

'वे कौन भाग्यशाली हैं ?'

प्रवीण को उसकी यह बात कुछ बुरी लगी किन्तु मौन रही। अशरत ने उसका उत्तर देते हुए कहा—

'एक स्थानीय कालेज में प्रोफेसर हैं वे।'

'क्या नाम है उनका ?'

'नाम बताने की क्या आवश्यकता हैं ? जब वे आएंगे तुम्हें मालूम हो जाएगा।'

'तो मतलब यह हुआ कि मैं उन्हें जानता हूं।'

'यह तो मैंने नहीं कहा।'

प्रवीण को यह सुनकर सन्देह हुआ किन्तु कुछ सोचने के पश्चात् वह इस परिणाम पर पहुँची कि अशरत ने यों ही कह दिया है कि वे आएंगे तो तुम्हें मालूम हो जाएगा। अन्यथा शमीम वहीद को नहीं जानता और यदि जानता भी हो तो इसमें अचम्भे की क्या बात है ?'

कुछ देर तक तीनों में हंसी मजाक की बातें होती रहीं। इतने में प्रोफेसर वहीद की कार भी आ गई। प्रवीण तो उसे लेने के लिये बाहर निकल गई किन्तु शमीम और अशरत वहीं बैठे रहे। कोई एक क्षण के बाद ही प्रवीण वहीद के साथ प्रविष्ट हुई और अशरत की ओर संकेत करते हुए बोली—

'ये हैं मेरी चची। और हाँ, ये इनके फुफेरे शमीम हैं।'

वहीद इन दोनों को देखते ही पहचान गया और हक्का-बक्का रह गया। वह कुछ चकित सा कुर्सी पर बैठ गया। प्रवीण को दुःख हुआ कि वहीद ने शमीम से हाथ न मिलाकर असभ्यता का परिचय दिया है।

अशरत ने वहीद की ओर देखते हुए कहा—

'कहिये साहब ! कैसी तबियत है ? बड़ी देर के बाद भेंट हुई है ?'

शमीम ने मुस्कराते हुए कहा—

'किताबों की दूकान पर ही एक दो बार आप से मिलने का अवसर मिला है।'

वहीद तुरत बुद्धि व्यक्ति था किन्तु आशा के विपरीत घटना क्रम के आ पड़ने से कुछ घबरा सा गया। प्रवीण चकित थी कि यह क्या बात है? वह अनेक बार वहीद के मुख से यह सुन चुकी थी कि वह अशरत से अपरिचित है किन्तु आज जब अशरत और शमीम ने बीती मुलाकातों की चर्चा की तो वह चकित रह गई और यह सोचने लगी कि वहीद ने उससे ये बातें छुपाई क्यों हैं? इसके अतिरिक्त उसकी झेंप से उसे और भी कई सन्देह उत्पन्न हो गए। वहीद को खाने पर बुलाने से अशरत का उद्देश्य भी यही था कि वहीद की ओर से उसके मन में कुछ संदेह पैदा कर दे और फिर उसी को आधार बना कर उस पर झूठ का एक ऐसा भवन खड़ा करे कि प्रवीण उससे घृणा करने लगे।

जब वहीद से अशरत और शमीम की बात का कोई उत्तर बन न पड़ा तो अशरत ने मुस्कराते हुए कहा—

'मेरा ख्याल है आपको पुरानी बातें भूल जानी चाहिये। अब आप इस घर में किसी अन्य संम्बन्ध से आए हैं और मेरा कर्तव्य यह है कि आपका सम्मान करूं। यह ख्याल मत कीजिये कि संभवतः मैं इस सम्बन्ध में कोई विघ्न उपस्थित करूंगी बल्कि कोशिश करूंगी कि यह काम कुशलता पूर्ण हो। मुझे प्रवीण की भावना का पूरा-पूरा ख्याल है। मैं उसके सम्बन्ध का विरोध करके उसे नाराज करना नहीं चाहती। यदि वह आपको अपना जीवन साथी चुन चुकी है तो निश्चय ही उसने आप में कोई विशेषता देखी होगी। इसलिये मैं कह सकती हूं कि उसका चुनाव बिल्कुल सही है और आप इसके लिये उचित पति और वह आप के लिये योग्य पत्नी सिद्ध हो सकते है। खुदा करे यह सम्बन्ध शुभ हो। आपको यहाँ बुलाने से मेरा उद्देश्य केवल यह था कि यदि आपके मन में मेरी ओर से कोई गलत फहमी हो उसे दूर कर दूं और आपको यह विश्वास दिला दूं कि मैं पुरानी बातों को बिल्कुल भूल चुकी हूं और अब सच्चे हृदय से इस सम्बन्ध को पूर्ण करने का यत्न करूंगी।'

वहीद पसीने में नहा रहा था कि प्रवीण ने किस आफत में डाल

दिया है। अशरत और शमीम को देखते ही उसे किताबों की दूकान वाली घटना तो स्मरण हो आई किन्तु वह यह न समझ सका कि यह अशरत उसके मित्र नाज़िम की भी पत्नी रह चुकी है। क्योंकि उसे इस का कोई ज्ञान न था और न नाज़िम ने उससे यह चर्चा की थी। जब अशरत अपनी बात समाप्त कर चुकी तो वहीद ने उसका उत्तर देना चाहा किन्तु अशरत ने यह कहते हुए उसे कुछ कहने से रोक दिया---

'मेरे ख्याल में पुरानी बातों की चर्चा व्यर्थ है। मैंने तो यह बता दिया है कि मेरा मन आप की ओर से साफ है। अब मैं आपको इस घर का दामाद समझती हूँ किन्तु हो सकता है कि इस बातचीत के क्रम को आगे बढ़ाने से आपके हृदय में कोई कड़वाहट उत्पन्न हो और उसका प्रभाव इस सम्बन्ध पर पड़े।'

शमीम ने कहा—

'हाँ, हाँ, अब इस कहानी को समाप्त कर देना चाहिये। कोई और बात कीजिये।'

प्रवीण इस पहेली को समझने का यत्न कर रही थी किन्तु उसके पल्ले कुछ न पड़ा और यह ख्याल उसके लिये कलेश का कारण बना हुआ था कि वहीद ने उससे यह मामला छुपाया, क्योंकि वह पहिले से अशरत को जानता है। अस्तु अशरत का षड़यंत्र सफल रहा और प्रवीण के मन में वहीद के बारे में कुछ सन्देह हो गया। उसने इस बातचीत में कोई भाग न लिया। हाँ, वह ध्यान से उसे सुनती अवश्य रही इसके बाद इधर-उधर की बातें आरम्भ हो गईं। वहीद का मन खाने को नहीं चाह रहा था। उसने दो चार ग्रास जहर मार किये और खाने से हाथ खेंच कर बैठ गया।

अशरत ने कहा—

'क्यों साहब! क्या बात है? खाना छोड़ बैठे आप? मालूम होता है आपके मन में वह पुरानी शत्रुता अभी शेष है। मेरे विचार से इतनी

सफाई देने के पश्चात् तो आपको मुझ से शिकायत नहीं होनी चाहिये।'

वहीद ने क्षमा माँगते हुए कहा—

'नहीं, यह बात नहीं। बात वास्तव में यह है कि मैं कुछ दिनों से पेट का रोगी हूँ किन्तु मैंने आपके निमंत्रण को टालना उचित न समझा।'

वहीद अत्यन्त चतुर और अनुभवी व्यक्ति था। उसने संसार के काफी उतार-चढ़ाव देखे थे किन्तु वह इस क्षेत्र में अशरत से मात खा गया और यह न सोच सका कि उसने स्पष्ट जो अपनी सफाई की बातें की हैं वे ही आगे चलकर फसाद फैलाने का कारण हो सकती हैं। यदि उसे यह मालूम हो जाता तो वह यहीं अशरत की पोल खोल देता और प्रवीण को होशियार कर देता कि उसे किसी प्रकार के सन्देह में नहीं पड़ना चाहिये किन्तु उसने यही ख्याल किया कि अशरत वास्तव में क्षमा माँग रही है और अपने उस दुर्व्यवहार को धो रही है जो उसने किताबों की दूकान में उससे और नाजिम से की थी। उसकी यह नरमी इस प्रकार स्वाभाविक भी थी क्योंकि वह अब इस घर का दामाद बनने जा रहा था। अन्त में उसने स्वयं भी यही उचित समझा कि भविष्य में बीती बातों को दुहरा कर और कटुता उत्पन्न न की जाए। वह प्रसन्न था कि अशरत ने अपने बीते रंग ढंग पर खेद प्रकट करके स्थिति को संभाल लिया और अब वह इस सम्बन्ध को पूर्ण करने का यत्न करेगी। किन्तु उसकी तीव्र बुद्धि यह समझने से असफल रही कि इस क्षमा के पर्दे में उसने एक ऐसी कटुता की नींव रखी है जो आगे चलकर इस सम्बन्ध में एक बहुत बड़ा विघ्न बन सकती है। इसके विपरीत वह मन ही मन प्रसन्न हो रहा था कि अशरत ने अपनी गलती मान कर अपने हृदय की उदारता का प्रमाण दिया है। वह अशरत और शमीम को देखकर कुछ निराश सा हुआ था किन्तु जब अशरत ने सफाई की बातें करनी आरम्भ कर दीं तो उसे विश्वास हो गया और उसे इस बारे में कोई सन्देह न रहा कि उसका विवाह प्रवीण से होकर रहेगा।

खाने के पश्चात् कुछ मिनट तक इधर उधर की बातें होती रहीं किन्तु प्रवीण ने इन बातों में कोई भाग न लिया और वह यही सोचती रही कि आखिर यह पहेली क्या है ? अशरत उसे मौन देखकर समझ रही थी कि उसका तीर निशाने पर बैठा है और अब उसे मार्ग-भ्रष्ट करने में कोई कठिनाई सामने न आएगी ।

अन्त में यह गोष्ठी समाप्त हुई और वहीद आज्ञा लेकर अपनी कार में बैठ अपने घर की ओर चल दिया ।

१०

वहीद के जाने के बाद प्रवीरा चुपी साधे अपनी कुर्सी पर बैठी रही। अशरत अपनी इस विजय पर मन ही मन प्रसन्न हो रही थी। शमीम ने अशरत को आँख मारते हुए कहा—

'अशरत ! मेरा ख्याल है अब पुरानी बातों को भूल जाना चाहिये। वहीद का अपराध अक्षम्य है और वह स्वयं भी इसे समझता है अन्यथा वह अवश्य कुछ कहता। किन्तु विचारणीय बात यह है कि इस घर में उसका स्थान अब दामाद का है और तुम्हारा यह कर्तव्य है कि उसकी सम्पूर्ण न्यूनताओं और निर्बलताओं को आँखों से ओझल कर दो। सच्ची बात यह है कि मैं तुम्हें मान गया हूँ। तुमने एक ऐसे उच्च चरित्र का प्रमाण दिया है जिसकी किसी स्त्री से आशा नहीं हो सकती। यदि वहीद के अपराध सामने रखे जाएं तो वे कदापि भुलाने योग्य नहीं हैं और विशेषतया एक स्त्री तो उन्हें कभी क्षमा नहीं कर सकती। किन्तु शाबाश है तुम्हें। तुमने इन्हें दृष्टि से ओझल कर दिया और स्पष्ट कह दिया कि मैं बदला लेने के विचार से इस सम्बन्ध में कोई रुकावट नहीं डालूँगी बल्कि अपनी ओर से पूरा-पूरा प्रयत्न करूंगी कि यह काम पूर्ण हो।'

अशरत ने बनावटी गम्भीरता से काम लेते हुए कहा—

'शमीम भाई। यदि पुरानी बातों को स्मरण रखा जाए तो उनसे कुछ लाभ नहीं। बल्कि परिस्थितियां और अधिक खराब होगीं। प्रवीरा अब मेरी बेटी है। मैं इसके मार्ग में काँटे बोना नहीं चाहती। यदि मैं वहीद

से किसी प्रकार का बैर रखूँ तो कुछ आश्चर्य नहीं कि वह इसका बदला आगे चलकर प्रवीण से ले। और तुम यह जानते ही हो कि वहीद बड़ा अवसरवादी आदमी है। वह बात दिल में रखता है और अवसर मिलने पर बदला लेने से नहीं चूकता। मैं प्रवीण के लिये अपमान सहन करने के लिये तैयार हूँ किन्तु यह सहन नहीं कर सकती कि उसे किसी प्रकार का कष्ट पहुंचे।'

यह कहते हुए अशरत ने टसवे बहाने आरम्भ किये। प्रवीण चकित थी कि या अल्लाह यह क्या बात है? वह शमीम के सामने उससे कुछ पूछना नहीं चाहती थी और इस प्रतीक्षा में थी कि वह उठकर जाए तो अशरत से सारा मामला मालूम करे। हाँ, अशरत और शमीम की बातचीत से उसे यह विश्वास अवश्य हो गया कि वहीद और अशरत में कोई तीव्र शत्रुता थी किन्तु अशरत ने केवल उसका ख्याल करते हुए अपनी शत्रुता समाप्त कर दी और वहीद से सन्धि कर ली।

कुछ देर बाद शमीम भी उठ खड़ा हुआ और बोला—

'अब मुझे आज्ञा दीजिये।'

अशरत ने मुस्कराते हुए कहा—

'बहुत अच्छा, खुदा हाफ़िज़।'

जब शमीम चला गया तो प्रवीण ने कहा—

'यह मामला क्या है? मेरी समझ में तो कोई बात नहीं आई।'

अशरत ने कहा—

'छोड़ो इन बातों को। कोई मामला नहीं। और यदि कोई था भी तो वह समाप्त हो गया है।'

प्रवीण ने चिरौरी करते हुए कहा—

'चची जान! मैं कुछ विचित्र सी उलझन में हूँ। यदि आप नहीं बताएंगी तो मुझे सदा दुःख होता रहेगा और यह ख्याल मुझे सदा व्याकुल करता रहेगा कि न जाने क्या बात थी?

अशरत कुछ देर तक सामने दीवार की ओर देखती हुई कुछ सोचती

रही और फिर बोली—

'प्रवीण ! ऐसी कोई बात नहीं । मैं तुम्हें प्रसन्न देखना चाहती हूं । और कोई ऐसी बात नहीं करना चाहती जिसका प्रभाव तुम्हारे भविष्य पर पड़े ।'

'खुदा के लिये मेरे सब्र की और अधिक परीक्षा न लीजिये और स रा मामला मुझे बताइये ।'

'प्रवीण ! मैं प्रण कर चुकी हूँ कि वहीद से तुम्हारा विवाह शीघ्र से शीघ्र करवा दूं । इसलिए मैं कोई ऐसी बात करना नहीं चाहती जिससे किसी प्रकार की कटुता होने की आशंका हो । उचित यही है कि तुम मुझसे यह बात न पूछो ।'

'मैं फिर निवेदन करती हूं कि आप सारी बात मुझे सुना दीजिये । यदि आप नहीं सुनाएंगी तो मुझ पर अत्याचार करेंगी । सम्भव है कि मुझे आपकी बात सुनने के बाद फिर इस सम्बन्ध पर विचार करना पड़े ।'

'इसीलिए तो मैं तुम्हें वास्तविक बात से परिचित नहीं कराना चाहती ?'

प्रवीण ने कुछ बिगड़ते हुए कहा—

'बहुत अच्छा । यदि आप नहीं बताती तो न बताएं । मैं आपको विवश नहीं करती ।'

'बस बिगड़ गईं इतनी सी बात पर ? किन्तु तुम प्रण करो कि अपने निर्णय पर अटल रहोगी ।'

'मैं यह प्रण नहीं करती ।'

'तो इसका अर्थ यह हुआ कि मैं यदि कुछ कहूँगी तो इस सम्बन्ध में रुकावट डालूँगी ।'

'किन्तु इसके साथ ही आपको मेरे लाभ का ध्यान भी करना चाहिये । यह तो बात अच्छी नहीं कि आप एक पर पुरुष को प्रसन्न करने के लिए मेरे भविष्य को नष्ट कर दें ।'

'यह तुमने कैसे अनुमान कर लिया है कि वास्तविक बात न बताने से तुम्हारे भविष्य पर बुरा प्रभाव पड़ेगा ?'

'आपकी और शमीम की बातचीत में मुझे यह सन्देह हुआ है ।'

'प्रवीण ! तुम मुझसे न ही पूछो तो अच्छा है । यह बड़ी भयानक और खेदपूर्ण कहानी है । यदि तुम सुनोगी तो मुझे भय है कि कहीं तुम अपने मंगेतर के विरुद्ध न हो जाओ ।'

'बहुत अच्छा ! न सुनाइए । आपकी इच्छा है ।

'तो यह तुम नाराज़ हो कर कह रही हो ?'

'हाँ, नाराज़ तो हूँ और होना भी चाहिए । क्योंकि आप एक बात मुझ से छुपा रही हो ।'

'बहुत अच्छा । यदि तुम चाहती हो तो सुन लो । ख्याल तो यही था कि तुम न सुनतीं ।'

'प्रवीण ने उसकी इस बात का कोई उत्तर न दिया । हाँ, वह उसे कुछ इस प्रकार से देख रही थी जैसे कुछ सुनने की प्रतीक्षा में हो ।'

'बात वास्तव में यह है कि वहीद साहब किसी समय में मुझ से विवाह करना चाहते थे ।'

अशरत इतना कह कर चुप हो गई । यह सुनकर प्रवीण के आश्चर्य में और वृद्धि हुई और बोली—

'क्या उस समय आपका सम्बन्ध तै नहीं हो चुका था ?'

'हाँ, तै हो चुका था और स्वयं वहीद भी यह जानते थे ।'

'जब उन्हें यह मालूम था कि आप उसके मित्र की मंगेतर हैं तो फिर उन्होंने ऐसा क्यों किया ?'

'मेरा ख्याल है इसका उत्तर वहीद ही दे सकते हैं ।'

'तो क्या आप भी उनसे विवाह करने को तैयार थीं ?'

'हाँ ।'

यह सुनकर प्रवीण सकते में रह गई और बोली—

'यह आपने क्यों किया ?'

'यह मेरी निर्बलता थी किन्तु मैं अपनी निर्बलता को भी अब छुपाना नहीं चाहती। जब तुम यह सुनोगी कि मैं उनसे विवाह करने के लिए तैयार क्यों हुई तो शायद तुम मुझे निरपराध समझोगी।'

'हाँ, तो आप इसके लिए तैयार क्यों हुईं ?'

'वहीद का आना-जाना हमारे यहां था। नाजिम को मैंने नहीं देखा था और न यह जानती थी कि वे किस प्रकार के आदमी हैं। हाँ, वहीद ने उनके बारे में मुझे जो बातें बताईं उन्हें सुनकर मैं नाजिम से घृणा करने लगी।'

'क्या कहा था वहीद ने नाजिम भाई के बारे में ?

'उसने कहा था कि वे शराब पीते हैं। वेश्या के यहां जाते हैं और दुराचारी व्यक्ति हैं।'

'फिर क्या हुआ ?'

'जब मैं उनसे घृणा करने लगी तो उन्होंने मुझ पर डोरे डालने आरम्भ कर दिये। मैं सीधी सादी लड़की थी। इसके दाव में आ गई किन्तु तुम जानती हो तुम्हारे अब्बा की तरह मेरे अब्बा भी एक पुरातन पंथी व्यक्ति हैं। उन्होंने निश्चित हो चुके सम्बन्ध को तोड़ना उचित न समझा और मेरी इच्छा के विरुद्ध नाजिम से मेरा विवाह कर दिया। इस अनिच्छित विवाह का जो परिणाम निकला वह तुम्हें मालूम है।'

'घर में जो झगड़ा रहता था क्या उसका वास्तविक कारण यही था ?'

'हाँ, बिल्कुल यही था। बल्कि मैं यह कहूँगी कि तुम्हारे घर में मैं जो झगड़ा भी खड़ा करती थी वह वहीद के कहने से करती थी। उसने मुझसे कह रखा था कि पति की आज्ञा न मानो। और श्वसुर और ननद का अपमान करो। हालांकि मैं स्वयं इन बातों को अच्छा नहीं समझती। आखिर तुम्हें इस घर में आए हुए इतने दिन हो गए हैं। मैंने तुम से कोई झगड़ा किया है ? या तुम्हारे रहते मैंने अपने पति की आज्ञा मानने से इनकार किया है ? यदि मैं अपने बूढ़े पति की इतनी

आज्ञाकारिणी हूं तो कोई कारण नहीं था कि एक नवयुवक, सुन्दर और पढ़े लिखे पति की आज्ञा न मानती। मैंने तुम्हारे घर में जो कुछ भी किया वहीद के कहने से किया।'

यह बात सुनकर प्रवीण चकित रह गई। उसे वहीद के बारे में यही ख्याल था कि वह एक सीधा और सच्चा आदमी है किन्तु आज यह सुनकर उसे आश्चर्य हुआ कि वह बड़ा षड़यंत्रकारी है और मैत्री के पर्दे में शत्रुता करने का अभ्यस्त है। कुछ देर तक चुप रहने के बाद प्रवीण ने कहा—

'किन्तु जब आप लड़-झगड़ कर हमारे घर से चली गई तो क्या आपका फिर वहीद से मेल-जोल हो गया ?'

'तुम्हारे घर से जाने का उद्देश्य तो यही था किन्तु वहीद ने मुझे स्पष्ट कह दिया कि तुम से विवाह उसी रूप में हो सकता है कि नाज़िम तुम्हें तलाक दे दे। किन्तु मैं एक पतियुक्ता स्त्री से विवाह करना अपना अपमान समझता हूं।'

'ऐसा उसने क्यों किया ?'

'उसका कारण यह था जैसा कि मुझे बाद में मालूम हुआ कि वह एक लड़की से जिसका नाम ताहिरा था प्रेम करने लगा था।'

'किन्तु यह लड़की तो भाई साहब की मंगेतर थी ?'

'वह तो केवल मंगेतर थी और मैं तुम्हारे भाई की विवाहिता थी। यदि वह तुम्हारे भाई की विवाहिता के बारे में यहाँ तक कर सकता था तो मंगेतर के बारे में वही मार्ग अपनाने में उसे क्यों इनकार हो सकता था ?

'किन्तु ताहिरा तो भाईजान पर प्राण देती थी ?'

'मेरा भी यही ख्याल है। यही कारण है कि वह इस उद्देश्य में सफल न हो सका। इसके बाद उसने उद्देश्य प्राप्ति के लिए एक और हीला ढूंढा और वह यह कि एक बनावटी पत्र तैयार किया और कहीं से ताहिरा का चित्र प्राप्त किया और ये दोनों चीजें लेकर नाज़िम के पास

पहुंचा और उससे कहने लगा कि इस लड़की का सम्बन्ध मुझ से किया जा रहा है।'

'ऐसा उसने क्यों किया ?'

'वह यह जानता था कि नाज़िम ताहिरा के प्रेम में बुरी तरह फंसा है। इसके अतिरिक्त उसे यह भी मालूम था कि वह एक सच्चा मित्र है। उसने ऐसा इसलिये किया कि वह एक मित्र के मार्ग में रुकावट नहीं बनेगा किन्तु अपनी प्रेमिका को किसी अन्य पुरुष के निकाह में जाता देखकर भी सहन नहीं कर सकेगा। परिणाम यही होगा कि या तो यहाँ से चला जाएगा अथवा आत्म हत्या कर लेगा। सो वह अपने उद्देश्य में सफल हुआ और नाज़िम लाहौर छोड़ कर कहीं चला गया।'

'किन्तु वहीद तो कहता है कि वह बनावटी पत्र आपकी प्रेरणा से उसे भेजा गया ?'

'आश्चर्य है कि एक ओर तो वह तुम से यह कहता रहा कि मैं अशरत को नहीं जानता और दूसरी ओर बनावटी पत्र का पाप मुझ पर थोंपता रहा जैसे वह मुझे जानता है। मालूम नहीं इसमें कौन सी बात सच्ची है ?'

'खैर, यह तो मुझे मालूम हो गया है कि वह आपको जानता है। उसने मुझ से झूठ बोला। न जाने क्यों ? किन्तु यह बात मेरी समझ में नहीं आई कि बनावटी पत्र का दोष उसने आप पर क्यों लगाया ?'

'वास्तव में उसे यह भय था कि कहीं उसके षड्यंत्रों की मैं तुम से चर्चा न कर दूं। चुनांचे उसने विगत शत्रुता की चर्चा करके पहिले से उसकी नाका बन्दी कर दी।'

'अच्छा, यदि यह मान भी लिया जाए कि भाईजान के लाहौर से निकल जाने के षड्यंत्र में उसका हाथ था तो फिर वह उसकी खोज में मारा-मारा क्यों फिरा ?'

'यह तुम कैसे कह सकती हो कि वह नाज़िम की खोज में फिरता रहा ? यह क्यों न कहा जाए कि ताहिरा की खोज में फिरता रहा ?'

प्रवीण कुछ देर तक मौन रही और यह सोचती रही कि वास्तव में यह बात भी तो संभव हो सकती है ? अन्त में उसने कहा—

'मैं स्वयं उसके साथ भाईजान की खोज में दिल्ली गई। हम दोनों एक ही स्थान पर ठहरे। यदि वह कामुक प्रकृति का व्यक्ति होता तो कोई न कोई अनुचित व्यवहार अवश्य करता।'

'यह तुम सही कहती हो। किन्तु यदि वह ऐसा कोई दुर्व्यवहार करता तो तुम उसकी ओर आकृष्ट कैसे होतीं ? मैं उसकी दूरदर्शिता की प्रशंसा करती हूँ। उसने मुझ पर भी आरम्भ में इसी प्रकार की शालीनता का सिक्का जमाया था।'

'सम्भव है ऐसा ही हो ? किन्तु आपकी बातचीत से यह प्रतीत होता है कि वहीद से आप के खासे गहरे सम्बन्ध रहे हैं और आप दोनों मिलते रहे हैं।'

'हाँ, बिल्कुल यही बात है।'

'किन्तु आज वहीद के सामने तो आप ने और शमीम ने केवल उन दो एक मुलाकातों की चर्चा की जो आपकी उनसे सम्भवत: किताबों की दूकान पर हुई।'

प्रवीण के इस पुलिवाद से अशरत कुछ सटपटा सी गई किन्तु शीघ्र ही अपने होश ठीक करती हुई बोली—

'हाँ, वे हमारी अन्तिम भेंटें थीं। फिर मेरी उनसे कोई भेंट नहीं हो सकी। मेरा कहने का अर्थ यह था कि अन्तिम बार मैं उनसे दो एक बार किताबों की दूकान पर मिली।'

प्रवीण ने इस बात का कोई उत्तर नहीं दिया। अशरत ने उसे मौन देखा तो मुस्कराती हुई बोली—

'क्या तुम्हारा विवाद समाप्त हो गया ?'

प्रवीण विवाद का नाम सुन कर चौंकी और बोली—

'नहीं, चचीजान ! यह विवाद तो नहीं था। विवाद तो उस व्यक्ति से किया जाता है जो झूठ बोले। खुदा न करे मैं आपको झूठी तो नहीं

समझती । यह तो यों ही एक बात चल निकली और मुझे अपनी तसल्ली के लिये आप से कुछ बातें पूछनी पड़ीं ।'

अशरत ने हंसते हुए कहा—

'नहीं, मैंने तो वैसे परिहास में विवाद कह दिया अन्यथा मुझे तुम जैसी आज्ञाकारिणी लड़की से यह आशा क्यों होने लगी कि तुम मुझे झूठी समझोगी ? अब मैं तुमसे कुछ बातें पूछती हूँ और वे भी तुम्हें विश्वास दिलाने के लिये कि जो कुछ मैंने कहा है सत्य कहा है ।'

'प्रथम तो मुझे आपके कथन पर विश्वास है । हाँ, यदि फिर भी आप कुछ पूछना चाहें तो पूछ लें ।'

'अच्छा, यह बताओ, क्या वहीद ने तुमसे कहा था कि मैं अशरत को नहीं जानता ?'

'हाँ, कहा था ।'

'वहीद से मेरी जो बातचीत हुई उससे तुमने क्या समझा ?'

'यही कि वे आपको जानते हैं ।'

'अर्थात् उसने तुम से झूठ बोला ।'

'हाँ, मेरा यही ख्याल है ।'

'क्या तुम्हारा ख्याल है कि जब वहीद नाज़िम के पास ताहिरा के सम्बन्ध का बनावटी पत्र और चित्र लेकर पहुँचा था तो उसे यह ज्ञात न था कि वह नाज़िम की मंगेतर है ?'

'वे तो यही कहते हैं कि मुझे मालूम न था ।'

'क्या कभी कोई ऐसी घटना हुई है कि एक व्यक्ति किसी लड़की का चित्र लेकर उस व्यक्ति के पास पहुँच जाए जो उसका मंगेतर हो ? कहानियों में तो शायद यह बात संभव हो किन्तु वास्तविक जीवन में तो सम्भव नहीं हो सकती ।'

'मैं आपकी बात से सहमत हूँ ।'

'बस मैं और कुछ नहीं पूछना चाहती ।'

इसके बाद दोनों कुछ देर तक मौन रहीं फिर सहसा अशरत ने

कहा—

'प्रवीरण ! जो कुछ हो चुका है मैं उसे भूल चुकी हूँ। और चाहती हूँ कि तुम भी भूल जाओ । मैं ये बातें तुम्हें बताना नहीं चाहती थी किन्तु तुम्हारे बल देने पर मुझे यह सब कुछ कहना पड़ा। वहीद ने यदि बुराई की है तो मुझ से की है। तुमसे कोई बुराई नहीं की और मेरा ख्याल है कि न शायद करेगा। इसलिये उचित यह है कि ये समस्त बातें भूल जाओ। केवल यही समझ लो कि किसी से एक कहानी सुनी थी। मेरा तात्पर्य यह है कि मैं तुम्हारे आने वाले जीवन को प्रफुल्लता से पूर्ण देखना चाहती हूं।'

प्रवीरण ने आश्चर्य से अशरत की ओर ताकते हुए कहा—

'मैं आपकी बात नहीं समझ सकी।'

'मेरा मतलब यह है कि इन बातों का प्रभाव इस सम्बन्ध पर नहीं पड़ना चाहिये।'

यह सुनकर प्रवीरण क्रुद्ध हो गई और बोली—

'क्या आप यह चाहती हैं कि मैं अपने भाई के घातक से विवाह कर लूं ! उस व्यक्ति की पत्नी बन जाऊं जिसने मेरी भावज को पथ भ्रष्ट करके हमारे घर को वीरान कर दिया ? अपने आपको उस व्यक्ति के हवाले कर दूं जो स्त्रियों की भावनाओं से खेलता है और वफा नहीं करता ?'

अशरत ने बनावटी गम्भीरता से काम लेते हुए कहा—

'देखो, तुम अब अपने वचन से फिर रही हो। मैंने तुम से यह पहिले वचन ले लिया था कि तुम मेरी बातों से प्रभावित होकर कोई ऐसा काम न करोगी जिसका इस सम्बन्ध पर बुरा प्रभाव पड़े।'

प्रवीरण ने क्रोध से कहा—

'मैंने कोई ऐसा वचन नहीं दिया।'

अशरत ने उसकी मिन्नत करते हुए कहा—

'देखो प्रवीरण ! यह अच्छी बात नहीं है। फर्ज करो कि मैंने ये

बातें मनघड़न्त की हैं। इन में कोई सच्चाई नहीं।'

यह सुन कर प्रवीण को और विश्वास हो गया कि अशरत ने जो कुछ कहा है सही है। वह बोली—

'मुझमें कम-से-कम इतनी बुद्धि अवश्य है कि सत्य और झूठ में अन्तर कर सकूं।'

'एक पक्ष की बात सुनकर कोई निर्णय कर लेना न्याय के विरुद्ध है। अभियुक्त को भी सफाई का अवसर मिलना चाहिये। उचित यह है कि तुम वहीद से मिलकर इस बारे में बातचीत कर लो। सम्भव है वह तुम्हारी तसल्ली कर सके।'

अशरत कुछ इस प्रकार बातचीत कर रही थी कि प्रवीण को उसकी कही हुई बातों पर और अधिक विश्वास हो रहा था। वह यह जानती थी कि अनेक बार ऐसा भी होता है कि किसी गलत बात को गलत कहना ही उसके सत्य होने का प्रमाण हो जाता है। उसने बातों बातों में अपने आपको झूठी भी कह दिया किन्तु प्रवीण का विश्वास और बढ़ गया और वह यही समझने लगी कि अशरत ने जो कुछ कहा है वह बिल्कुल सत्य है। जब उसने प्रवीण को वहीद से दोबारा मिलकर बात-चीत करने की सम्मति दी तो वह मारे क्रोध के लाल पीली होकर बोली—

'मैं ऐसे व्यक्ति से मिलना नहीं चाहती।'

यह सुनकर अशरत बहुत प्रसन्न हुई कि उसका षड्यंत्र सफल रहा किन्तु उसने बिगड़ने के स्वर में कहा—

'प्रवीण ! मैं तुम्हारे इस व्यवहार को कदापि पसन्द नहीं करती।'

अशरत को क्रुद्ध देखकर प्रवीण का क्रोध धीमा हो गया और वह उसकी खुशामद करती हुई बोली—

'चचीजान ! आप मेरी माँ के स्थान पर हैं। क्या आप यह उचित समझती हैं कि अपनी बेटी को नरक की आग में झोंक दें ? यदि आप का निश्चय यही है तो मैं इस बलिदान के लिये भी तैयार हूँ। किन्तु

ज़रा सोच लीजिये।'

अशरत चुप हो गई और काफी देर तक कुछ सोचती रही। प्रवीण ने उसे चुप देखकर कहा—

'आपने कुछ उत्तर नहीं दिया ?'

अशरत ने एक ठण्डी साँस लेते हुए कहा—

'प्रवीण ! तुमने एक ऐसी बात कह दी है जिसका मेरे पास कोई उत्तर नहीं। मैं अपनी बेटी के लिये निश्चय ही कोई नरक खरीदना नहीं चाहती किन्तु मैं इसके लिये भी तैयार थी। केवल यह ख्याल करते हुए कि कहीं तुम्हारी भावना को ठेस न पहुंचे।'

'मेरी भावना और अनुभूति की माँग अब यही है कि मैं वहीद की शकल तक न देखूँ। यदि आप मुझे इसके लिये विवश करेंगी तो निश्चय ही मेरी भावना को ठेस पहुँचेगी।'

'यदि यह बात है तो फिर मैं तुम्हें कदापि विवश नहीं करती किन्तु यह स्मरण रखो कि मैंने केवल तुम्हारे लिये वहीद से सफाई कर ली थी और उसके वे समस्त अपराध क्षमा कर दिये थे जो इससे पूर्व मेरे निकट अक्षम्य थे। तुम्हारे लिये मैं यहाँ तक बलिदान करने को तैयार थी किन्तु अब जब तुम स्वयं ही इस सम्बन्ध के विरुद्ध हो और मेरे कहने सुनने का इसमें कोई स्थान नहीं तो तुम्हें अपनी मर्जी करने का पूरा-पूरा अधिकार है। मैं तुम पर कोई बल प्रयोग नहीं करना चाहती।'

अशरत यह कहती हुई उठी और कमरे से बाहिर निकल गई।

११

अशरत ने प्रवीण को कुछ इस सफाई से शीशे में उतारा कि उसकी क़ला की प्रशंसा करनी पड़ती है। एक आध घण्टे के अन्दर-अन्दर प्रवीण के हृदय में प्यार के स्थान पर घृणा और बदले के भाव जाग्रत हो उठे। पहिले वह वहीद से प्यार करती थी। अब उसे उससे घृणा थी और उसका नाम सुनकर उसके मन को चोट पहुँचती थी। यह सब कुछ सहसा क्यों हो गया। प्रवीण का प्यार घृणा में क्यों बदल गया ? क्या प्रवीण के प्यार में कुछ कमी थी ? यदि वह सच्चे हृदय से वहीद को चाहती थी तो अशरत के कहने सुनने में आकर उससे घृणा क्यों करने लगी ?

ये ऐसे प्रश्न हैं जिनका उत्तर देना अत्यावश्यक है। बात वास्तव में यह है कि प्रवीण को वहीद से हार्दिक प्रेम था किन्तु यह प्यार सतत आँख मिचौनी अथवा उन धैर्य तोड़ परीक्षाओं का परिणाम न था जिन में से प्राय: आसक्ति को साधारणतया पार होना पड़ता है। अपितु उसकी नींव उस सद्व्यवहार और सहानुभूति पर थी जिसे वहीद ने नाज़िम की मृत्यु पर प्रकट किया था और प्रवीण उससे प्रभावित हुई थी। यदि उसका प्यार कुछ इस प्रकार का होता जिसका उद्देश्य उसकी किसी कामुक भावना को पूर्ण करना होता तो शायद वह वहीद को अति दुश्चरित्र और निर्मम पाकर भी उससे प्यार करती रहती और अशरत की बातों पर कान न धरती। किन्तु यह प्रेम केवल वहीद की सहानुभूति और सद्व्यवहार का परिणाम था। जब प्रवीण को यह मालूम

हुआ कि उसने वहीद को समझने में भूल की है और उसके विपरीत वह षड्यंत्रकारी और मित्रघाती व्यक्ति है तो उसके प्रेम का घृणा में बदल जाना निश्चित बात थी। इसके अतिरिक्त इस परिवर्तन का एक अन्य कारण अशरत की मक्कारी और प्रवीण की सादगी है। अशरत ने बातचीत ऐसे ढंग से की कि एक मनोवैज्ञानिक व्यक्ति भी शायद उससे प्रभावित हुए बिना न रह सकता और उसकी बातों का कायल हो जाता। प्रवीण बेचारी की तो बिसात ही न थी। वह तो एक सीधी सादी लड़की थी और हर व्यक्ति के हृदय को अपने हृदय से मापने की अभ्यस्त थी। वह संसार के हर व्यक्ति को अपने जैसा ख्याल करती थी और फिर अशरत के चरित्र और व्यवहार से तो वह अत्यन्त प्रभावित थी। उसकी बातों से क्यों न प्रभावित होती?

अब यहाँ यह शंका पैदा होती है कि यदि प्रवीण अपनी सादगी और सद्व्यवहार के कारण हर व्यक्ति को अपने जैसा ही ख्याल करती थी और उसने अशरत को एक देवी मानकर अपने स्वभाव को पूर्ण किया तो उसने वहीद को क्यों झूठा और मक्कार समझ लिया? बात वास्तव में यह है कि उसकी समस्त भूलों की नींव एक छोटे से सन्देह पर स्थिर थी और वह यह कि वहीद उससे कह चुका था कि मैं अशरत को नहीं जानता किन्तु अशरत ने उसकी उपस्थिति में ही बीती मुलाकातों की चर्चा करके उसे झूठा सिद्ध कर दिया। यह कारण बहुत साधारण था किन्तु विनाश के लिये एक चिंगारी ही की आवश्यकता होती है।

अशरत के जाने के बाद प्रवीण अपने कमरे में बैठी इस मामले पर काफी देर तक विचार करती रही। उसने वहीद की सफाई में कई प्रमाण दिये किन्तु उनमें से एक भी सार्थक सिद्ध न हुआ और अन्त में इस परिणाम पर पहुंची कि अशरत ने जो कुछ कहा है वह सही है। वहीद वास्तव में मित्रता के पीछे नाज़िम से शत्रुता करता रहा है। वह

नाजिम की खोज में नहीं ताहिरा की खोज में दिल्ली गया। उसके सद्-व्यवहार और सहानुभूति में निरर्थकता थी। उसने अशरत और ताहिरा के समान उसकी भावनाओं से खेलने का यत्न किया है। तात्पर्य यह है कि वही वहीद जो कुछ घण्टे पूर्व प्रवीण की दृष्टि में एक देवता था अब उसके निकट संसार भर की बुराइयों का केन्द्र था। चाहिये तो यह था कि वह वहीद से दोबारा मिलकर उससे इन तमाम बातों के बारे में सन्देह निवृत्त करती और सम्भवतः वह करती भी किन्तु अशरत ने वहीद से मिलने और बातचीत करने की सम्मति देकर उसकी आशा भी समाप्त कर दी। प्रवीण ने सोचा कि यदि अशरत झूठी होती तो वह उसे यह सम्मति कदापि न देती अपितु उसे वहीद से मिलने से रोकती। हालाँकि यह सम्मति देने से अशरत का उद्देश्य यही था कि वह वहीद से न मिले किन्तु प्रवीण उसके इस हीले को समझ न सकी और उसने मन ही मन उसे सच्चा और वहीद को झूठा मान लिया।

प्रवीण रात गए तक जागती रही और इस बात पर पश्चात्ताप करती रही कि उसने अपने भाई के शत्रु के साथ मेल मिलाप बढ़ाकर मरने वाली आत्मा को कष्ट पहुंचाया है। यों ही कुर्सी पर बैठे-बैठे रात का एक बज गया और वह अपने पलंग पर लेट गई। प्रातः सात बजे के लगभग उसकी आँख खुली। एक नौकरानी उसके सामने खड़ी थी। प्रवीण ने उससे कहा—

'क्यों ? क्या बात है ?'

नौकरानी ने कहा—

'कोई वहीद साहब आपको टेलीफोन पर बुला रहे हैं।'

वहीद का नाम सुनते ही प्रवीण का चहरा मारे क्रोध के लाल हो गया और बोली—

'जाकर उनसे कह दो, कि वह आप से बात नहीं कर सकती।'

नौकरानी आश्चर्य में पड़ गई। वह कुछ देर तक मौन खड़ी रही। प्रवीण ने पुनः उससे कहा—

'मैंने कहा है जाकर उनसे कहदो। उनसे बात करने के लिये मेरे पास समय नहीं है।'

नौकरानी ने कहा—

'बहुत अच्छा।'

यह कहकर वह कमरे से बाहिर निकल गई और टेलीफोन पर उसने वहीद से कह दिया कि वह आप से बात करने से इनकारी हैं। *कहती हैं आपसे बात करने के लिये मेरे पास समय नहीं है।'*

प्रवीण काफी देर तक अपने विचारों में डूबी रही, इतने में नसरत उसके कमरे में प्रविष्ट हुई। वह सोच विचार में रोती डूबी हुई थी कि उसे नसरत के आने का कोई अभास न हुआ। नसरत ने उसके पीछे से आकर उसकी आँखों पर हाथ धर दिये। प्रवीण को कुछ यों अनुभव हुआ जैसे वह वहीद है। उसे असीम क्रोध आया और नसरत के दोनों हाथों को अत्यन्त बे दिली से अपनी आँखों से हटाते हुए बोली—

'आप कौन हैं?'

जब उसने पीछे देखा तो नसरत खड़ी थी। वह उसे देखकर बहुत लज्जित हुई और बोली—

'इस अपराध के लिये क्षमा चाहती हूँ।'

नसरत ने कहा—

'मालूम होता है आप बहुत क्रोध में थीं क्या बात है?-

प्रवीण अभी कोई उत्तर न देने पाई थी कि अशरत कमरे में प्रविष्ट हुई। प्रवीण ने उसकी ओर देखते हुए कहा—

'बहिन! मेरी चची और अपनी अम्मां से मिलिये। मेरा ख्याल है *आप अभी तक इनसे नहीं मिलीं।'*

यह सुनकर नसरत ने अशरत से कहा—

'आदाब बजा लाती हूँ।'

अशरत ने कहा—

'जीती रहो बेटी!'

इसके बाद कुछ देर तक चुप्पी रही। फिर अशरत ने नसरत से कहा—

'आप यह बताइये कि आपको मुझसे क्या नाराज़गी है यदि कोई ऐसी ही बात है तो मैं क्षमा मांगने के लिये तैयार हूं।'

नसरत अशरत को पहिले से जानती थी। अपनी विमाता के रूप में नहीं अपितु नाज़िम की पत्नी के रूप में। वह उसे यहाँ देखकर चकित सी रह गई। अशरत उसका तात्पर्य समझ गई और बोली—

'आपको चकित नहीं होना चाहिये। संसार में हर वस्तु संभव है। पहिले आपने मुझे नाजिम की पत्नी के रूपमें देखा और अब अपनी माँ के रूप में देख रही हो नाज़िम की पत्नी के रूप में आप मेरे बारे में केवल इतना जानती है कि मैं एक बड़ी झगड़ालु और बदमिजाज स्त्री हूँ किन्तु मेरा विचार है कि यदि आप मुझे मां के रूप में देखें तो इससे भिन्न पाएंगी।'

नसरत ने तो इसका कोई उत्तर न दिया फिर भी प्रवीण बोली—

'बहिन। यह इन्होंने सही कहा है। अब ये वे नहीं हैं जो पहिले थीं। इन्होंने भावज के रूप में मुझ से जो दुर्व्यवहार किया था वह वास्तव में आपत्तिजनक था किन्तु चची बनकर इन्होंने मुझ से ऐसा व्यवहार किया कि मैं अब इनकी चेरी हो गई हूं। मेरा विचार है कि अब आप इन्हें नाजिम की पत्नी न समझें अपितु अपनी मां समझें। और आपको मालूम हो जाएगा कि मां के रूप में ये अत्यन्त दयालु और सौहार्दपूर्ण हैं। आप यह सुनकर चकित होंगी कि इनकी पहिली और वर्तमान स्थिति में दिन रात का अन्तर है।'.

नसरत ने इसका कोई उत्तर न दिया और काफी देर तक चुप बैठी रही। जब अशरत ने उसे मौन देखा तो बोली—

'नसरत ! मैं पहिले बड़ी कुस्वभाव गर्वीली और झगड़ालू स्त्री थी किन्तु अब नहीं। क्यों नहीं ? इसका कारण विस्तार पूर्वक प्रवीण को बता चुकी हूँ। जब तुम उसके मुँह से वास्तकिता सुनोगी तो तुम्हें मालूम

हो जायेगा कि झगड़ालु कुस्वभाव और गर्वीली होने में मेरा अपना कोई दोष न था। किन्तु अब मैं वह नहीं हूँ जो पहिले थी। खेद है कि अभी तक मेरे बारे में तुम वही सम्मति रखती हो।'

प्रवीण ने मुस्कराते हुए कहा—

'हाँ बहिन! यह उन्होंने सही कहा है। मैं भी इन्हें एक बिगड़े स्वभाव की स्त्री ही समझा करती थी। जब मुझे वास्तविकता का ज्ञान हुआ तो मैंने यह अनुभव किया कि यदि मैं भी इनके स्थान पर होती तो वही करती जो इन्होंने किया। कुछ भी हो मुझे इनसे कोई शिकायत नहीं और मेरा ख्याल है कि आपको भी समस्त बातें भूल जानी चाहियें और इन्हें सगी माँ समझना चाहिये।'

अशरत का विश्वास था कि नसरत कुछ अवश्य बोलेगी और पुरानी बातों को भूलकर भविष्य के लिये सद व्यवहार और प्यार का वचन देगी किन्तु उसने कुछ न कहा और मौन रही। उसने प्रवीण की बातों को झुठलाने या अशरत के सद् व्यवहार प्रदर्शन पर विश्वास प्रकट करने का यत्न न किया और मौन रही। इसका तात्पर्य यह भी था कि उसने अशरत के बारे में अपनी सम्मति बदल ली है। और यह भी कि प्रवीण ने अशरत के बारे में जो कुछ कहा है वह उसके निकट विश्वसनीय नहीं।

प्रत्येक व्यक्ति की चिन्तनशक्ति का विस्तार अपनी शक्ति के अनुसार होता है। अशरत ने नसरत के मौन का यही अर्थ लिया कि उसने उसके बारे में अपनी राय बदल ली है और उसे सगी माँ समझने लगी है किन्तु नशरत की दशा इससे भिन्न थी। वह अशरत की उपस्थिति में प्रवीण की सम्मति को झुठलाना नहीं चाहती थी। वह अशरत को वही अशरत ख्याल करती थी जो किसी समय नाज़िम की पत्नी थी क्योंकि उसके निकट स्वभाव परिवर्तन एक असम्भव बात थी। वह अशरत को हृदय से बुरा समझती थी किन्तु इतनी हिम्मत उसमें नहीं थी कि वह इसकी बुराइयाँ उसके सामने रख सके। जब प्रवीण ने उसके चरित्र की प्रशंसा

की तो उसने न उसका अनुमोदन किया न विरोध अपितु मौन रही। जिसका अर्थ यह था कि वह उसकी सम्मति से सहमत नहीं। किन्तु अशरत ने उसका अर्थ यह समझा कि वह अपनी पहिली राय के बारे में कुछ ऊहापोह में पड़ गई है और उसे बदलने के लिये तैयार है। उसका ख़याल यह था कि वह उसकी उपस्थिति में अपनी वास्तविक सम्मति प्रकट न करेगी। प्रवीण के बारे में वह यह जानती थी कि वह उसकी पुजारिन हो चुकी है। और नसरत को सहमत करने का पूरा-पूरा प्रयत्न करेगी इसलिये उसने यही उचित समझा कि वहाँ से उठकर चली जाये ताकि प्रवीण को उसे सहमत करने का अवसर प्राप्त हो सके।

यह सोचते हुए वह उठ खड़ी हुई और बोली—

'तुम दोनों बातें करो। मैं चाय भिजवाती हूँ तुम्हारे लिए।'

यह कहकर वह कमरे से बाहिर निकल गई। उसके जाने के बाद नसरत ने प्रवीण से कहा—

'तुमने मुझे यह अब तक क्यों न बताया था कि मेरी सौतेली माँ वही हैं जो नाज़िम की पत्नी रह चुकी हैं?'

प्रवीण ने कहा—

'वास्तव में मैं इस मामले में दोषी हूँ किन्तु यदि तुम सोचोगी तो इस परिणाम पर पहुँचोगी कि भावज के रूप में उन्होंने जो शत्रुता मुझ से की वह तुम से नहीं की। मुझे भी यह कदापि मालूम न था कि मेरी चची वास्तव में मेरी भावज ही है। जब मैंने इन्हें पहिली बार देखा तो चकित रह गई और मुझे यह भय उत्पन्न हुआ कि ये अपना स्वभाव न छोड़ेंगी और यह घर मेरे लिए नरक से कम नहीं होगा। चची जान को मेरी मानसिक दशा का ज्ञान था और वे यह जानती थीं कि मैं उन्हें अभी तक अपनी भावज के स्वभाव के अनुमान से परख रही हूँ। चुनांचे उन्होंने मुझे सांत्वना देने का यत्न किया और मुझे बताया कि नाज़िम की पत्नी होने के रूप में उसका स्वभाव बिगड़ा हुआ क्यों था। पूरी घटना सुनने के पश्चात् मैं इस परिणाम पर पहुँची कि उन्होंने जो कुछ

कहा है सत्य है। उस समय तो उन्होंने केवल ज़ुबानी सफाई दी किन्तु बाद में जो घटनाएं सामने आईं उन्होंने यह सिद्ध कर दिया कि वे बिल्कुल सही हैं। नसरत बहिन ! आप इन्हें केवल नाज़िम भाई की पत्नी के रूप में जानती हैं। क्योंकि उस समय ये अत्यन्त बिगड़े स्वभाव की अक्खड़ थीं इसलिए सम्भव है कि आपकी सम्मति इनके बारे में अच्छी हो किन्तु मेरा ख्याल है कि यदि आप इन्हें अपनी माँ के रूप में देखेंगी तो इन्हें सद्व्यवहार पूर्ण और प्रसन्नचित्त पाएंगी। चची बन कर इन्होंने मुझसे जैसे सद्व्यवहार का परिचय दिया है उसे देखकर मैं समस्त पुराने मनमुटाव भूल गई हूं और मेरा ख्याल है कि तुम भी तमाम पुरानी बातों को भूल जाओगी और तुम्हें विश्वास हो जाएगा कि वे सगी माँ से किसी प्रकार कम नहीं।'

यह सुनकर नसरत मुस्कराई। उसकी मुस्कराहट कुछ इस प्रकार की थी जो सीधे सादे व्यक्ति की बातें सुनकर चेहरे पर प्रकट होती है। उसने प्रवीण की बातों का उत्तर देने का कोई यत्न न किया और बात का विषय बदलती हुई बोली—

'खैर, छोड़ो तुम इन बातों को और यह बताओ कि वहीद का क्या हाल है ?'

वहीद का नाम सुनते ही प्रवीण के माथे पर बल पड़ गए और बोली—

'आप मेरे सामने उनका नाम न लीजिये। मुझे दुःख होता है।'

'क्यों ?'

'वहीद के बारे में मैंने जो बातें सुनी हैं उनसे मुझे यह विश्वास हो गया है कि वह एक स्वार्थी, कामुक और मक्कार व्यक्ति हैं। उन्होंने मुझे अपनी कामुकता का शिकार करने का यत्न किया किन्तु खुदा का शुक्र है कि मुझे पहिले से उनके निश्चय का पता चल गया और मैं उन का शिकार होने से बच गई।'

'तुम्हें यह कैसे मालूम हुआ कि वह स्वार्थी और मक्कार

व्यक्ति है ?'

'मुझे ये सब बातें चचीजान ने बताई हैं। मैं ऐसी बुद्धू नहीं हूं कि केवल कोई बात सुनकर उसपर विश्वास कर लूं। चचीजान ने ऐसे प्रमाण दिये हैं कि मुझे उनकी बातों पर विश्वास करना पड़ा है।'

'क्या उन्होंने यह कहा है कि वहीद इस प्रकार का व्यक्ति है।'

'हाँ, उन्होंने ही यह कहा और इसका प्रमाण भी दिया है।'

'जैसे क्या ?'

'जैसे यह कि सबसे पहिले वहीद ने अशरत चची को ही पथभ्रष्ट किया। उन्होंने पूरा प्रयत्न किया कि अशरत का विवाह नाज़िम भाई से न होने पाए किन्तु जब चची जान के पिता ने हठात् उनका विवाह भाईजान से कर दिया तो फिर भी वहीद ने अपना यत्न नहीं छोड़ा और चचीजान को पथभ्रष्ट करते रहे। यहाँ तक कि हमारे घर में झगड़े हुए और अन्त में वे अपने मायके जाकर बैठ गईं।'

'इसका मतलब यह है कि अशरत नाज़िम भाई से विवाह करने के विरुद्ध थीं।'

'बिल्कुल यही बात थी। इसका मतलब यह नहीं कि नाज़िम भाई व्यवहार अथवा चरित्र से बुरे थे और अशरत उनसे घृणा करती थीं बल्कि बात वास्तव में यह थी कि हमारे समाज के कुछ बन्धनों ने उन्हें नाजिम भाई से परिचित नहीं होने दिया था। वे केवल वहीद को जानती थीं और उन्हें नाज़िम भाई से अच्छा समझती थीं। क्यों समझती थीं इसका कारण बताने की आवश्यकता नहीं।'

'हाँ, इसका स्पष्ट अर्थ यही है कि जिस व्यक्ति से परिचित न हो उसकी विशेषताओं अथवा बुराइयों के बारे में कुछ मालूम नहीं हो सकता। उससे श्रेष्ठ वही व्यक्ति होता है जिससे मनुष्य परिचित हो। चाहे वह व्यवहार और चरित्र में पहिले से बुरा ही क्यों न हो। किन्तु यह बात मेरी समझ में नहीं आई कि वहीद ने अशरत को क्यों पथ भ्रष्ट किया। वे नाज़िम भाई के मित्र थे। और जहाँ तक मैं जानती हूँ

दोनों में बहुत प्रेम था।'

'यह बात मेरी समझ में भी नहीं आती थी किन्तु जब चचीजान ने मुझे विस्तार से बताया तो सारी बात मेरी समझ में आ गई और मालूम हो गया कि यह बात संभव है। बहिन! शायद तुम यही नहीं जानती हो कि इस संसार में ऐसे लोग भी बसते हैं जो मैत्री के पर्दे में शत्रुता के अभ्यस्त होते हैं। वहीद को भी इसी प्रकार के लोगों में समझ लीजिये। मैं शायद चचीजान की बात पर विश्वास न करती किन्तु जो कुछ मैंने अपनी आँखों से देखा और अपने कानों से सुना उसने मुझे इस बात पर विवश कर दिया कि वहीद को संसार का सबसे बड़ा मक्कार व्यक्ति समझूँ।'

'यह बात आश्चर्यजनक है कि वहीद नाज़िम भाई की खोज में मारे-मारे फिरते रहे और स्वयं तुमने भी माना है कि तुम भी इस यात्रा में उनके साथ रही किन्तु उन्होंने कभी तुम्हें कुदृष्टि से नहीं देखा। ऐसी दशा में यह बात कुछ विश्वास के योग्य प्रतीत नहीं होती कि वहीद ने अपने मित्र से शत्रुता की हो अथवा उनका उद्देश्य केवल व्यक्तिगत उद्देश्य की पूर्ति हो।'

'प्रकट यह चीज़ बड़ी आश्चर्यजनक प्रतीत होती है किन्तु इसे वहीद की कला समझना चाहिए कि उन्होंने अपनी शत्रुता भी प्रकट न होने दी और मित्र के विरुद्ध षड़यंत्र भी करते रहे। आपके पास इस बात का क्या प्रमाण है कि वे नाज़िम भाई की खोज में मारे-मारे फिरते रहे? सम्भव है कि वे ताहिरा की खोज में घूमते रहे हों क्योंकि मुझे यह मालूम हो चुका है कि वे अशरत चची को धोका देने के बाद ताहिरा को अपने जाल में फाँसने का यत्न करते रहे थे। और यह बात प्रमाणित हो चुकी है। रहा यह मामला कि उन्होंने यात्रा के समय मेरी ओर कुदृष्टि से न देखा तो सीधी-साधी लड़कियों को अपने प्रेम जाल में जकड़ने का यह भी एक ढंग है कि अपने चरित्र की उच्चता का प्रमाण

दिया जाए। क्या आश्चर्य कि यही चीज वहीद की दृष्टि में रही हो।'

नसरत मौन हो गई। वह वहीद को नहीं जानती थी। उसे यह मालूम न था कि वह किस प्रकार का व्यक्ति है किन्तु उसे यह भय अवश्य था कि सभंव है अशरत ने प्रवीण को पथभ्रष्ट करने के लिये उसे यह पट्टी पढ़ाई हो। नसरत एक चतुर और अनुभवी स्त्री थी। वह मक्कार तथा धोकेबाज स्त्रियों के बहानों को समझती थी इसलिये उसका यह सन्देह एक प्राकृतिक वस्तु था। वहीद की बुराइयों अथवा अच्छाइयों से वह वास्तव में अनभिज्ञ थी किन्तु इस बात को भी समझती थी कि स्वभावगत निर्वलताओं को दूर करना मनुष्य के वश के बाहर है। यह बात उसकी समझ में नहीं आती थी कि जिस स्त्री ने उसके चचा के घर को अपने फूहड़पन और बुरे स्वभाव के कारण नष्ट कर दिया हो वह अपना सुधार कैसे कर सकती है ? और उसके स्वभाव में यह असाधारण परिवर्तन कैसे संभव हो सकता है कि वह एक तुनक स्वभाव से अच्छे स्वभाव की हो जाए। यह चीज उसके लिये एक पहेली का स्थान रखती थी। यदि वह वहीद के स्वभाव से परिचित होती तो सभंवतः वह वस्तु स्थिति को समझ जाती। वह वहीद को नहीं जानती थी इस लिये उसके लिये यह जानना कठिन था कि अशरत सच्चाई पर है अथवा वहीद। प्रवीण की समस्त बातचीत सुन कर वह चुप हो रही और कोई उत्तर न दिया। प्रवीण ने फिर उसे कहा—

'आप ने कुछ कहा नहीं।"

नसरत ने मुस्कराते हुए कहा—

'मैं क्या कह सकती हूँ ? जो घटना मुझे तुम्हारे मुँह से सुनने को मिली उसके आधार पर मैंने सम्मति बनाली थी। कि तुम दोनों में प्यार है। ऐसा प्यार जो सद् व्यवहार और सहानुभूति के आधार पर सभंव हो सकता है। अब तुम्हारे मुँह से ही यह मालूम हुआ है कि वहीद एक कामुक और मक्कार व्यक्ति है और उसने एक के बाद एक कई स्त्रियों

को अपने जाल में फाँसने का यत्न किया है। मालूम नहीं तुम्हारी पहली राय सही है अथवा वर्तमान। कुछ भी हो, इस बारे में मैं तो कोई निर्णय नहीं कर सकती।'

प्रवीण यह सुनकर चुप हो रही और उसने इस बात को और विस्तार देना उचित न समझा।

नसरत कई दिन तक इस उलझन में रही कि वहीद के बारे में प्रवीण ने अपनी राय क्यों बदल ली ? उसे अनेक बार यह सन्देह होता कि सभंव है यह अशरत के संकेत पर सब हो रहा हो ? किन्तु यहउसे मालूम न हो सका कि यदि अशरत ही ने उसे वहीद के विरुद्ध कर दिया है तो इसका वास्तविक कारण क्या है ? वहीद स्वर्गीय नाज़िम का मित्र था इतना तो वह जानती थी किन्तु यह उसे मालूम नहीं था कि अशरत और वहीद में भी कुछ सम्बन्ध थे। और वे ही सम्बन्ध अन्त में उसके चचा के घर की तबाही का कारण बने। अशरत के बारे में उसकी सम्मति अब तक यही थी कि वह एक मक्कार स्त्री है और अपने पति से निबाह करना उसके बस की बात नहीं। किन्तु जब उसने यह देखा कि वह अपने बूढ़े पति की आज्ञा कारिणी है तो यह पहेली उसकी समझ में नहीं आई कि नाज़िम जैसे सुन्दर और व्यवहार कुशल युवक से उसकी क्यों निभ न सकी ? नसरत ने वस्तु स्थिति को जानने के लिये अपने मस्तिष्क पर बहुत बल दिया किन्तु उसकी समझ में कोई बात न आ सकी। वह स्त्रि थी और स्त्री की भावना से परिचित थी इस लिए यह बात भी उसके निकट मान्य थी कि सभंव है वहीद के कहने सुनने से ही अशरत नाज़िम के विरुद्ध हो गई हो। और अब जबकि उसे वहीद के दुश्चरित्र होने का पता चल गया तो उसने अपने वृद्ध पति की आज्ञा कारिता को अपने लिये आवश्यक समझ लिया हो।

नसरत लगातार कई दिन तक इस बात पर विचार करती रही।

वह प्रवीण को एक पढ़ी लिखी और समझदार लड़की समझती थी। उसे विश्वास था कि वह किसी के कहने सुनने से उस व्यक्ति के विरुद्ध कदापि नहीं हो सकती जिसे उसने कभी अपना जीवन साथी चुना हो। यदि वह उसके विरुद्ध हो गई है तो निश्चय ही उसका कोई उचित कारण रहा होगा।

एक दिन नसरत अपने घर के काम काज में लगी थी कि उसके पति खलीक ने उससे कहा—

'आज मैंने अपने एक मित्र को खाने पर बुला रखा है।'

'कौन मित्र हैं वे ?

'तुम उन्हें नहीं जानती हो।

'फिर भी मालूम तो हो।'

'जब वे यहाँ आएंगे तो विस्तार से परिचय करवा दूंगा। मेरे बड़े पुराने मित्र हैं और कालेज में मेरे साथ पढ़ते रहे हैं।'

'तो क्या रात के खाने पर आप ने बुला रखा है ?'

'हाँ, रात के खाने पर ?'

'बहुत अच्छा। भोजन का प्रबंध हो जाएगा।'

यह सुन कर खलीक मुस्कराता हुआ अपने कमरे में चला गया। कोई पाँच बजे शाम का समय था और रात के भोजन में अभी दो घन्टे शेष थे।

नसरत अपने पति के मित्र के भोज के प्रबन्ध में लग गई। कोई घण्टा डेढ़ घन्टा के बाद खलीक उसके पास आया और बोला—

'तो क्या फुरसत में हो तुम ?'

नसरत ने मुस्कराते हुए कहा—

'क्यों ? क्या बात है ?'

खलीक ने कहा—

'मेरे वे मित्र आ गए हैं। आओ, मैं तुम्हें उन से मिलाऊँ।'

नसरत एक ऐसे वंश की लड़की थी जो बहुत अधिक पुरातन पंथी

था। उस वंश में स्त्रियों को पर पुरुष से मिलना वर्जित था और उसे बहुत बुरा समझा जाता था किन्तु खलीक एक स्वतंत्र विचार का व्यक्ति था। नसरत आरम्भ में उसके मित्रों से मिलने में आपत्ति करती रही और अपने परिवाद की पुरातन पंथी मान्यताओं की पाबन्द रही किन्तु अन्त में खलीक उसे अपने विचार से सहमत कर लिया और वह अपने पति के मित्रों से मिलने में कोई आपत्ति न समझने लगी। पहिले पहल वह यह विचार करती थी कि पर पुरुषों से मिलना अथवा उनके सामने खुले मुंह बैठ कर उनसे बातें करना अत्यन्त लज्जा की बात है किन्तु नए वातावरण की अभ्यस्त होने के पश्चात् उसने अपनी यह राय बदल दी। और उसने यह अनुभव कर लिया कि स्त्री और पुरुष की मित्रता किसी वासना की पूर्ति का ही नाम नहीं अपितु इसका उद्देश्य कुछ और भी हो सकता है। वह अब अपने पति के मित्रों से बेझिझक मिलती थी किन्तु इतना अवश्य जानती थी कि पति पत्नी के सम्बन्ध और मित्रता में क्या अन्तर है? जब खलीक ने उसे कहा कि वे मित्र आगए हैं तो वह उसके साथ हो ली और ड्राइंग रूम में पहुँच गई।

उस कमरे में एक सजीला युवक बैठा था खलीक ने उसकी ओर संकेत करते हुए कहा—

'नसरत! ये मेरे मित्र खलील हैं। इन से मिलो। और हाँ, खलील। ये मेरी बेगम नसरत जहां हैं।'

खलील और नसरत ने एक दूसरे को हाथ जोड़े और आमने सामने कुर्सियों पर बैठ गए। नसरत ने कुर्सी पर बैठते हुए कहा—

'वैसे तो इनके सब मित्रों से परिचय हो चुका है किन्तु आप से पहिली बार भेंट हुई है।'

खलील ने कहा—

'हाँ यह आपने सही कहा। खलीक के विवाह के बाद मुझे आज पहिली बार इस घर में कदम रखने का अवसर मिला है। तब फिर भेंट का अवसर ही कैसे प्राप्त हो सकता था?'

खलीक ने अट्टहास करते हुए कहा—

'अवसर की भी आपने एक ही कही। पहिले अवसर क्यों नहीं मिल सकता था ?'

खलील ने कहा—

'मैंने सभ्य सोसाइटी की चर्चा की है। उनमें यह अवसर बहुत कम होता है। मैं ऐसी लड़कियों को भी जानता हूँ जो विवाह से पूर्व भी अनेक लोगों से मित्रता रखती थीं। उनके बारे में तो यह बात संभव हो सकती है किन्तु अपनी भावज के बारे में इसे क्यों संभव मान लूँ ?'

यह सुनकर खलीक कुछ झेंप सा गया और बोला—

'मेरा मतलब यह नहीं था।'

खलील ने बात काटते हुए कहा—

'संभव है आपका मतलब कुछ और हो किन्तु मैंने जो कहा है सही कहा है। मैं स्त्रियों की स्वतंत्रता का यहां तक तो पक्षपाती हूँ कि वे अपने पति के मित्रों से स्वतंत्रता से और बेझिझक मिल सकें किन्तु यह स्वतंत्रता मेरे निकट अत्यन्त वर्जित है कि वे अपने मित्रों का एक अलग गिरोह बना लें। कुछ पढ़ी लिखी लड़कियां स्वतंत्रता का अर्थ कुछ और समझ लेती हैं और पर पुरुषों के साथ आवारा गर्दी और मटर गश्त करने में कोई झिझक नहीं समझतीं। वे पाश्चात्य देशों की देखा देखी पुरुषों के साथ मैत्रि सम्बन्ध स्थापित करना सभा सोसाइटी का अंग समझती हैं किन्तु यह बात गलत है। यदि मेरी भावज ऐसी ही स्त्री होतीं तो संभवतः विवाह से पूर्व ही उनकी मुझसे भेंट हो सकती किन्तु खुदा का शुक्र है कि वे ऐसी स्त्रियों में से नहीं हैं।'

खलीक ने अट्टहास करते हुए कहा—

'अरे खलील ! तुमने यह क्या फाख्ता उड़ाना आरम्भ कर दिया ?'

खलील और नसरत विवश हँस पड़े। नसरत ने खलील से सम्बोधन कर कहा—

'खलील साहब ! ये तो ऐसी ही बातें किया करते हैं।'

खलील ने कहा—

'कोई हर्ज नहीं। दिल्लगी के लिये ऐसी बातें भी होनी ही चाहियें किन्तु भाभी जान! तुम यह न कहो कि मैंने जो कुछ कहा है गलत कहा है?'

नसरत ने मुस्कराते हुए कहा—

'मुझे तो आपकी बातें बहुत पसंद आई। मालूम नहीं यह आपका मजाक क्यों उड़ा रहे हैं? मेरी अपनी राय यह है कि कंवारपन में लड़की को पुरुषों से कोई सम्बन्ध नहीं रखना चाहिये। हाँ, विवाह के बाद पति के मित्रों से मिलने जुलने में कोई हर्ज नहीं।'

खलीक ने अट्टहास करते हुए कहा—

'यह तो तुमने ऐसे कहा है कि जैसे विवाह से पूर्व तुम्हारा मुझसे कोई सम्बन्ध न था?'

नसरत कुछ झेंप सी गई और बोली—

'यह आपने ठीक कहा है। आपसे सम्बन्ध अवश्य था किन्तु मैं यह भी जानती थी कि आपसे मेरा विवाह होने वाला है। अब कुछ दिनों से मैंने अपनी यह सम्मति भी बदल ली है और यह समझने लगी हूँ कि लड़की को अपने मंगेतर से भी कोई सम्बन्ध नहीं रखना चाहिये।'

खलील ने मुस्कराते हुए कहा—

'इस मामले में मैं आपसे सहमत नहीं हूँ। अपने मंगेतर से सम्बन्ध बढ़ाने में कोई हर्ज नहीं। मेरा विचार है कि इस सम्बन्ध का दोनों के भावी जीवन पर बड़ा अच्छा प्रभाव पड़ता है। मालूम नहीं, आपने इस बारे में अपना विचार क्यों बदल दिया है?'

नसरत एक ठण्डी साँस भर कर बोली—

'मैं भी आज तक यही ख्याल करती रही हूँ कि विवाह से पूर्व यदि लड़के और लड़की में प्रेम हो जाता तो उसका प्रभाव उनके गृहस्थ जीवन पर बड़ा अच्छा पड़ सकता है किन्तु मेरे अनुभव ने इस बात को गलत सिद्ध कर दिया है। बात वास्तव में यह है कि संसार में ऐसे पुरुषों की

कमी नहीं जो लड़कियों की लाज को अपनी वासना का शिकार बनाने के लिये उनसे सम्बन्ध स्थापित करते हैं। जब ऐसी लड़कियाँ अपनी लाज लुटा चुकती हैं तो उनके नुमायशी चाहने वाले उन्हें छोड़कर दूसरी ओर ध्यान देते हैं। मानसिक दशा तो खुदा ही जानता है। सादा और भोली लड़कियाँ भला कैसे समझ सकती हैं कि उनके चाहने वाले नुमायशी ही उनसे प्यार करते है अथवा उनसे विवाह करने के इच्छुक भी हैं ?'

खलील ने हँसते हुए कहा—

'अनुभव तो आपने यों कहा जैसे इस प्रकार की घटना आपने अपनी आँखों से देखी है।'

नसरत ने अति गम्भीरता से कहा—

'हाँ, ऐसी घटना मैंने अपनी आँखों से देखी हैं।'

'जैसे ?'

'जैसे यह कि मेरी एक चचा की बेटी प्रवीण है। एक साहब जिनका नाम प्रोफेसर वहीद है उससे प्यार करते रहे और उसे विश्वास दिलाते रहे कि वे उसे हृदय से चाहते हैं। किन्तु बाद में मालूम हुआ कि वह एक हरजाई पुरुष है और हर लड़की से इस प्रकार के सम्बन्ध स्थापित करके उसकी लाज लूटने और अन्त में उसे छोड़ देने के अभ्यस्त हैं। जब संसार में इस प्रकार के गेहूँ के नाम पर जौ बेचने वाले मनुष्य बसते हैं तो सच्चे और झूठे प्यार में क्या भेद किया जा सकता है ? इसीलिये तो मैंने कहा है कि विवाह से पूर्व लड़कियों को पुरुषों से किसी प्रकार का सम्बन्ध नहीं रखना चाहिये।'

'अच्छा, यह कहिये कि जिन साहब की आपने चर्चा की है क्या उन्होंने आपकी चचेरी बहिन को कोई धोखा दिया है ? या उनसे कोई बुरा व्यवहार किया है ?'

'यह मुझे मालूम नहीं है किन्तु मैं इतना अवश्य जानती हूँ कि इससे

पूर्व उन्होंने दो लड़कियों को अपनी वासना का शिकार बनाने का यत्न किया। एक तो उनके मित्र अर्थात् मेरे चचेरे भाई की पत्नी अशरत थी और दूसरी एक और लड़की जिसका नाम ताहिरा था। स्पष्ट है कि वह तीसरी लड़की अर्थात् मेरी चचेरी बहिन प्रवीण से भी यही व्यवहार करते किन्तु उस बेचारी को समय से पूर्व इस बात का पता चल गया और वह उन सज्जन के जाल से बच निकली।'

यह सुनकर खलील कुछ देर तक सोचता रहा और फिर बोला—

'वहीद की वासना और कामुकता की कहानी आपको किसने सुनाई है ?'

नसरत ने कहा—

'मेरी चचेरी बहिन प्रवीण ने।'

'उसे वहीद के इस चरित्र का कैसे पता चला ?'

'उसे उसकी चची अर्थात् मेरी सौतेली माँ अशरत ने सब कुछ बताया। वह मेरे चचेरे भाई नाज़िम की पत्नी भी रह चुकी है। नाज़िम के मरने के बाद उसने मेरे अब्बा से शादी की।'

'तो क्या आपका ख्याल है कि अशरत ने जो कुछ कहा वह ठीक है ?'

'मैं यह नहीं जानती किन्तु प्रवीण उसके कथन को सत्य समझती है। वह क्योंकि एक पढ़ी-लिखी लड़की है इसलिये मुझे यही समझना चाहिये कि उसने अपना निश्चय कर लिया होगा।'

'मालूम होता है कि आपकी चचेरी बहिन प्रवीण पढ़ी लिखी और समझदार होते हुए भी अपनी चची अशरत की झूठी बातों का शिकार हो गई हैं।'

'तो क्या आपका यह ख्याल है कि वहीद उसे दिल से चाहता था ?'

'ख्याल ही नहीं बल्कि विश्वास है।'

'आप प्रोफेसर वहीद की इतनी सफाई क्यों दे रहे हैं ?'

खलीक ने एक गगन भेदी अट्टहास किया और बोला—

'नसरत ! तुम यह जानती हो ये कौन हैं ?'

'आपने बताया तो है कि ये आपके मित्र खलील हैं।'

'हाँ, ये खलील हैं किन्तु प्रोफेसर वहीद भी ये ही हैं।'

यह सुनकर नसरत अत्यन्त चकित हुई और बोली—

'यह क्या बात हुई कि खलील और वहीद एक ही व्यक्ति हों !'

'बात वास्तव में यह है कि इनका नाम खलील अहमद है और उपनाम वहीद है। ये मेरे सहपाठी हैं और कालेज में खलील के नाम से प्रसिद्ध थे। मैं इन्हें इसी नाम से पुकारता हूँ। मालूम नहीं बाद में इन्हें क्या ख्याल आया कि अपने नाम के साथ वहीद का दुमछल्ला भी लगा लिया। हालाँकि जहाँ तक मैं जानता हूँ इन्होंने कभी कोई कविता आदि नहीं कही। बस यों समझ लो कि उपनाम तो उन्होंने यों ही रख छोड़ा है। आश्चर्य है कि ये वास्तविक नाम के स्थान पर उपनाम से अधिक प्रसिद्ध है। केवल कुछ व्यक्ति ऐसे होंगे जो इनका वास्तविक नाम जानते हैं। शेष सब इन्हें प्रोफेसर वहीद ही कहते हैं।'

इस भेद के प्रकट होने पर नसरत को आश्चर्य भी हुआ और लज्जा भी। आश्चर्य इसलिए कि उससे बात करने वाला स्वयं प्रोफेसर वहीद ही निकला और लज्जा इसलिए कि उसने उसके सामने उसकी समस्त काल्पनिक बुराइयों की चर्चा कर दी और उसे एक बहुत बड़ा मक्कार और कामुक व्यक्ति कह दिया। वह कुछ देर तक चुप बैठी रही और सोचती रही फिर बोली—

'तो क्या जो बातें मैंने कही हैं वे गलत हैं ?'

'बिल्कुल गलत हैं। आपको सुनी सुनाई बातों पर विश्वास नहीं करना चाहिए।'

'तो फिर सत्य क्या है ?'

'बात बड़ी लम्बी है किन्तु संक्षेप से निवेदन किये देता हूँ।'

'हाँ, हाँ, कहिये।'

'बात वास्तव में यह है कि आपकी सौतेली मां अशरत जिसके बारे

में आज मुझे पहिली बार यह मालूम हुआ है कि वे स्व० नाज़िम की भी पत्नी रह चुकी है' एक बड़ी भेदपूर्ण स्त्री हैं। विवाह से पूर्व नाज़िम को भी सम्भवतः यह ज्ञात न था कि उसका विवाह अशरत से होने वाला है और न शायद अशरत यह जानती थी। पहिली बार मुझे किताबों की एक दूकान पर उससे मिलने का अवसर प्राप्त हुआ। उसके साथ एक शमीम नामक युवक भी था जो अब भी उससे मिलता है और जिसे वह प्रायः अपना फुफेरा भाई बताती है। संभव है आपने भी उसे देखा हो। कुछ भी हो पहिली बार मैंने उन्हें किताबों की एक दूकान पर देखा और उनकी आपसी बातचीत से मैंने यही अनुमान लगाया कि उनके सम्बन्ध चारित्रिक रूप से अच्छे नहीं हैं। दूसरी बार फिर उसी दूकान पर उन दोनों से मिलने का अवसर प्राप्त हुआ। इस बार स्वरगीय नाज़िम भी मेरे साथ थे। नाज़िम और अशरत को यह ज्ञात न था कि वे एक दूसरे के मंगेतर हैं। अशरत की बदतमीजियों को देखकर नाज़िम ने चुपके से एक वाक्य कस दिया जिसे अशरत ने भी सुन लिया और उसने एक चाँटा नाज़िम के जड़ दिया। इसके बाद दोनों का विवाह हो गया। किन्तु इन दोनों में न निभ सकी। सम्भव है इस झगड़े का वास्तविक कारण यही पुरानी चोट रही हो। जब अशरत अपने मायके जाकर बैठ गई तो नाज़िम ने एक लड़की ताहिरा से विवाह करने का यत्न किया जिसे वे पहिले से चाहते थे किन्तु मुझे उन्होंने यह भेद नहीं बताया था। अशरत को भी इस बात का पता चल गया और उसने इस सम्बन्ध में रुकावट उत्पन्न करने के लिए एक षड्यंत्र रचा। उसे यह मालूम था कि मैं और नाज़िम हार्दिक मित्र हैं और नाज़िम किसी दशा में भी मेरा हृदय तोड़ना सहन न करेंगे। अशरत ने ताहिरा के भाई के साथ षड्यंत्र कर एक बनावटी पत्र मुझे भिजवा दिया जिस में ताहिरा के माँ बाप की ओर से यह लिखा था कि यदि आप हमारी लड़की से विवाह करना चाहें तो सम्बन्ध हाजिर है। वह लड़की अति सुन्दर और सभ्य थी। इसके अतिरिक्त वह लाहौर के एक बहुत बड़े

घराने से सम्बन्ध रखती थी। मैंने यह सम्बन्ध स्वीकार कर लिया किन्तु मुझे यह पता न चल सका कि यह लड़की मेरे ही मित्र नाज़िम की मंगेतर है। मैंने नाज़िम से इस सम्बन्ध की चर्चा की और उन्हें ताहिरा का वह चित्र दिखा दिया जो सम्बन्ध के पत्र के साथ मुझे पहुँचा था। नाज़िम मेरे पूर्ण मित्र थे। वे किसी दशा में भी मुझे नाराज करना नहीं चाहते थे। उन्होंने मुझसे वास्तविक बात की कोई चर्चा न की और मुझे ताहिरा से विवाह करने की सम्मति दे दी। उन्हें ताहिरा से अत्यन्त प्रेम था। मेरा दिल तोड़ना तो उन्होंने सहन न किया किन्तु उन्हें अत्यन्त चोट पहुँची और वे लाहौर छोड़कर दिल्ली चले गए जहाँ उन्होंने आत्म हत्या कर ली। यदि मुझे वास्तविकता का समय रहते पता चल जाता तो यहाँ तक बात न पहुँचती किन्तु मेरे दुर्भाग्य से मुझे उस समय इसका पता चला जब तीर कमान से निकल चुका था। मैंने नाज़िम की खोज में जो खाक छानी उसकी चर्चा की आवश्यकता नहीं। प्रवीण से मुझे प्यार यों हुआ कि जब मैंने उसे अपने भाई के वियोग में अत्यन्त परेशान देखा तो मुझे उससे कुछ सहानुभूति सी उत्पन्न हो गई जो धीरे-धीरे प्यार में बदल गई। अब प्रश्न यह उठता है कि अशरत ने यह षड्यंत्र क्यों रचा? बात वास्तव में यह थी कि वह ताहिरा से नाज़िम के विवाह में रुकावट उत्पन्न करना चाहती थी और इस काम के लिए उसने मुझे चुना और मैं अनजाने उसकी उद्देश्य पूर्ति का साधन बन गया। वह यह जानती थी कि वहीद इस सम्बन्ध की चर्चा नाज़िम से अवश्य करेगा। नाज़िम क्योंकि उसका हार्दिक मित्र है अतः वह विरोध करने के स्थान पर ताहिरा के प्रेम से हाथ खेंच लेगा किन्तु खेद कि अशरत के इस षड्यंत्र का परिणाम अति भयानक निकला और लाहौर का एक घराना नष्ट हो गया। मेरा ख्याल है कि अब अशरत ने प्रवीण को बहला फुसला कर मेरे विरुद्ध कर दिया है। ऐसा करने में उसका उद्देश्य यह होगा कि यदि प्रवीण से मेरा विवाह हो गया तो उसके बाते कार्य नग्न हो जायेंगे। और संसार को पता चल जायेगा

कि यह कीमती पहिले क्या-क्या कर्तव्य कर चुकी है ? और शमीम से उनका क्या सम्बन्ध है ? बस इतनी सी बात है । मुझे खेद है कि प्रवीण ने कुछ सूझ-बूझ से काम नहीं लिया और मेरे बारे में कोई अन्तिम निर्णय करने में बड़ी उतावली की । उचित यह था कि वह मुझे सफाई का अवसर देती । खैर, यह उसकी इच्छा है । मैं उसके बारे में और कुछ कहना नहीं चाहता ।'

नसरत ने वहीद की पूरी बात बड़े ध्यान से सुनी और उसे विश्वास हो गया कि अशरत ने प्रवीण को बहका दिया है और उन आरोपों में कोई तथ्य नहीं जो वहीद के विरुद्ध लगाए गए हैं । वह अशरत के स्वभाव से अच्छी तरह परिचित थी और जानती थी कि लगाने बुझाने में वह काफी होशियार है और उसने वहीद के विरुद्ध गलत आरोप लगा कर प्रवीण को उसके विरुद्ध कर दिया है ।

नसरत जब वहीद की बात सुन चुकी तो बोली—

'तो क्या आप प्रवीण से विवाह करना चाहते हैं ?'

'चाहता तो हूँ किन्तु प्रवीण की इच्छा के विरुद्ध नहीं । मैंने उसे यह कह दिया था कि मैंने तुम्हारे भाई के लिए जो दौड़ धूप की है उसके बदले में मैं तुम्हारा प्यार खरीदना नहीं चाहता किन्तु जब मुझे यह मालूम हुआ कि वह मुझे चाहती है तो मैं भी सहमत हो गया । मैं इससे पूर्व स्वयं भी उसे चाहता था किन्तु इस बारे में उस पर किसी प्रकार का बल प्रयोग भी नहीं करना चाहता था । अस्तु, मेरा तात्पर्य यह है कि हम दोनों में जो सम्बन्ध स्थापित हुआ था वह दोनों की समान सह-मति से हुआ था । आश्चर्य है कि बाद में प्रवीण ने अशरत की बातों पर कान धर कर मुझ से सम्बन्ध तोड़ लिया ।'

अभी ये बातें हो ही रही थीं कि एक नौकर ने अन्दर आकर कहा—

'हुजूर ! फोटो ग्राफर आ गया है ।'

'खलीक ने कहा—

'हाँ, हाँ, उसे अन्दर बुला लाओ ।'

नौकर के बाहिर जाने के बाद खलीक ने कहा—

'अरे मियाँ ! छोड़ों इन बातों को। मैंने फोटोग्राफर को बुलाया है वह हमारी तस्वीर लेगा। ये बातें तो बाद में भी होती रहेंगी।

इतने में फोटो ग्राफर अपना कैमरा लिए अन्दर आ गया। खलीक, नसरत और वहीद तीनों कुर्सियों पर बैठ गये और फोटोग्राफर उनका चित्र लेने लगा। खलीक और वहीद दोनों बैठे थे और नसरत मध्य में थी।

कोई दो मिनट के अन्दर-अन्दर फोटोग्राफर ने चित्र ले लिया और बोला—

'परसों इस चित्र की तीन कापियां आपको भेज दूंगा।'

खलीक ने कहा—

'बहुत अच्छा। किन्तु देखिये तस्वीर बड़ी साफ आए।'

फोटोग्राफर बोला—

'आप तसल्ली रखिये। तस्वीर बड़ी अच्छी आएगी।'

यह कहकर फोटोग्राफर चला गया। इसके बाद तीनों इधर उधर की बातें करते रहे। इतने में खाना आ गया और वे खाना खाने में लग गए।

१३

एक दिन शमीम अशरत के मकान पर पहुँचा तो वह वस्त्र बदल रही थी और कहीं जाने के लिये तैयार हो रही थी। शमीम ने उसे तैयार होते देखकर पीछे से कहा—

'क्यों साहब ! कहां की तैयारी है ?'

अशरत ने पीछे मुड़कर उसकी ओर देखा और मुस्कराती हुई बोली—

'तो क्या आप आ गए ? मैं केवल आप ही की प्रतीक्षा में थी।'

शमीम ने कहा—

'क्यों ? खैर तो है ?'

अशरत ने हंसते हुए कहा—

'आज तो कहीं घूमने फिरने को जी चाहता है। तुम भी साथ चलो।'

'मैं साथ चलने के लिये तैयार तो हूँ किन्तु यह कहिये निश्चय कहां चलने का है ?'

'सिनेमा देखेंगे आज।'

'किन्तु अभी तो पांच बजे हैं' और सिनेमा शुरू होते हैं कहीं सात बजे के बाद। अभी से चलने की क्या आवश्यकता है ?'

'मेरा तात्पर्य यह है कि सिनेमा देखने से पूर्व कुछ देर घूम फिर लें। काफी समय हुआ घूमे फिरे।'

'तो क्या फिर वही पुरानी आदत उभर आई ?'

अशरत ने मुस्कराते हुए कहा—

'कहीं पुरानी आदतें बदली भी जा सकती हैं ?'

'यह तो तुमने ठीक कहा है किन्तु मेरा ख्याल था कि शायद तुम पुरानी आदतों को छोड़ बैठी हो।'

'नहीं, यह बात नहीं। हां, मुझे गत जीवन में जो कटु अनुभव हुए हैं उन्होंने मुझे यही बताया है कि अपराध करने के लिये उचित ढंग चाहिये।'

शमीम ने एक उच्च अट्टहास किया और बोला—

'तो यों कहो कि अब तुम ढंग सीख गई हो।'

यह सुनकर अशरत भी हँसने लगी और बोली—

'हां, यही समझ लो।'

'अच्छा, सिनेमा आरम्भ होने में तो अभी दो घण्टे पड़े हैं। यह समय कहां काटें ?'

'बाजार में जरा घूमेंगे।'

'किताबों वाली दूकान में जाने का निश्चय है क्या ? किन्तु अब दूकानदार हमें चुराने नहीं देगा।'

'दूकानदार की ऐसी की तैसी। तुम मेरे साथ चलो तो सही।'

'मैं वहाँ नहीं जाऊंगा। दूकानदारों से झगड़ा करना ठीक नहीं है। तुम जहाँ भी जाओ, मैं तुम्हारे साथ चलूंगा किन्तु किताबों की दूकान पर नहीं जाऊँगा।'

अशरत हंसने लगी और बोली—

तो क्या तुर्की तमाम ? दूकानदार ने जरा आँखें दिखाई और तुम घबरा गए। मेरी ओर देखो कितनी अडिग हूँ।'

'साहब ! आपके क्या कहने ?'

'नहीं, मैं तो यों ही परिहास कर रही थी। किताबों की दूकान पर जाने का क्या काम है ?'

'फिर ये दो घण्टे कहाँ बिताएंगे ?'

'किसी होटल में बैठेंगे।'

'हां, यह बात उचित है।'

'वहां चाय आदि भी पियेंगे और कुछ समय गपशप भी रहेगी। इतने में सिनेमा का समय हो जाएगा।'

'हां, मेरा भी यही ख्याल है। किन्तु कार ले जाने की आवश्यकता नहीं। बाजार में कहां खड़ी करेंगे।'

'नहीं पैदल चलते हैं।'

'फिर चलिये। देर किस बात की है?'

यह सुनकर अशरत शमीम के साथ चल दी। जब प्रवीण के कमरे के सामने पहुँची तो द्वार पर रुक गई। प्रवीण अन्दर बैठी कुछ लिख रही थी। उसने अशरत को देखा तो बोली—

'चचीजान! कहां जा रही हो?'

अशरत ने कहा—

'शमीम के छोटे भाई का जन्मदिन है आज! मैं जरा उनके घर जा रही हूं और कोई नौ दस बजे आऊंगी। तुम खाना खा लेना। मेरी प्रतीक्षा न करना।'

प्रवीण ने कहा—

'बहुत अच्छा।'

अशरत शमीम के साथ चल दी और दोनों बाजार में पहुँच गए। बाजार की नुक्कड़ पर एक फोटोग्राफर की दूकान थी। दूकान के अन्दर और बाहर अनगिनत चित्र लगे हुए थे। अशरत ने शमीम की ओर देखते हुए कहा—

'चलो जरा फोटोग्राफर की दूकान में चित्र देखें।'

शमीम ने मुस्कराते हुए कहा—

'हां, हां, कोई हर्ज नहीं।'

दोनों दूकान में पहुँचकर चित्र देखने लगे। दूकान के भीतर फोटोग्राफर काले कपड़े की आड़ में किसी चित्र का नैगेटिव ठीक कर रहा था। अशरत और शमीम काफी देर तक दूकान में घूमते रहे और चित्र देखते रहे। इतने में अशरत की दृष्टि एक चित्र पर पड़ी और बोली—

'शमीम ! इधर आओ, तुम्हें एक चित्र दिखाऊं।'

शमीम उसके निकट आकर बोला—

'कौन सा चित्र है वह ?'

अशरत ने एक चित्र की ओर संकेत करते हुए कहा—

'जानते हो ये साहब कौन हैं ?'

शमीम हंस पड़ा और बोला—

'ये साहब ! वही किताबों की दूकान वाले आपके मित्र प्रोफेसर वहीद हैं और कौन हैं ? और हां, इनके साथ यह स्त्री और पुरुष कौन हैं ?'

'इन्हें भी पहचानो।'

'मैंने इन्हें कभी देखा ही नहीं पहचानने का प्रश्न ही कैसे पैदा हो सकता है ?'

अशरत ने उसके कान के निकट अपना मुंह कर धीरे से कहा—

'यों तो हैं प्रोफेसर वहीद और ये हैं मेरे दामाद खलीक और इन दोनों के बीच में है खलीक की पत्नी अर्थात् मेरी सौतेली बेटी नसरत।'

'तो इसका अर्थ यह है कि प्रोफेसर वहीद इन दोनों को भी जानते हैं।'

'हां, हां, यही बात मालूम होती है। नहीं तो एक जगह बैठकर यों बेझिझक चित्र उतरवाने का अर्थ क्या है ? मुझे पहले से मालूम नहीं था। आज ही मालूम हुआ है। मेरा ख्याल है यह चित्र प्राप्त कर लेना चाहिये।'

'आपके किस काम आएगा ?'

'यह चित्र मेरे बड़े काम आएगा। देख लेना।'

'बहुत अच्छा। फिर कर लो फोटोग्राफर से इस चित्र का मामला।'

फोटोग्राफर नेगेटिव को ठीक करने के बाद एक सन्दूकची में रख रहा था। अशरत ने उसकी ओर देखते हुए कहा—

'साहब यह फोटो हमें चाहिये।'

फोटोग्राफर कुर्सी से उठकर उसके पास आकर खड़ा हुआ और बोला—

'कौन सा फोटो ?'

अशरत ने चित्र की ओर संकेत करते हुए कहा—

'यह है वह चित्र किन्तु मुझे यह चित्र इस रूप में नहीं चाहिये।'

'किस रूप में चाहिये आपको ?'

अशरत ने वहीद और नसरत के चित्रों पर अँगुली रखते हुए कहा—

मुझे इन दोनों के चित्र चाहिये। इस तीसरे व्यक्ति का नहीं। आप इस तीसरे व्यक्ति को इस चित्र से यों लुप्त करें कि शेष केवल ये चित्र रह जाएँ और ऐसा प्रतीत हो कि इसमें कोई तीसरा व्यक्ति नहीं था। आपको यह चित्र तैयार करते समय जरा अपनी कला दिखानी होगी।'

फोटोग्राफर ने उसकी ओर सन्दिग्ध दृष्टि से देकते हुए कहा—

'आप मुझे अपना नाम बता दीजिये। जिन लोगों की यह फोटो है मैं उनसे पूछ लूँगा। यदि उन्होंने आज्ञा दी तो चित्र आपको दे दिया जाएगा। किसी का फोटो उसकी आज्ञा बिना किसी को कैसे दिया जा सकता है ?'

अशरत ने अपना बटवा खोलकर सौ रुपये का एक नोट निकाला और फोटोग्राफर को देती हुई बोली—

'इन सब बातों को छोड़ो और जैसा मैं चाहती हूँ यह फोटो तैयार कर दो।'

सौ रुपये का नोट देखकर फोटोग्राफर की प्रसन्नता से बाछें खिल गई। और मुस्कराता हुआ बोला—

'बहुत अच्छा। कल सवेरे तक आपकी इच्छानुसार चित्र तैयार हो जाएगा। आप अपना पता बता दीजिये मैं स्वयं फोटो लेकर आपके मकान पर आ जाऊँगा।'

अशरत ने काग़ज़ के एक पुर्जे पर अपना पता लिख दिया और

शमीम से बोली—

'चलो, अब होटल चलकर चाय पियें।'

शमीम ने कदम आगे बढ़ाते हुए कहा—

'तुमने खामखा सौ रुपये नष्ट किये। भला इस चित्र की तुम्हें क्या आवश्यकता थी ?'

अशरत ने मुस्कराते हुए कहा—

'मैंने खर्च तो सौ रुपये किये हैं किन्तु यह चित्र मुझे हज़ारों का लाभ पहुंचाएगा।'

'वह कैसे ?'

'यह मैं तुम्हें फिर बताऊँगी। अभी इसका समय नहीं।'

दोनों चलते-चलते एक रैस्टोरां में पहुँचे। यह रैस्टोरां एक बहुत बड़े हाल और लकड़ी के बने हुए दस बारह कैबिनों पर आधारित था। हाल मध्य में था और कैबिन उसके दोनों ओर। कैबिनों के आगे स्याह पर्दे लटके हुए थे। अशरत और शमीम एक कैबिन में बैठ गए और बैरे को चाय का जोर दिया।

शमीम ने कुर्सी पर बैठते हुए कहा—

'उस दिन तुमने वहीद को खूब शीशे में उतारा।'

अशरत ने हँसते हुए कहा—

'इससे पहिले मैं प्रवीण को उतार चुकी थी।'

'यह सिर खपी तुमने की क्यों ?'

'इसलिये कि ये दोनों एक दूसरे को चाहते थे किन्तु मैं इनके इस मेल मिलाप को पसन्द नहीं करती थी। मैंने कुछ इस प्रकार से इन्हें एक दूसरे का विरोधी कर दिया कि इन्हें मेरे षड़यंत्र का आभास तक न हो सका। मेरी बुद्धि की दाद दो तुम।'

'हाँ, काम तो प्रशंसनीय ही है। किन्तु तुमने यह सब कुछ किया क्यों ? क्या इसमें कोई भेद था या इस प्रकार तुमने अपनी एक आदत को पूरा किया ? यह कहकर शमीम ने एक अट्टहास किया।

अशरत ने कुछ सोचते हुए कहा—

'इसमें एक भेद था।'

'क्या ?'

'यही कि यदि इन दोनों का विवाह हो गया तो मेरी सारी पोल खुल जाएगी और इसके साथ ही तुम्हारी भी। अब तो सब को यही मालूम है कि तुम मेरे फुफेरे भाई हो यदि वहीद का आना जाना घर में हो जाता तो इस बनावटी सम्बन्ध का पर्दा उठ जाता और सबको पता चल जाता कि मैं और तुम वास्तव में हैं कौन ? बस इसीलिये मुझे यह सब कुछ करना पड़ा।'

'बड़ी दूर की सोची तुमने ? वास्तव में तुम्हारी बुद्धि की पहुंच बहुत दूर तक है और फिर तुमने यह काम कुछ इस सफाई से किया है कि तुम्हें दाद देने को जी चाहता है। न प्रवीण को इस षड़यंत्र का ज्ञान हो सका और न वहीद को। बल्कि वे यही समझते रहे कि तुम उन दोनों में एक कड़ी का स्थान रखती हो। हालांकि बात इसके विपरीत है। वहीद के बारे में तो मैं जानता नहीं किन्तु प्रवीण तो अब तक तुम्हारा यश गाती है और उसे यह संदेह तक नहीं हो सकता कि सारा काम बिगाड़ने वाली तुम ही हो।'

अशरत ने अट्टहास करते हुए क़हा—

'बल्कि वह अब तक यह समझे हुए हैं कि मैं उसकी और वहीद की शादी के पक्ष में हूँ।'

शमीम ने चाय बनाकर प्याली अशरत की ओर सरका दी और बोला—

'किन्तु यह बात अब तक मेरी समझ में नहीं आई कि चित्र पर तुमने सौ रुपये क्यों नष्ट किये ?'

'हज़रत ! ये रुपये मैंने नष्ट नहीं किये। एक बड़े लाभ के काम पर लगाए हैं।'

'वह काम क्या है ? मुझे भी तो बताओ।'

'काम वही है जिसका हम दोनों में अब तक चर्चा होता रहा है। रहा यह प्रश्न कि चित्र का उपयोग कैसे होगा तो यह मैं तुम्हें फिर बताऊँगी।'

दोनों कोई आध घन्टे तक उस कैबिन में बैठे एक दूसरे से छेड़-छाड़ करते रहे। जो लोग आस-पास के कैबिनों में बैठे थे वे उनकी इस छेड़ छाड़ को देख रहे थे। रैस्तोरां के मैनेजर को भी यह ज्ञात था। अन्त में जब ये अपनी बदतमीजियों से बाज न आए तो उसने कागज के एक पुर्जे पर कुछ लिखकर बैरे को उनके पास भेजा। अशरत ने वह काग़ज़ पढ़ा और फाड़ कर एक ओर फेंक दिया। शमीम ने पूछा—

'क्या लिखा था ?'

अशरत ने कहा—

'लिखा था, होटल में बैठे हुए लोगों को आपके आपसी हँसी मजाक पर आपत्ति है।'

शमीम ने कहा—

'वाह, यह भी खूब रहा। जैसे होटलों में बैठकर हँसी मजाक करना भी आपत्ति जनक है। लोग होटलों में आते किस लिये हैं ? ये तो ऐसे स्थान होते हैं जहाँ हँसी मजाक के सिवा और कुछ होता ही नहीं।'

'देख लो अब कितने उदार हृदय लोग हैं ये। खैर छोड़ो। भविष्य में इस होटल में नहीं आएँगे।'

शमीम ने अपनी रिस्टवाच की ओर देखते हुए कहा—

'सिनेमा आरम्भ होने में अब केवल आध घण्टा शेष है। वहाँ पहुँचते-पहुँचते बीस मिनट लग जाएंगे। मेरा ख्याल है अब हमें चलना चाहिए।'

'हाँ, मेरा भी अब यही ख्याल है।'

इसके बाद दोनों उठ खड़े हुए और बिल चुकाकर बाहर के द्वार की ओर बढ़े। सब लोगों की दृष्टि उनकी ओर थी। एक व्यक्ति ने अपने साथियों से कहा—

'मालूम नहीं, आजकल के युवक पत्नियों को लेकर होटलों में क्यों आ जाते हैं ?'

शमीम ने होटल के द्वार से बाहर निकलते हुए कहा—

'सुना तुमने क्या कहा उन साहब ने ?'

अशरत ने अट्टहास करते हुए कहा—

'हां, सुन लिया है।'

'ये साहब हमें पति पत्नी समझे बैठे हैं।

'हां, तो उन्होंने ऐसा ख्याल करने में कोई गलती तो नहीं की ?

'तो क्या हम पति पत्नी हैं ?'

'तो क्या तुम पति पत्नी उन लोगों को ही समझते हो जिन्हें धर्म एक दूसरे से बांध दे ? मेरे निकट पति पत्नी का लक्षण इससे भिन्न है।' अशरत ने मुस्कराते हुये कहा—

'अर्थात् ?'

'अर्थात् यह कि यदि एक पुरुष और एक स्त्री अपने तौर पर आपस में सम्बन्ध स्थापित कर लें तो वे पति पत्नी हो गए हैं। और इस बारे में धार्मिक अथवा सामाजिक बन्धन व्यर्थ हैं। अब लोग तो मुझे मियां कमर-उद्दीन की पत्नी समझते हैं किन्तु मैं अपने आपको तुम्हारी पत्नी समझती हूँ। अब तुम ही कहो कि मैं किस की पत्नी हूं ? मेरे बारे में लोगों की सम्मति सही है या स्वयं मेरी ?'

शमीम ने कहा—

'हां, यह तो तुमने सही कहा है। पत्नी तुम उसकी हो जिसे तुम अपना पति समझो। यदि लोग तुम्हें किसी अन्य व्यक्ति की पत्नी समझे हुए हैं तो यह उनकी भूल है।'

यह सुरकर अशरत खिलखिलाकर हंस पड़ी और उसके साथ शमीम भी हंसने लगा। दोनों चलते-चलते कोई आध घण्टे में सिनेमा पहुँचे। मालूम हुआ कि सिनेमा का शो आरम्भ हुए दो तीन मिनट हुए हैं। इन्होंने जल्दी-जल्दी रिजर्व क्लास के टिकट खरीदे और सिनेमा में प्रविष्ट

हुए। चित्रपट तो प्रोजेक्टर से निकलने वाली तीव्र किरणों से प्रकाशित था किन्तु सिनेमा हाउस में चारों ओर घुप अंधेरा था। दोनों टटोलते हुए आगे बढ़ते गए। एक स्थान पर उन्हें दो सीटें खाली दिखाई पड़ीं और वे उन पर बैठ गए। अशरत के एक ओर कोई नवयुवक बैठा था। उसने अशरत की ओर का हाथ कुर्सी के हत्थे पर रखा हुआ था। अशरत ने भी उतावली से अपना हाथ वहीं टेक दिया किन्तु जैसे ही उसके हाथ का उस युवक के हाथ से स्पर्श हुआ उसके शरीर में सनसनाहट सी दौड़ गई और उस ने जल्दी से अपना हाथ उठा लिया। यह सनसनाहट कुछ विचित्र सी थी। अशरत ने उतावली में हाथ खेंच तो लिया किन्तु बाद में उसका मन यही चाहा कि फिर अपना हाथ कुर्सी पर रखे। उसकी दृष्टि चित्रपट पर थी किन्तु ध्यान किसी और तरफ था। उसने धीरे से अपनी कुहनी हत्थे पर टेक दी और हाथ उस पर फैला दिया। उस युवक का हाथ अभी तक वहीं था। वह चित्र देखने में लीन था। अशरत का हाथ उसके हाथ से लगा। युवक ने अपना हाथ पीछे की ओर सरका लिया। अशरत ने हाथ फिर बढ़ा दिया। धीरे-धीरे दोनों के हाथ पुनः मिल गए। युवक ने कोई हरकत न की। हाँ, उसे यह अवश्य उलझन हुई कि इन श्रीमती का हाथ उसके हाथ का पीछा क्यों कर रहा है ? उसने अपना हाथ फिर सरकाना चाहा किन्तु यह सोचकर चुप रहा कि यदि उसने हाथ खेंच लिया तो उसके पौरुष पर धब्बा लगेगा। अशरत ने उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया। कुछ देर के बाद दोनों हाथों की झिझक और खुली और वे एक दूसरे से खेलने लगे। शमीम को इसका कुछ पता न था। वह अशरत का दूसरा हाथ अपने हाथ में थामे हुए था और कभी-कभी उस का हाथ अशरत के शारीरिक उतार चढ़ाव तक भी पहुंच जाता था। ये तीनों प्रकट रूप से फ़िल्म देखने में लीन थे किन्तु वास्तव में उन्होंने एक और नाटक आरम्भ कर रखा था।

सहसा मध्यावकाश हुआ और सिनेमा हाउस में तीव्र प्रकाश फैल गया। अशरत यह देखकर चकित रह गई कि उसके बाईं ओर बैठा युवक वहीद था। लज्जा से उसके नेत्र झुक गए। वहीद मुस्कराया और उसकी ओर से मुँह फेर कर बैठ गया। शमीम ने भी वहीद को देख लिया और अशरत के कान में कहने लगा—

'प्रोफेसर वहीद साहब बैठे हैं।'

अशरत ने धीरे से कहा—

'हाँ, देख लिया है मैंने ! कमबख्त ने खेल का मजा किरकिरा कर दिया है।'

'क्या निश्चय है फिर ?'

'निश्चय यही है कि अब उठकर यहाँ से चल दें। उसे यहाँ देखकर मुझे कोफ्त सी हो रही है।'

'हाँ, हाँ, मेरा भी यही ख्याल है। तो चलो, उठो चलें।'

दोनों उठ खड़े हुए और सिनेमा हाउस से निकल गए। वहीद भी मन ही मन लज्जित हो रहा था। अब वे दोनों बाहिर चले गये तो उसने शुक्र किया कि इस आफत से जान छूटी। अशरत शमीम के साथ सड़क के एक ओर चल रही थी और मौन थी। वह मन ही मन सोच रही थी कि यह बहुत बुरा हुआ है। वहीद को उसके बारे में सब कुछ पता चल गया है। उसे न केवल उसके और शमीम के सम्बन्धों का पता चल गया होगा अपितु उसके हाथ बढ़ाने से उसके चरित्र पर भी प्रकाश डाल दिया है।'

शमीम ने उसे मौन देखकर कहा—

'क्या बात है तुम चुप हो ?'

अशरत ने घबराए हुए स्वर में कहा—

'वहीद ने हम दोनों को सिनेमा में देख लिया है। वह अवश्य हम पर कोई न कोई आरोप लगाएगा।'

शमीम ने अट्टहास करते हुए कहा—

'तुम भी कमाल करती हो। बस इतनी सी बात से डर गईं ? अभी तो तुम मेरी पत्नी होने का दावा कर रही थीं और अब यह कह रही हो कि वहीद हमारे विरुद्ध कोई आरोप लगाएगा। पति पत्नी के विरुद्ध क्या आरोप लगाया जा सकता है ?'

अशरत ने कहा—

'शमीम ! बात वास्तव में यह है कि संसार मुझे तुम्हारी पत्नी नहीं समझता।'

'किन्तु इस बात का तो तुम्हारे पति और प्रवीण को भी ज्ञान है कि तुम मेरे साथ प्रायः सिनेमा देखने जाती हो ? वे मुझे फुफेरा भाई समझते हैं। यदि वहीद ने हम दोनों को सिनेमा में देख लिया तो घबराने की कौन सी बात है ?'

अशरत के पास शमीम की इस बात का कोई उत्तर न था। वह चुप हो रही। वास्तव में वह अपने उस दुर्व्यवहार के कारण घबरा रही थी जो उसने सिनेमा हाउस में वहीद का हाथ अपने हाथों में लेकर प्रकट किया था। वह यह समझ रही थी कि उसका वह दुर्व्यवहार उसके चरित्र को नग्न करने के लिए पर्याप्त है और उसकी गर्दन सदा के लिये उसके सामने झुक गई है। किसी पराए और अनजान व्यक्ति का हाथ सिनेमा हाउस में थाम लेना इस बात का प्रमाण था कि शमीम से भी उसके सम्बन्ध उचित नहीं।

शमीम ने उसे चुप देखकर कहा—

'अशरत ! आज मुझे पहिली बार पता चला कि तुम भी साधारण स्त्रियों की तरह वहमी हो। भला यह भी कोई घबराने की बात है। जो बात तुम्हारा पति जानता है उसका पता यदि वहीद को भी चल गया तो चलता रहे। तुम क्यों परेशान हो रही हो।'

दोनों बातें करते हुए कोठी के द्वार पर पहुँच गए। शमीम द्वार पर रुकता हुआ बोला—

'अब मुझे इजाजत दो। मैं जाता हूँ।'

अशरत ने कहा—

'बहुत अच्छा। खुदा हाफिज।'

यह सुनकर शमीम अपने घर की ओर चल दिया और अशरत अपने कमरे में आकर सोने की तैयारी करने लगी।

१४

❖❖❖❖

एक दिन सायं समय नसरत प्रवीण के मकान पर पहुँची। प्रवीण भी उसी समय कहीं बाहिर से आई थी और वस्त्र बदल रही थी। नसरत ने कमरे में प्रवेश करते हुए कहा—

'आदाब अर्ज करती हूँ।'

प्रवीण ने पीछे मुड़ कर देखा तो नसरत खड़ी थी। वह उसे देख कर बोली—

'अहा, नसरत बहिन! आप कहाँ से रास्ता भूल कर आ गईं? प्रलय की प्रतीक्षा करवाई आपने पूरा एक महीना हो गया और आपने शक्ल तक न दिखाई। कहीं मुझ से कोई अपराध तो नहीं हो गया? यदि कोई ऐसी ही बात है तो मैं क्षमा माँगने को तैयार हूँ।'

नसरत ने मुस्कराते हुए कहा—

'नहीं ऐसी तो कोई बात नहीं किन्तु अपराध तुमने अवश्य किया है।'

प्रवीण ने काना-फूसी के स्वर में कहा—

'क्या अपराध हुआ है मुझ से?'

नसरत ने कहा—

'परेशान होने की कोई बात नहीं। तुम जरा कपड़े बदल लो फिर तुम से विस्तार के साथ बात करूंगी।'

प्रवीण ने जल्दी-जल्दी वस्त्र बदल लिये और उसके सामने आकर कुर्सी पर बैठ गई। नसरत ने कुछ परिहास के स्वर में कहा—

'आज तुमसे मुझे बहुत सी शिकायतें करनी हैं।'

इसके बाद उसने कमरे के द्वार की ओर देखा। प्रवीण ने कहा—

'यहाँ कोई आदमी नहीं है। चचीजान का कमरा यहाँ से बहुत दूर है। और मेरा ख्याल है कि इस समय वह शायद घर में भी नहीं हैं। क्योंकि हर रोज शाम को वे कहीं टहलने के लिये निकल जाती हैं और कोई आठ साढ़े आठ बजे लौट कर आती हैं। इस समय कोई साढ़े सात बजे हैं और उनके आने में अभी एक घण्टा और है। हाँ, तो कहिये क्या शिकायत करना चाहती हैं आप मुझसे ?'

नसरत ने गम्भीरता से कहा—

'वहीद के बारे में तुमने मुझे जो कुछ कहा था वह अक्षर-अक्षर गलत सिद्ध हुआ।'

'क्या वहीद से आप मिली थीं ?'

नसरत ने थोड़ा रुककर कहा—

नहीं, मैं मिली तो नहीं किन्तु मैंने एक और मार्ग से सारे मामले की छानबीन करवाई है। और इस परिणाम पर पहुंची हूँ कि अशरत ने तुम्हें पथभ्रंश किया है।'

'उन्होंने मुझे पथभ्रंश कैसे किया है ? उन्होंने तो इस बात पर जोर दिया था कि मुझे उनसे विवाह कर लेना चाहिये।'

'यह विचित्र बात है कि एक तरफ तो उन्होंने तुम्हें वहीद से विवाह करने की सम्मति दी और दूसरी ओर उन्होंने वहीद के दुश्चरित्र की लम्बी चौड़ी सूचि तुम्हारे सामने रख दी। यदि वे वास्तव में इस बात के पक्ष में थीं कि तुम्हारा विवाह वहीद से हो जाए तो उन्हें चाहिये था कि वह उनके दोषों पर पर्दा डालतीं। किन्तु यह विचित्र बात है कि तुम्हें तैयार करने के साथ उन्होंने वहीद के वे दोष भी गिनवा दिये जो उनमें कदापि नहीं हैं। अब मैं कैसे समझ लूं कि अशरत ने तुम्हें पथ-भ्रंश नहीं किया। बात वास्तव में यह है कि तुम एक सीधी सादी लड़की हो और तुम्हें उस स्त्री के हथकंडों का कोई ज्ञान नहीं।'

प्रवीण कुछ देर तक चुप बैठी रही। फिर बोली—

'यह तो नसरत बहिन आपने सही कहा है कि मैं एक सीधी सादी लड़की हूँ और स्त्रियों के चरित्र नहीं जानती किन्तु यह मैं आपको विश्वास दिलाती हूँ कि वहीद की एक कमजोरी स्वयं मेरे देखने में आई। जिस के आधार पर मैंने चचीजान की बातों पर विश्वास कर लिया।'

'वह क्या कमजोरी देखी आपने ?'

'वह यह कि वहीद ने जब भी अशरत की चर्चा छेड़ी तो उन्होंने यही कहा कि मैं उन्हें नहीं जानता। हाँ, वे यह अवश्य कहते रहे कि नाजिम भाई के विरुद्ध जो षड्यन्त्र किया गया था उसमें अशरत का हाथ था किन्तु जब मैंने उन्हें खाने पर बुलाया तो यह भेद खुला कि वे पहिले से एक दूसरे के परिचित हैं। और अशरत चची ने उनके सामने बीती मुलाकातों की चर्चा की और वे इनकार न कर सके। इसका अर्थ यह था कि उन्होंने अशरत चची के बारे में मुझसे झूठ बोला। बस, इसी से मैंने यह समझ लिया कि यदि उन्होंने यह बात मुझ से छुपाई है तो और कई बातें भी उन्होंने मुझ से छुपा रखी हैं।'

नसरत ने कहा—

'वहीद ने तुम से जो यह कहा था कि वे अशरत को नहीं जानते तो उन्होंने सही कहा था। उन्होंने अशरत को एक दूकान पर दो एक बार अवश्य देखा था किन्तु उन्हें कदापि ज्ञान न था कि उसका नाम अशरत है या वह नाजिम भाई की होने वाली पत्नी है। अब तुम ही बताओ कि वे यह कैसे कह देते कि अशरत को जानता हूँ।'

प्रवीण के पास इसका कोई उत्तर न था। वह कुछ देर सोचती रही फिर बोली—

'हाँ, यदि यह बात है तो फिर मेरे ख्याल में वे यह कह सकते थे कि मैं अशरत को नहीं जानता। किन्तु अशरत चची ने उनके विरुद्ध जो आरोप लगाए हैं वे बड़े संगीन हैं।'

'यह और बात है कि ये आरोप संगीन हैं या नहीं। इसका उत्तर

मैं बाद में दूंगी किन्तु अब तुम यह बताओ कि यदि वहीद ने तुमसे यह कह दिया कि मैं अशरत को नहीं जानता तो उसने क्या भूठ बोला ?'

'फिर तो उन्होंने कोई भूठ नहीं बोला।'

'यह बात तो हो गई साफ। अब यह कहो कि जो स्त्री किसी दूसरी स्त्री को प्रकट में किसी पुरुष से विवाह करने को तैयार करती है किन्तु उसके साथ ही वह उस व्यक्ति की भूठी सच्ची बुराइयों की चर्चा भी करती है तो इसका अर्थ क्या है ?'

'यही होता है कि वह उस व्यक्ति से विवाह न करे।'

'तो समझो, दो बातों के बारे में तुम्हारी तसल्ली हो गई। रहा यह मामला कि अशरत ने वहीद के विरुद्ध अक्षम्य आरोप लगाए हैं उन्हें झुठलाया अथवा सिद्ध कैसे किया जा सकता है ? वे आरोप सिद्ध तो शायद अब तक नहीं हो सके। तुमने केवल अशरत की सुनी हुई बातों पर विश्वास कर लिया हालांकि तुम्हें ऐसा करना नहीं चाहिये था। इन अक्षम्य आरोपों को झुठलाने के बारे में कुछ कहना नहीं चाहती। हाँ, तुमसे यह अवश्य कहूँगी कि इन आरोपों पर विचार करने के पूर्व अशरत और वहीद के बारे में अपने व्यक्तिगत अनुभवों को सामने रखो। अशरत के बारे में तुम यह जानती हो कि भावज के रूप में उसने तुम्हारे घर में क्या गुल खिलाए। इसी प्रकार वहीद के बारे में तुम्हें यह ज्ञात है कि उसने नाजिम भाई के लिये क्या कुछ किया ? आश्चर्य है कि तुमने सुनी सुनाई बातों पर तो विश्वास कर लिया और अपने अनुभव को भूल गईं। अशरत के बारे में तुम यह भली प्रकार जानती हो कि वह एक बिगड़े स्वभाव की झगड़ालु और षड़यंत्रकारिणी स्त्री है किन्तु आश्चर्य है कि उसे तो तुमने पारसा समझ लिया और उसके कहने से एक ऐसे व्यक्ति के विरुद्ध हो गईं जो सद्व्यवहारपूर्ण, सच्चा और मित्रों का मित्र है।'

प्रवीण अत्यन्त लज्जित हो रही थी। उसके पास नसरत की बातों का कोई उत्तर न था। जब वह काफी समय तक चुप रही तो नसरत ने

फिर कहा—

'प्रवीण ! मैंने जो कुछ कहा है, सुना तुमने ?'

प्रवीण ने लज्जापूर्ण स्वर में कहा—

'हाँ, सुना है ।'

'मैं यह पूछती हूँ कि अशरत को अनेक बार जानने और परखने के बाद भी तुमने यह क्यों अनुमान कर लिया कि वह सदा सत्य बोलती है और वहीद के विरुद्ध उसने जो कुछ कहा है सत्य है । इसी प्रकार वहीद के व्यवहार और सहानुभूति को परखने पर भी तुमने यह क्यों समझ लिया कि वह मक्कार, आवारा और कामुक व्यक्ति है ? क्या तुम्हारे प्रेम की माँग यही थी कि अपने होने वाले पति के विरुद्ध बातें सुनकर उनपर विश्वास कर लेती और उनकी परख की आवश्यकता न समझतीं ? और फिर तुमने बातें भी ऐसी स्त्री से सुनीं जो उसकी शत्रु है ।'

'किन्तु अशरत चची को वहीद से क्या शत्रुता हो सकती है ?'

'क्या तुमने अशरत से यह नहीं कहा कि वहीद तुम्हें बुरा समझता है और कहता है कि नाज़िम के विरुद्ध जो षड़यंत्र तैयार किया गया था उसमें तुम्हारा हाथ था ?'

'हाँ, कहा था ।'

'तो क्या यही बात शत्रुता उत्पन्न करने के लिये पर्याप्त नहीं ? आश्चर्य है कि तुमने स्वयं ही अशरत और वहीद में शत्रुता का बीज बोया और फिर पूछ रही हो कि अशरत को वहीद से क्या शत्रुता हो सकती है ? जब वह यह जानती है कि वहीद उसे अच्छा ख्याल नहीं करता और उसे नाज़िम की मृत्यु का अभियुक्त मानता है तो वह कैसे उसे बुरा न समझेगी ? और यह देखना सहन कर लेगी कि तुम्हारा विवाह उससे हो जाए । यह सारा खेल उसने रचाया ही इसलिये है कि तुम दोनों की शादी को रोका जाए सो वह सफल हो गई और तुमने उसकी मक्कारियों का शिकार होकर एक ऐसे सद्भावनापूर्ण और सत्पुरुष को बेगाना बना लिया जिसे तुम चाहती थीं । मालूम नहीं यह प्यार किस प्रकार का था

जो किसी के कहने सुनने से समाप्त हो गया। मैं तो ऐसे प्यार की कायल नहीं हूँ।'

प्रवीण अत्यन्त लज्जित हो रही थी और उसे यह अनुभव हो रहा था कि उसने वहीद से बिगाड़ कर बहुत बड़ी भूल की है। उसने उसके अहसानों का बदला बुराई में दिया है। उसका यह ख्याल था कि अशरत बहुत कुछ बदल चुकी है और उसने अपनी बुराइयों का सुधार कर लिया है। यही कारण था कि उसने उसकी कही हुई बातों पर विश्वास कर लिया था किन्तु आज जब उसने नसरत के प्रमाणों के प्रकाश में पुनः इस मामले पर विचार किया तो उसे अशरत का चरित्र और भी भयानक प्रतीत हुआ और वहीद उसे पहिले से भी अधिक भोला और सत्पुरुष प्रतीत होने लगा। वह अब यह सोच रही थी कि उसने वहीद के बारे में सुनी हुई बातों पर विश्वास क्यों कर लिया ? क्या यह उसके प्यार की कमी का परिणाम था ? या उसके लिये उसकी सादगी और अनुभवहीनता उत्तरदायी थे। उसने वास्तविक कारण जानने का यत्न किया किन्तु किसी परिणाम पर न पहुंच सकी। नसरत ने फिर उससे पूछा—

'तो क्या राय है अब तुम्हारी ?'

प्रवीण के नेत्रों से अश्रु गिरने लगे और बोली—

'मैं अपनी गलतियों को मानती हूँ। मुझे उन बातों पर विश्वास नहीं करना चाहिये था। मैं लज्जित हूँ कि मुझसे यह भूल हो गई।'

नसरत ने मुस्कराते हुए कहा—

'यदि तुम्हें अपनी भूल का खेद है तो यह बिगड़ा हुआ मामला फिर बन सकता है किन्तु मैं चाहती हूँ कि तुम इस मामले पर अच्छी तरह विचार कर लो। ऐसा न हो कि तुम फिर इसी प्रकार के अनिश्चय का प्रमाण दो। सत्य बात यह है कि यदि वहीद के स्थान पर मैं होती तो आयु भर तुमसे न मिलती। किन्तु वे बेचारे कुछ इस प्रकार के सज्जन व्यक्ति हैं कि वे अब भी तुम्हारे व्यवहार को भूलने को तैयार हैं। तुम

तो उन्हें भूल गई हो किन्तु वे अभी तक तुम्हें नहीं भूले हालांकि इसका प्रमाण तुम्हें देना चाहिये था। यह साधारणतया देखा गया है कि ऐसे रिश्तों और नातों में अनेक बार पुरुष इनकार कर बैठते हैं किन्तु स्त्री जब एक बार किसी को हृदय दे देती है तो फिर पीछे नहीं हटती। स्त्रियों में शायद यह शक्ति तुम्हें ही प्राप्त हुई है कि एक पुरुष को अपना पति चुनकर उसे धता बता दिया। इस प्रकार न केवल तुम ने वहीद का मन तोड़ा अपितु अपने स्वर्गीय पिता की आत्मा को भी चोट पहुंचाई। जो वास्तव में इस सम्बन्ध के प्रेरक थे।'

यह सुनकर प्रवीण रोने लगी और बोली—

'बहिन ! वास्तव में मैंने बहुत बड़ी भूल की है और एक ऐसे अपराध की पात्र हुई हूँ जो अक्षम्य है। खुदा के लिये इस मामले में मेरा मार्ग दर्शन करो ताकि मैं अपनी भूलों को दूर कर सकूँ।'

नसरत ने अति गम्भीरता से कहा—

'प्रवीण ! तुम हर मामले में उतावली करने की आदी हो। जिस किसी से कुछ सुनती हो उस पर विश्वास कर लेती हो। यदि तुममें यह कमी न होती तो आज तुम्हें इन घटनाओं का सामना न होता। तुम मेरी बातों पर भी विश्वास न करो। अवकाश के समय स्वयं इस सारे मामले पर विचार करो और देखो कि मैंने जो कुछ कहा है वह सही है अथवा नहीं। यदि सही सिद्ध हो तो उसे काम में लाओ अन्यथा उसे ठुकरा दो। मैं तुमसे आज इस बात का उत्तर नहीं मांगती। कल तक इस पर विचार करो और फिर मुझे बताओ कि तुम्हारी सम्मति क्या है ? तुमने वास्तव में यही समझा कि अशरत ने तुम्हें पथभ्रष्ट किया है और वहीद के बारे में तुम्हारा गत व्यवहार गलत था तो फिर मैं यत्न करूँगी कि तुम दोनों के सम्बन्ध ठीक हो जाएँ।'

'तो क्या आप वहीद से परिचित हैं ?'

यह प्रश्न नसरत के लिये बड़ा विचित्र था। वह यदि यह कहती कि वह वहीद को जानती है तो प्रवीण को यह सन्देह हो सकता था कि वह

केवल व्यक्तिगत सम्बन्धों का विचार करते हुए उसकी सफाई दे रही है। इसके अतिरिक्त वह उससे यह भी कह चुकी थी कि वह वहीद को नहीं जानती। इसलिये अब वह कैसे कह सकती थी कि वह वहीद को जानती है! उसने प्रवीण की बात का उत्तर देते हुए कहा—

'एक बार कह तो चुकी हूँ कि मैं वहीद को नहीं जानती। हाँ, मैंने किसी के द्वारा इस सारे मामले की जाँच करवा ली है। अब यदि तुमने पुराने सम्बन्ध को स्थिर रखने का निश्चय कर लिया है तो फिर मैं उसी के द्वारा काम लूँगी और तुम दोनों के सम्बन्ध स्थापित करवाने का यत्न करूँगी।'

'तो क्या मैं कल तक आपको अपने निर्णय से सूचित कर दूँ?'

'हाँ, मेरा यही ख्याल है। तुम अच्छी तरह इस बारे में विचार कर लो। मैं कल पिछले पहर तुम्हारे पास आऊँगी। उस समय तुम मुझे अपना निर्णय बता सकोगी।'

'बहुत अच्छा।'

यह सुनकर नसरत उठ खड़ी हुई और बोली—

'मैं अब जाती हूँ। खुदा ने चाहा तो कल फिर आऊंगी।'

नसरत यह कहती हुई कमरे से निकल गई। उसके जाने के बाद प्रवीण ने इस विषय पर सोच विचार करना आरम्भ किया। वहीद के बारे में उसकी अनुभूतियाँ उसके सामने आ गईं और उनके प्रकाश में उसने यही सम्मति स्थिर की कि वह एक उच्च चरित्र का व्यक्ति है और उसे हृदय से चाहता रहा है। फिर उसने अशरत के बारे में सोचना आरम्भ किया। जिस प्रकार वह उनके घर में भावज के रूप में आई। जिस प्रकार उसने घर में अनेक प्रकार के झगड़े खड़े किये और उसका तथा उसके स्वर्गीय पिता का अपमान किया ये सब घटनाएं एक-एक कर उसके नेत्रों में घूम गईं। फिर उसने अशरत को जीवन के इस नए दौर में देखा। अब वह उसकी चची थी और अत्यन्त कोमल स्वभाव तथा द्रवण शील हृदय की स्त्री दिखाई पड़ती थी। इन दोनों युगों के मध्य

प्रवीण को कुछ ऐसी परिस्थितियाँ दृष्टि गत हुईं जिन्होंने अशरत को बदलने पर विवश कर दिया। वे परिस्थितियाँ क्या थीं ? प्रवीण और वहीद का प्यार और शमीम तथा अशरत का सन्दिग्ध मेल। पर्याप्त विचार-विमर्श के उपरान्त प्रवीण इस परिणाम पर पहुंची कि अशरत ने अपने और शमीम के मेल जोल पर पर्दा डालने के लिये उनके प्यार को समाप्त करने का यत्न किया है।

प्रवीण ने नसरत के मुख से जो प्रमाण सुने थे उनपर भी उसने पर्याप्त विचार-विमर्श किया और उसने यही सम्मति स्थिर की कि किसी स्त्री को किसी पुरुष से विवाह करने के लिये तैयार करने को उसकी विशेषताओं की चर्चा की जाती है न कि बुराइयों की। अशरत ने वहीद की झूठी सच्ची बुराइयों की चर्चा करके वास्तव में इस सम्बन्ध को समाप्त करने का यत्न किया है। इसे पूर्ण करने का नहीं।'

प्रवीण कोई एक घण्टे तक इस विषय पर विचार करती रही और अन्त में इस परिणाम पर पहुंची कि उसने अशरत के षड़यन्त्र का शिकार होकर वहीद से बिगाड़ ली है और यह उसने अच्छा नहीं किया। अशरत ने बदला लेने के लिये यदि कोई उपाय सोचा था तो उसे इस काम में उसके हाथ का शस्त्र नहीं बनना चाहिये था।

प्रवीण को अपनी नादानी और दुर्व्यवहार पर बहुत खेद हो रहा था किन्तु अब पश्चात्ताप करना व्यर्थ था। उसे वहीद की मित्रता और सद्व्यवहार पर विश्वास हो चुका था और चाहती थी कि उसके निकट जाकर क्षमा माँग ले किन्तु अकेली जाते हुए उसे लाज सी आती थी। इस लिये उसका यह विचार था कि नसरत द्वारा पहिले दोनों में सन्धि हो जाए फिर वह वहीद से गिड़गिड़ा कर क्षमा माँग ले और उसे अपने प्यार का विश्वास दिला दे।

१५

◆◆◆◆

नसरत के जाने के एक घण्टे के बाद अशरत प्रवीण के कमरे में प्रविष्ट हुई। वह अपने विचारों में खोई हुई थी। अशरत उसे देख कर मुस्कराती हुई बोली—

'प्रवीण ! किस बात पर विचार हो रहा है ?,

प्रवीण कुछ घबरा सी गई और बोली—

'चची जान ! कोई ऐसी बात नहीं है ।'

'कोई ऐसी बात क्यों नहीं ? तुम इस समय एक बड़ी आवश्यक बात पर विचार कर रही हो ।'

प्रवीण की घबराहट और अधिक हो गई और बोली—

'कौन सी आवश्यक बात चची जान !'

'बस यही कि मैं ने वहीद के बारे में जो कुछ कहा गलत है मैं परले दर्जे की मक्कार और षड्यंत्र कारिणी स्त्री हूँ और वहीद अति सद्-व्यवहार और सद् भाव पूर्ण व्यक्ति है। तुमने मेरी बातों में आकर उससे सम्बन्ध तोड़ कर बहुत बड़ी गलती की। यही बात इस समय तुम विचार रही हो। कहो ठीक कहा है न मैंने ?'

प्रवीण कुछ समय तक चुप रही और फिर बोली—

'आपको यह कैसे मालूम हो गया कि मैं इसी बात पर विचार रही हूँ ?'

अशरत ने हँसते हुए कहा—

'यों मालूम हो गया कि तुम्हारे और नसरत के मध्य जो बातें हुईं

वे मैंने छुप कर सुन लीं। मैं नसरत को अपनी बेटी समझती हूँ और तुम्हें भी इस लिये मुझे कोई खेद नहीं। मैं तुम दोनों से इससे अधिक कुछ आशा भी नहीं कर सकती। किन्तु माँ होने के कारण मेरा यह कर्त्तव्य है कि ऐसी कड़वी कसैली सुनूं और हँस कर चुप हो रहूँ। बच्चों की बातों पर हँस देना ही काफी है। माँ का स्थान वह तो नहीं कि ऐसी बातें सुनकर बदला लेने के लिये तैयार हो जाए ? सौतेली माँए ऐसा ही करती हैं किन्तु क्या करूँ ? मैं उन स्त्रियों में से नहीं हूँ।'

जब प्रवीण ने यह सुना कि अशरत ने उन दोनों की बातें सुन ली हैं तो वह बहुत घबराई। उसकी घबराहट का कारण यह नहीं था कि इन बातों से अशरत का हृदय दुःखी हुआ है और वह उसका हृदय दुःखाना नहीं चाहती है अपितु वास्तविक कारण यह था कि उसपर उस समय से अशरत का प्रभाव बैठा हुआ था जब वह उसकी भावज थी। जब उसे पुरानी बातें स्मरण आतीं उसके समस्त शरीर पर कपकपी सी का दौरा पड़ जाता। अशरत ने अनुकूल बातों से उसे अपनी ओर आकृष्ट कर लिया था किन्तु वह पहला भय अपने स्थान पर स्थिर था। इस लिये प्रवीण का उससे घबराना एक स्वाभाविक बात थी।

जब प्रवीण ने अशरत की बात का कोई उत्तर न दिया तो उसने फिर कहा—

'हाँ, तो फिर क्या राय स्थिर की है तुमने ?

प्रवीण ने सहमी हुई दृष्टि से उसकी ओर देखते हुए पूछा—

'तो क्या नसरत ने जो कुछ कहा है गलत है ?'

अशरत ने कहा—

'अब मैं क्या कहूँ कि उसने गलत कहा है या सही ? यदि मैं यह कहूँ कि उसने गलत कहा है तो फिर तुम मुझ से इसका प्रमाण माँगोगी। और मैं प्रमाण दे सकती हूँ किन्तु इस प्रकार नसरत की पोल खुलेगी। नसरत मेरी बेटी है। वह मुझे अपनी माँ समझे या न समझे किन्तु मैं उसे अपनी बेटी अवश्य समझती हूँ। अब तुम ही कहो कि मैं अपनी

सफाई में ऐसी बातें कैसे कह सकती हूं । जिस पर मेरी अपनी बेटी के चरित्र से पर्दा उठता हो। मैं अपना अपमान तो सहन कर सकती हूँ किन्तु अपनी बेटी का अपमान सहन नहीं कर सकती।'

'किन्तु उसने भी तो आप के बारे में काफी कुछ कहा है ?'

'हाँ, कहा है किन्तु मुझे उसके विरुद्ध कुछ नहीं कहना चाहिये। मैं उसकी माँ हूँ।'

'तब फिर मुझे कैसे मालूम होगा कि उसने आपके विरुद्ध जो कुछ कहा है गलत है ?'

अशरत ने मुस्कराते हुए कहा—

'मैंने तुम से कब कहा है कि उसे गलत समझो ?

प्रवीण कुछ झुँझलाकर बोली—

'चची जान ! ये आप किस प्रकार की बातें कर रही हैं ? आप मानवी हैं। देवता तो नहीं। आपको अपनी सफाई देने का पूरा-पूरा अधिकार है।'

'यह तुमने सही कहा है। यदि मेरी अपनी बेटी पर सफाई देने से कोई चोट न पड़ती तो मैं निश्चय ही सफाई देती किन्तु अब विवश हूँ।'

'यह आपने मुझे एक और उलझन में डाल दिया है। यदि नसरत आपकी बेटी है तो मैं भी हूं। जो कुछ आप बताएंगी मैं किसी से कहूँगी तो नहीं। मैं कैसे अपनी बहिन की निर्बलताओं का विज्ञापन कर सकती हूँ ? मुझे शायद यह जानने की आवश्यकता भी न पड़ती किन्तु जब मैं यह देख रही हूँ कि नसरत की बातों से मुझ में और आप में भेद उत्पन्न होने की संभावना है तो मैं उसे मालूम करना भी चाहती हूँ ताकि हम दोनों में कोई गलत बात उत्पन्न न हो।'

अशरत कुछ देर मौन बैठी रही। फिर बोली—

'नसरत ने मुझ पर जो आरोप लगाए हैं मैं उनका कोई उत्तर देना नहीं चाहती किन्तु जिस कारण से उसने वहीद और तुममें सन्धि करवाने का यत्न आरम्भ किया है उससे मैं तुम्हें परिचित करवा देना उचित

समझती हूँ। और मेरा ख्याल है कि उस कारण की चर्चा करने में कोई हर्ज नहीं।'

'क्या कारण है ?'

'वह कारण यह है कि वहीद से नसरत के अनुचित सम्बन्ध हैं और वह तुम्हें इस सिलसिले में रिश्वत के रूप में भेंट करना चाहती है।'

यह सुनकर प्रवीण तड़प उठी और बोली—

'चची जान ! यह आपने क्या कह दिया है ? अपनी बेटी के बारे में आपको ऐसी बातें करते हुए···' वह कुछ और कहना चाहती थी किन्तु रुक गई।

अशरत ने गम्भीर स्वर में कहा—

'मैंने तुम्हें पहिले यह कह दिया था कि यदि मैंने इस मामले में कुछ कह दिया तो मेरी अपनी बेटी की पोल खुलेगी किन्तु तुम्हारे विवश करने पर मुझे ये शब्द कहने पड़े।'

'मुझे यह आशा नहीं थी कि आप नसरत के बारे में बिना प्रमाण ऐसी बात कर देंगी। मुझे यह अच्छी तरह से मालूम है कि नसरत एक सच्चरित्र लड़की है। और अपने पति को बहुत अधिक चाहती है। भला यह कैसे हो सकता है कि वह पर पुरुषों के पीछे भागी-भागी फिरे ?'

'किन्तु तुमने यह कैसे समझ लिया कि मेरे पास इसका प्रमाण नहीं है ?'

'क्या आप यह सिद्ध कर सकती हैं ?'

'हाँ, सिद्ध कर सकती हूँ और इसी समय कर सकती हूं।'

'तो फिर प्रमाण दीजिये।'

'क्या नसरत ने तुमसे यह कहा था कि वह वहीद को नहीं जानतीं ?'

'हाँ, यह कहा था।'

'यदि मैं यह सिद्ध कर दूँ कि वह वहीद को जानती है तो फिर ?'

'प्रथम तो मैं यह आशा नहीं कर सकती कि नसरत ने झूठ बोला हो। वह कदापि झूठ नहीं बोलती किन्तु यदि उसने मानव-स्वभाव से विवश होकर झूठ बोला भी हो तो इससे कहां सिद्ध हो गया कि उसका वहीद से अनुचित सम्बन्ध है।'

हाँ, इस मामले में तो मैं भी तुमसे सहमत हूँ कि यदि नसरत वहीद को पहिले से जानती हैं तो यह चीज उनके सम्बन्ध के मान को प्रकट नहीं करती किन्तु प्रश्न यह है कि उसने वहीद से अपने परिचय को गुप्त रखने का यत्न क्यों किया ? वह यह कह देती कि मैं वहीद को जानती हूँ अथवा इस मामले की छानबीन के लिए उससे मिली तो तुम्हें क्या आपत्ति हो सकती थी ? आखिर उसने जो इस जान पहिचान को गुप्त रखने का यत्न किया तो क्यों ? इस का अर्थ यही है कि चोर की दाढ़ी में तिनके के अनुसार उसे भय है कि कहीं तुम्हें उसके बारे में सन्देह न हो जाए।'

'प्रवीण ने कहा—

'प्रथम तो आप अभी तक यह सिद्ध नहीं कर सकीं कि नसरत ने झूठ बोला है और वहीद से अपने परिचय को गुप्त रखने का यत्न किया है। किन्तु यदि आप यह सिद्ध कर भी दें तो मैं आपकी इस व्याख्या को मानने से इनकारी हूँ कि उसका व्यवहार चोर की दाढ़ी में तिनके के अनुसार है। हो सकता है कि इसमें कोई और कारण हो।'

'हां, यह भी हो सकता है किन्तु मैं यह सिद्ध करूँगी कि नसरत की वहीद से केवल साधारण जान पहिचान ही नहीं अपितु दोनों में गहरे सम्बन्ध हैं। ऐसे गहरे कि वे जन साधारण की दृष्टि में सन्दिग्ध हैं।

'यह गलत बात है। मैं इसे नहीं मानती।'

'जब मैं प्रमाण दूँगी तो शायद तुम मान जाओगी।'

'तो फिर प्रमाण देने में क्या देर है ?'

'अच्छा यह बताओ कि यदि दो पर पुरुष और स्त्री इकट्ठे सैर सपाटा करने के अभ्यस्त हों तो उनके सम्बन्ध कैसे हो सकते हैं ?'

'जहाँ तक मुझे स्मरण है नसरत स्वतंत्र विचारों की बेपर्दा लड़की अवश्य है किन्तु वह कभी किसी पर पुरुष के साथ नहीं घूमी फिरी। और यदि वह ऐसा करती थी तो मैं उस पर सन्देह नहीं करती।'

'यह तो कोई बात न हुई। उसकी सफाई भी देती हो और फिर उसे अभियुक्त भी नहीं मानतीं।'

'आप भी तो शमीम भाई के साथ प्रायः टहलने के लिए निकल जाती हैं? सबसे पहिले तो मुझे आप पर ही आपत्ति करनी चाहिए।'

यह आपत्ति आशा के विरुद्ध थी और अशरत इसे सुनकर बौखला सी गई किन्तु शीघ्र ही अपने औसान ठीक करती हुई बोली--

'शमीम तो मेरे फुफेरे भाई हैं। वहीद नसरत के क्या होते हैं?'

अब प्रवीण के पास इस बात का कोई उत्तर न था। वह यह सुनकर चुप हो गई और कुछ देर के बाद बोली—

'किन्तु इसका प्रमाण भी तो दीजिये कि शमीम आपके फुफेरे भाई हैं?'

अशरत ने कहा—

'चलो, मैं यह भी मान लेती हूँ कि किसी पर पुरुष के साथ स्त्री का घूमना फिरना आपत्ति जनक नहीं। सम्भव है वहीद नसरत को बहिन और वह उसे भाई समझती हो किन्तु इन दोनों का एक साथ मिलकर कैमरे के सामने बैठना और चित्र खिचवाना वर्जित है अथवा नहीं?'

'निश्चय ही वर्जित है। नसरत ऐसा कदापि नहीं कर सकती।'

अशरत ने कुछ बिगड़ने के स्वर में कहा—

'प्रवीण! यह ढँग तो गलत है। मेरी बुराइयाँ तो तुमने नसरत के मुँह से बड़े ठन्डे हृदय से सुनीं हालाँकि वह उनका कोई प्रमाण न दे सकी किन्तु जब मैंने नसरत के बारे में कुछ कहना आरम्भ किया तो तुम आग बबूला हो गईं। और मुझे झुठलाना और उसकी सफाई देना आरम्भ कर दिया। मुझे इसका खेद है।'

प्रवीण परेशान सी हो गई और लज्जा के स्वर में बोली—

'चची जान ! मैं क्षमा चाहती हूँ। अब समझी कि आप मेरे व्यवहार की परीक्षा ले रही थीं। अन्यथा वास्तव में कोई बात नहीं।'

'नहीं, बात भी है और उसका प्रमाण भी मेरे पास है। किन्तु इसके साथ तुम्हारी आज्ञा कारिता की परीक्षा भी हो गई। अच्छा, बेटी ! जीती रहो। और मैं क्या कह सकती हूँ।'

प्रवीण मन ही मन लज्जित हो रही थी और अनुभव कर रही थी कि अशरत ने उसके बारे में जो कुछ कहा है सही कहा है। उसने वास्तव में उसके विरुद्ध बातें बड़े ठन्डे हृदय से सुनीं किन्तु जैसे ही अशरत ने नसरत के विरुद्ध कहना आरम्भ किया उसे क्रोध आ गया। उसे ऐसा नहीं करना चाहिये था। उसे दोनों का समान ध्यान रखना चाहिये था। उसने फिर कहा—

'चचीजान ! वास्तव में यह मुझसे अपराध हुआ है। मैं इसके लिए क्षमा चाहती हूँ। हाँ, यह बताइए न कि आपको कैसे मालूम हुआ कि नसरत और वहीद ने चित्र भी खिचवाए हैं। यदि यह सिद्ध हो जाए तो फिर मुझे उन दोनों के सम्बन्धों के बारे में कोई सन्देह नहीं रहेगा।'

अशरत ने इस बात का कोई उत्तर न दिया और अपना हैण्डबेग खोलने लगी। प्रवीण के देखते-देखते उसने कैबनेट साइज़ का एक फोटो निकाला और प्रवीण के सामने रखती हुई बोली—

'इसे देख लो।'

इस चित्र में नसरत और वहीद दो कुर्सियों पर साथ-साथ बैठे थे। चित्र देखते ही प्रवीण के नेत्र खुले के खुले रह गये। उसे कुछ यों अनुभव हुआ जैसे उसका हृदय जल्दी-जल्दी धड़क रहा है। उसके शरीर में एक बिजली की सी रौ दौड़ने लगी। उसके हाथ पाँव सिल हो गए। वह कुछ यों अनुभव कर रही थी जैसे उसके नेत्रों के सामने कोई बहुत बड़ी घटना हुई है। वह काफी देर तक चुप बैठी रही। उसकी दृष्टि चित्र पर झुकी हुई थी। वह यह सोच रही थी कि क्या संसार में

ऐसी स्त्रियाँ भी हैं जो अपनी वासना के लिए अपनी छोटी बहिनों को आवारा लोगों की भेंट कर सकती हैं ? चित्र देखकर उसे वहीद और नसरत के सम्बन्धों के बारे में कोई सन्देह न रहा और उसे विश्वास हो गया कि नसरत की उससे आज की भेंट एक सोचे समझे कार्य क्रम का भाग थी। नसरत ने अशरत के विरुद्ध जो कुछ कहा था वह भी उसे व्यर्थ सा प्रतीत होने लगा और उसने यही राय स्थिर की कि नसरत ने अपना मतलब निकालने के लिए अशरत के विरुद्ध आरोप लगाए हैं। अन्यथा इन बातों में कोई वास्तविकता नहीं।

वह काफी देर तक सोचती रही। अन्त में अशरत ने इस मौन को तोड़ा और बोली—

'तो क्या राय है अब तुम्हारी नसरत के बारे में ? यह बनावटी चित्र तो नहीं है ? देखलो अच्छी तरह ?'

प्रवीण ने एक ठण्डी साँस ली और कहा—

'राय वही है जो आपकी है। मुझे खेद है कि नसरत ने मुझे धोका देने का यत्न किया और आपके विरुद्ध मुझे उभारा।'

अशरत ने मुस्कराते हुए कहा—

'अब अगर तुम चाहो तो वहीद से विवाह कर सकती हो। मैं अब भी यह वचन देती हूँ कि इस मामले में तुम्हारी सहायता करूँगी ! मैं इस काम में कोई विघ्न डालना नहीं चाहती। यदि नसरत मेरे विरुद्ध कुछ न कहती और केवल तुम्हें विवाह के लिए तैयार करती तो शायद मैं भी उसका साथ देती किन्तु मुझे इस बात का दुःख है कि उसने मुझे माँ न समझा और मेरे विरुद्ध ऐसी-ऐसी बातें कीं जिनका वास्तविकता से कोई सम्बन्ध नहीं। मैं अब भी उसे अपनी बेटी समझती हूं और तुम्हें यह राय देती हूं कि इस चित्र की कहीं चर्चा न करना अपितु उचित होगा कि तुम स्वयं नसरत से भी इसकी चर्चा न करो। क्योंकि इस प्रकार हम दोनों में और कटुता उत्पन्न हो जाएगी। यदि नसरत मेरे विरुद्ध कोई बात कहे तो मैं उसे क्षमा करने की भी शक्ति रखती हूँ

किन्तु नसरत मुझे कदापि क्षमा न करेगी। इसलिए मैं उसकी नाराजगी कभी मोल लेना नहीं चाहती। यह चित्र काफी देर से मेरे पास है किन्तु मैंने कभी किसी को नहीं दिखाया! मैं यह चित्र तुम्हें भी शायद न दिखाती किन्तु बात ही ऐसी छिड़ गई थी कि मुझे उसके लिए विवश होना पड़ा। खैर, इतना ध्यान रखना कि नसरत से इस चित्र की चर्चा न करना।'

यह कहते हुए अशरत ने वह चित्र फिर अपने हैण्डबेग में सुरक्षित धर लिया। प्रवीण ने उसकी बात का उत्तर देते हुए कहा—

'आप चिन्ता न कीजिए। मैं नसरत से इस चित्र की कोई चर्चा नहीं करूँगी बल्कि मेरा यह ख्याल है कि भविष्य में नसरत से अपना मेल मिलाप कम कर दूँगी।'

'किन्तु कल तो वह तुम से मिलने के लिए आएगी।'

'मैं उसके आने से पहिले कहीं चली जाऊँगी। वह फिर-फिरा कर वापस घर चली जायेगी।'

'फिर वह परसों आ जाएगी। आखिर उसे तुमसे इस बात का उत्तर भी तो लेना है?'

'मेरी अनुपस्थिति से वह यह समझ जाएगी कि मैं उसकी राय से सहमत नहीं हूँ। फिर उसे दोबारा यहाँ आने की क्या पड़ी है?'

'हाँ, यह तो सही है।'

अशरत यह कहती हुई कमरे से बाहर निकल गई। दूसरे दिन नसरत निश्चित समय पर आई किन्तु प्रवीण कहीं जा चुकी थी। उसने एक कागज पर ये शब्द लिखे—

'तुम्हारी अनुपस्थिति का अर्थ स्पष्ट है किन्तु यदि मुझे समझने में गलती हुई हो तो मुझे सूचित कर सकती हो—

तुम्हारी शुभाकांक्षिणी

नसरत

यह कागज नसरत ने एक नौकरानी को दे दिया और उसी समय कार में बैठकर चलती बनी।

एक दिन सुबह सवेरे प्रवीण किसी समाचार पत्र का स्वाध्याय कर रही थी कि उसकी एक सहेली असमत उससे मिलने के लिए आई और आते ही उसने कहा—

'प्रवीण ! कालेज छोड़ने के बाद तुम कुछ ऐसी घर से बन्ध कर बैठ गई हो कि कभी देखने में ही नहीं आतीं। कालेज में तो कभी कभार भेंट हो जाया करती थी अब यह बात भी न रही। आज मैं तुम्हें कोई तीन महीने के बाद मिली हूँ।

प्रवीण ने कहा—

'हाँ, ऐसी ही कुछ घटनाएं सामने आ गईं कि मुझे कालेज छोड़ना पड़ा।'

असमत मुस्काती हुई बोली—

'यह तो मुझे मालूम है कि बी०ए० की परीक्षा के लिए तुमने फीस भेजी हुई थी और जब तुम मुझे अन्तिम बार कालेज में मिलीं तो उस दिन परीक्षा आरम्भ होने में केवल बीस दिन थे। तुम कुछ कालेज में कमजोर नहीं थीं। परीक्षा में बैठतीं तो निश्चय ही सफल हो जातीं।

'हाँ, यह तो तुम्हारा कहना सही है किन्तु मैंने कहा है न कि परिस्थितियाँ ही कुछ ऐसी आ गईं कि मुझे कालेज छोड़ना पड़ा। बताओ तुम्हारा परिणाम निकल आया।'

'सुना है पन्द्रह बीस दिन में निकलेगा।'

'किन्तु तुम तो कालेज में बड़ी होशयार थीं। तुम तो पास ही

होगीं।'

'हां, देखिये, कुछ कहा नहीं जा सकता। परीक्षा में बड़े-बड़े योग्य व्यक्ति रह जाया करते हैं। यह तो भाग्य की बात है।'

'हां, तो तुम्हें भूलकर घर का रास्ता कैसे याद आ गया ?

'तो इसका अर्थ यह है कि यदि तुम मिलने के लिये न आओ तो मैं इस कर्तव्य को भूल जाऊं ?'

प्रवीण ने हंसते हुए कहा—

'खैर, यह तो तुम्हारी कृपा है कि तुमने मुझे याद रखा और मिलने चली आई किन्तु मिलने का बहाना कुछ तो होगा ?'

'मतलब मिलने का बहाना होना आवश्यक है ?'

'हाँ, मेरा मतलब भी यही है।'

'किन्तु यह स्मरण रहे कि मिलना पहिली और बहाना दूसरी चीज है।'

प्रवीण ने मुस्कराते हुए कहा—

'हाँ, ऐसा तो होता ही है। बहाना तो केवल मिलने का एक बहाना होता है। किन्तु हाँ, यह भी बताओ कि वह बहाना है क्या ?'

'प्रवीण ! वास्तविक बात तो भेंट ही थी और बहाना यह कि तुम्हें साथ लेकर बाजार से कुछ चीजें खरीदनी हैं। अब तुम कहोगी कि—सलाम भी निःस्वार्थ नहीं।'

यह सुनकर प्रवीण हंस पड़ी और बोली—

'यह तुमने स्वयं कह दिया है। मुझे कहने की आवश्यकता ही नहीं रही। हाँ, यह बताओ कि क्या-क्या वस्तु खरीदनी हैं बाजार से ?'

'तुम साथ चलोगी न ?'

'हाँ, हाँ, मैं अवश्य चलूंगी। तुम इतनी दूर से इस उद्देश्य से चल कर आई हो। मैं यदि इनकार कर दूं तो प्रथम दर्जे की असभ्य हूँगी।'

'तो क्या इसका अर्थ यह है कि मैं इसी उद्देश्य से चल कर आई हूँ ? बात वास्तव में यह है कि उद्देश्य भेंट है और चीजों का लेना देना

एक गौण बात ।'

'हाँ, हाँ, यही तो मैंने कहा है।'

असमत ने बिगड़ने के स्वर में कहा—

'तुम तो बात-बात में मीन मेख निकालती हो ।'

'बस, इतनी सी बात से बिगड़ गई ? अच्छा यह कहो कि क्या खरीदोगी बाजार से ?'

'वह जम्फर जो मैंने एक बार तुम्हारे पास देखा था उसका कपड़ा चाहिये मुझे। मैंने वैसा कपड़ा बहुतेरा ढूंढा किन्तु नहीं मिला। तुम्हें तो उस दूकान का पता होगा जहाँ से वह कपड़ा लिया गया होगा ?'

'हाँ, हाँ, मालूम है। बम्बई हाउस से वह कपड़ा खरीदा था मैंने।'

'दूकान का नाम बताने से तुम्हारा छुटकारा नहीं हो सकता। तुम्हें मेरे साथ चलना होगा।'

'बहुत अच्छा। मैं तैयार हूँ।'

'तो उठिये फिर देर काहे की है ?'

प्रवीण ने उठते हुए कहा—

'यहाँ कोई देर नहीं—चलो।'

यह सुनकर असमत भी उठ खड़ी हुई और दोनों कोठी से निकल कर बाजार की ओर चल दीं। बाजार यहाँ से कोई दो ढाई फर्लांग पर था। कोई पाँच सात मिनट में पहुंच गईं। दोनों बातें करती हुई जा रही थीं कि असमत की दृष्टि फोटोग्राफर की दूकान पर पड़ी और रुकती हुई बोली—

'मैंने अपना फोटो इनलार्ज करने के लिये इस फोटोग्राफर को दे रखा है आओ, जरा उससे पूछ लें। यदि फोटो तैयार हुआ तो ले लूंगी। इस तरह एक पंथ दो काज हो जाएँगे।'

प्रवीण ने फोटोग्राफर की दूकान की ओर कदम बढ़ाते हुए कहा—

'बहुत अच्छा, चलो। तुम फोटोग्राफर से अपने फोटो के बारे में पूछना और मैं तस्वीरों की सैटिंग देखूंगी।'

'हाँ, यह ठीक है।'

दोनों सहेलियाँ दूकान में प्रविष्ट हो गईं। असमत फोटोग्राफर के पास जा खड़ी हुई और उससे अपने चित्र के बारे में पूछने लगी और प्रवीण शोकेस में लटके हुए चित्र देखने लगी। वह एक शोकेस के सामने खड़ी चित्र देख रही थी कि उसकी दृष्टि एक चित्र पर आकर रुकी। उसे देखकर वह चकित सी रह गई। वह चित्र वहीद, खलीक और नसरत का था। नसरत दोनों के मध्य में बैठी थी। उसने पुन: चित्र को ध्यान से देखा। यह चित्र उस चित्रसे मिलता हुआ प्रतीत होता था जो उसने अशरत के पास देखा था। अन्तर केवल इतना था कि उस चित्र में केवल नसरत और वहीद थे और इस में खलीक भी था। प्रवीण ने इस चित्र को और अधिक ध्यान से देखना आरम्भ किया और उसे अनुभव हुआ कि फर्श पर उसी प्रकार का कालीन बिछा है और उसी प्रकार के फूलों के गमले नेपथ्य में दिखाई पड़ रहे हैं जो उसने अशरत वाले चित्र में देखे थे। वह अत्यन्त चकित थी और सोच रही थी कि यह बात क्या है? चित्र एक ही प्रतीत होता है किन्तु इसमें तीन व्यक्ति हैं और अशरत वाली में दो थे। उसने बहुत सोचा किन्तु उसकी समझ में कोई बात न आई।

वह टकटकी लगाए काफी देर तक इस चित्र की ओर देखती रही। फोटोग्राफर असमत से बातें कर रहा था किन्तु उसका ध्यान प्रवीण की ओर था। वह यह देख रहा था कि प्रवीण उस चित्र को बड़े ध्यान से देख रही है। वह असमत से बातें करता हुआ उठा और प्रवीण के पास आकर बोला—

'इस चित्र को लोगों ने बहुत पसन्द किया है। साहब! बात वास्तव में यह है कि मैंने परिश्रम भी इस पर बहुत किया है। कोई बीस पच्चीस दिन हुए एक स्त्री ने यह मुझसे एक सौ रुपये में खरीदा। अब आप अनु-भव कर लीजिये कि यह चित्र कितना अच्छा है?'

'एक सौ रुपये में खरीदा?'

'हाँ, हाँ, एक सौ रुपये में खरीदा। इसमें आश्चर्य की कौन सी बात

है ? यह तो मेरी कला का मूल्य है।'

'फोटो ग्राफी का मूल्य तो मैंने इतना कभी नहीं सुना। हां, यदि आप हाथ के बनाए किसी चित्र की चर्चा करते तो शायद मैं उसका मूल्य एक हजार भी मान लेती।'

फोटोग्राफर कुछ देर तक मौन रहा फिर बोला—

'बात वास्तव में यह है कि उस स्त्री ने मुझे सौ रुपये तो अवश्य दिये। मैंने झूठ नहीं बोला किन्तु उसके कहने से मैंने इस फोटो में कुछ तबदीली की थी।'

'क्या तबदीली ?'

'बस, यह कि तीसरे व्यक्ति को मैंने चित्र से निकाल दिया। और यह तबदीली कुछ इस कला से की कि किसी को इसका पता ही नहीं चल सकता। और देखने वाला यही सोचता है कि उस चित्र में और कोई व्यक्ति नहीं था और यह चित्र केवल उन दोनों का लिया गया है।'

यह सुनकर प्रवीण को पता चल गया कि अशरत ने वह चित्र इसी फोटोग्राफर से प्राप्त किया और उसमें अपनी आवश्यकतानुसार तबदीली करवा ली। उसे मन ही मन में बड़ा दुःख हो रहा था कि वह फिर अशरत से धोखा खा गई और उसने अपनी चचेरी बहिन को नाराज कर लिया। वह अपने विचारों में डूबी हुई थी कि फोटोग्राफर ने फिर कहा—

'हाँ, तो क्या आपको इस चित्र की आवश्यकता है ?'

प्रवीण ने धीरे से कहा—

'हाँ, है। किन्तु मूल्य क्या है इसका ?'

'कहा तो है कि सौ रुपये ?'

यह सुनकर असमत ने एक अट्टहास किया और बोली—

'यह आप क्या कह रहे हैं ? फोटो का मूल्य सौ रुपये ? और फिर फोटो भी वह जिसके लिये आपको कोई फिल्म या प्लेट व्यर्थ न खोनी पड़े। जो आपके पास तैयार पड़ा है। कोई ढंग की बात कीजिये। हमें

बुद्ध समझ रखा है आपने ? हम इस फोटो के दस रुपये से अधिक नहीं दे सकते ।'

फोटोग्राफर बड़ा चकराया और बोला—

'अच्छा, आप दस रुपये ही दीजिये किन्तु मैं इसमें किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं करूँगा । सौ रुपये चित्र का मूल्य नहीं है मेरा पारिश्रमिक है जो परिवर्तन करने में पड़ता है ।'

प्रवीण ने फोटोग्राफर के हाथ में दस रुपये का नोट देते हुए कहा—

'हमें इस चित्र में किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं चाहिये । हमें बिल्कुल यही चित्र चाहिये । हाँ, तो इसकी कापी आप हमें कब देंगे ?'

फोटोग्राफर ने कहा—

'अभी ले जाइये । मेरे पास इसकी दो तीन कापियाँ पड़ी हैं ।' यह कहते हुए उसने एक पेटी से इस चित्र की कापी निकाली और कागज में लपेट कर प्रवीण को सौंप दी ।

प्रवीण और असमत चित्र लेकर दूकान से निकल गईं और बम्बई हाउस पहुँची । वहाँ असमत ने अपनी पसन्द का कपड़ा खरीदा और घर की ओर चल दी । बाजार की नुक्कड़ पर असमत ने प्रवीण से कहा—

'कहो तो मैं तुम्हारे साथ घर तक चलूँ ?'

'क्या आवश्यकता है ? तुम्हारा घर यहाँ से निकट है । मेरे घर चलोगी तो अच्छा खासा चक्कर पड़ेगा तुम्हें ।'

असमत ने मुस्कराते हुए कहा—

'हाँ, यह तुमने सही कहा है किन्तु मेरा तात्पर्य यह है कि कहीं तुम नाराज न हो जाओ ।'

'इसमें नाराजगी की क्या बात है ?'

'नाराजगी की बात तो है कि तुम्हें मकान से लेकर बाजार में आई और अपना काम निकाल कर तुम्हें बाजार में छोड़ चली गई ।'

प्रवीण ने हँसते हुए कहा—

'तुम तसल्ली रखो । मैं तुमसे नाराज नहीं हूँ । तुम शौक से घर

जा सकती हो।'

यह सुनकर असमत ने खुदा आफिज कहा और अपने घर की ओर चल दी। प्रवीरा बाजार से निकल कर एक सड़क पर होली। यहाँ से उसका घर कोई अढ़ाई तीन फलाँग था। अभी वह कुछ कदम ही गई थी कि एक कार उसके पास आकर रुक गई। उसमें शमीम बैठा था। वह कार से उतर आया और प्रवीरा से बोला—

'प्रवीरा ! तो क्या तुम घर जा रही हो ?'

'हाँ, मैं घर जा रही हूँ।'

'मैं भी वहीं जा रहा हूँ। बैठ जाओ कार में।'

प्रवीरा कुछ देर तक मौन खड़ी सोचती रही। शमीम ने फिर उससे कहा—

'तो बैठ जाइये न ?'

यह कहते हुए उसने कार का द्वार खोल दिया और प्रवीरा पिछली सीट पर बैठ गई। कार का द्वार बन्द करने के बाद शमीम अगली सीट पर बैठ गया। और कार को लेकर प्रवीरा के घर की तरफ चल दिया। कोई दो मिनट में कार कोठी में जा पहुँची।

अशरत कोठी के सामने बगीचे में टहल रही थी। जब उसने शमीम और प्रवीरा को कार से उतरते हुए देखा तो उसका चेहरा क्रोध से लाल हो गया किन्तु क्रोध पर अंकुश रखते हुए बोली—

'हाँ, तो दोनों कहाँ का सैर सपाटा करके आए हैं ? मैं भी चकित थी कि प्रवीरा आज सवेरे-सवेरे कहाँ चल दी ?'

प्रवीरा का मन पहिले ही से उसके बारे में जला हुआ था। उसने इसकी बात का कोई उत्तर न दिया और चुपके से अपने कमरे में चली गई।

अशरत को उसकी यह हरकत बुरी लगी किन्तु रक्त का घूँट पीकर चुपकी हो रही। प्रवीरा के जाने के बाद उसने शमीम से कहा—

'हाँ, तो यह इश्कबाजी कब से आरम्भ है ? मुझे तो आज ही

इसका पता चला।'

शमीम को बहुत क्रोध आया और बोला—

'मालूम होता है तुम हर व्यक्ति को अपने जैसा समझती हो किन्तु दूसरों की नीयतों को नापने का यह पैमाना बड़ा गलत है।'

इस पर अशरत को और अधिक क्रोध आया और बोली—

'तो इसका अर्थ यह हुआ कि मैं बुरी हूँ और तुम अच्छे हो।'

शमीम ने बिगड़ते हुए कहा—

'अशरत ! यहाँ खड़े होकर इस प्रकार की बातें करना उचित नहीं। यदि तुम यह पूछना चाहती हो कि प्रवीण मेरी कार में कैसे सवार हुई और हम दोनों कहाँ से आए तो चलो कमरे में। वहाँ मैं तुम्हें सब कुछ बता दूंगा। यहाँ पर एक दूसरे को बुरा भला कहना कुछ ठीक नहीं है।'

अशरत ने क्रोध से कहा—

'हाँ, तो चलिये।'

इसके बाद दोनों वहाँ से चल दिये। जब वे प्रवीण के कमरे के पास से निकले तो दोनों बड़बड़ाते हुए जा रहे थे। प्रवीण तो पहिले ही अशरत के विरुद्ध भरी बैठी थी। जब उसने उसे शमीम के साथ सैर सपाटा करने का ताना दिया तो उसे और भी अधिक क्रोध आया किन्तु उसने उत्तर में अशरत से कुछ कहना उचित न समझा।

अशरत शमीम को लेकर अपने कमरे में चली गई और कुर्सी पर बैठते हुए बोली—

'हाँ, तो कहिये यह प्रेम का नाटक कब से खेला जा रहा है ?'

शमीम ने कहा—

'मैं तो खैर जैसा हूँ तुम जानती ही हो किन्तु तुम्हें प्रवीण के विरुद्ध इस प्रकार की बात करते हुए लज्जा आनी चाहिये। वह इस समय तुम्हारी बेटी के स्थान पर है।'

अशरत लाल पीली होती हुई बोली—

'तो क्या तुम्हारा तात्पर्य यह है कि बेटियों को माँ के अधिकार

पर छापा मारना उचित है ?"

'कौन सा अधिकार मारा है उसने तुम्हारा ?'

'तुम्हारे साथ जो उसने घूमना फिरना आरम्भ कर दिया है यह मेरे अधिकार पर छापा नहीं तो क्या ?'

'बात वास्तव में यह है कि वह मेरे साथ कहीं घूमने के लिये नहीं गई थी। मुझे वह मार्ग में पैदल चलती दिखाई दी और मैंने उसे कार में बिठा लिया। बस, इतनी सी बात है।'

'शमीम ! तुम मुझे धोखा नहीं दे सकते। मैं तुम्हें अच्छी तरह से जानती हूँ। इस प्रकार की बातें तुम किसी दूसरे व्यक्ति से करो जो तुम्हें न जानता हो और तुम्हारी शराफत पर विश्वास करे।'

'तो क्या तुम्हारा तात्पर्य है कि मैं बदमाश हूँ ?'

'बिल्कुल यही मतलब है मेरा। तुम शरीफ बनने का यत्न न करो।'

'हाँ, तो अपने बारे में तुम्हारी क्या सम्मति है ?'

यह सुनकर अशरत को बहुत क्रोध आया और बोली—

'मैं इस के सिवा और कुछ कहने को तैयार नहीं कि तुम पहले दर्जे के बदमाश हो।'

शमीम ने स्वयं को रोकते हुए कहा—

'किन्तु यह बदमाशी मैंने श्रीमती जी से ही सीखी है। यदि मैं बदमाश हूँ तो तुम कौन सी नेक नाम हो ?'

अशरत को और अधिक क्रोध आया और बोली—

'मैं तुम्हारी बकवास सुनने के लिये कदापि तैयार नहीं। तुम मेरे मकान से निकल जाओ और भविष्य में यहाँ पाँव रखने का यत्न न करना।'

'यह ठीक है। तुम्हें मुझे अपने मकान से निकालने का पूरा-पूरा अधिकार है। तुम ऐसा कर सकती हो। किन्तु इसका परिणाम तुम्हारे पक्ष में अच्छा न होगा।'

'क्या परिणाम होगा ?'

यही कि मेरे बाद तुम्हें भी इस मकान से निकलना होगा।'

'वह कैसे ?'

'वह यों कि मैं तुम्हारे सच्चरित्र का भाँडा फोड़कर रख दूँगा और सब को मालूम हो जाएगा कि तुम वास्तव में हो क्या ?'

अशरत के शरीर में आग सी लग गई और पेच ताब खाती हुई बोली—

'तो इस से तुम्हारा चरित्र बच जाएगा ? और तुम संसार की दृष्टि में ऐसे ही पवित्र बने रहोगे ?'

'मैं तो पहिले ही बदनाम हूँ। सब को मालूम है कि मैं एक कामुक व्यक्ति हूँ। माँ बाप ने मुझे इसी आरोप में घर से निकाल दिया है। यार मित्र मुझे आवारा व्यक्ति समझते हैं। हाँ, तुम अवश्य इस घर में सच्चरित्र बनी बैठी हो। मैं चाहता था कि तुम्हारी इस स्थिति में अन्तर न आए किन्तु अब जब कि तुमने स्वयं ही एक बात निकाली है तो मेरे लिये इसका उत्तर देना आवश्यक है। मैं तो बदनाम ही हूँ अब तुम्हें बदनाम करूंगा। फिर देखता हूँ तुम इस घर में कैसे रहती हो ?'

अशरत ने उसकी बात काटते हुए कहा—

'मैं पहिले भी यह कह चुकी हूँ कि मैं तुम्हारी बकवास सुनना नहीं चाहती। तुम इसी समय यहाँ से निकल जाओ। तुम्हारे जैसे मैंने कई देखे हैं। आए हैं बड़े मुझे घर से निकलवाने वाले।'

यह सुनकर शमीम उठ खड़ा हुआ और बोला—

'लो, मैं तो अब यहाँ से चलता हूँ किन्तु तुम भी अपना बोरियाँ बिस्तर बांध रखो।'

'मैं कहती हूँ यहाँ से चल दो। नहीं तो मैं नौकरों से कह कर तुम्हें जूते लगवा दूँगी।'

'मैं चाहूँ तो अभी तुम्हारी नाक और चोटी काटकर रखदूं। तुम हो कौन जूते लगवाने वाली ? हरामजादी कहीं की। दुनियां की बद-कार औरत।'

यह सुनकर अशरत ने आव देखा न ताव । जोर से एक तमाँचा शमीम के मुँह पर जड़ दिया । शमीर ने उसे चोटी से पकड़ कर सारे कमरे में घसीटा । जब उसने शोर मचाया तो नौकर चाकर इकट्ठे हो गये और उन्होंने शमीम को धक्के देकर कोठी से निकाल दिया ।

१७

◊◊◊◊

प्रवीण अपने कमरे में बैठी यह सब शोर शराबा सुनती रही किन्तु बाहर न आई। जब शमीम और अशरत में हाथा पाई हो गई और नौकर चाकरों ने शमीम को हठात् कोठी से बाहर निकाला तो वह द्वार पर खड़ी सब कुछ देख रही थी। उसे इस बात से तो प्रसन्नता हुई कि दोनों में आखिर फूट पड़ गई और वे अलग-अलग हो गए। किन्तु इस बात से उसे दुःख भी हुआ कि संसार में मुझ से अधिक निर्बुद्धि कोई व्यक्ति नहीं। जो इन मक्कार लोगों के षड्यंत्रों का शिकार होती रही।

जब शमीम को गए हुए कोई बीस पच्चीस मिनट हो गए और शोर समाप्त हो गया तो अशरत उसके कमरे में आई। प्रवीण उसके विरुद्ध भरी बैठी थी और उसके कारनामों का ख्याल करके यह सोच रही थी कि यदि अवसर मिले तो उसका मुँह नोच ले। पहिले वह कुछ उससे प्रभावित थी और उससे भयभीत रहा करती थी किन्तु क्रोध और दुःख के आधिक्य ने उसे इतना उत्साहित कर दिया था कि वह उसके विरुद्ध हर प्रकार का बलिदान करने के लिये तैयार थी।

जैसे ही अशरत कमरे में प्रविष्ट हुई प्रवीण ने उसे क्रोध से देखा किन्तु मुँह से कुछ न बोली। अशरत उसके क्रोध को तो भाँप गई किन्तु उसका वास्तविक कारण न समझ सकी। उसका यह ख्याल था कि शमीम और प्रवीण के आपस में लुके-छिपे कुछ सम्बन्ध हैं और शमीम को क्यों कि अपमानित करके घर से निकाला गया है इसीलिये

वह क्रुद्ध है। प्रवीण ने वह चित्र तिपाई पर रखा हुआ था जिसे वह फोटो ग्राफर की दूकान से लाई थी । कमरे में प्रवेश करते ही अशरत की दृष्टि उस चित्र पर पड़ी और एक भयानक हँसी हँसती हुई बोली—

'अच्छा ! अब मालूम हुआ कि दोनों कहाँ गए थे ? फोटो लेने गए होंगे ? हाँ, तो यह कहो कि तुमने फोटो कब खिचवाई थी ? और ये तुम दोनों के सम्बन्ध कब से हैं ? आखिर एक पर पुरुष के साथ बैठ कर फोटो खिचवाने का कोई न कोई कारण तो होता है ? खैर, मैं तुम्हारे चुनाव की प्रशंसा करती हू । बड़ा अच्छा पुरुष चुना है तुमने ।'

अशरत एक ही साँस में कई बातें कह गई । प्रवीण ने उसकी इन बातों का कोई उत्तर न दिया और भयानक दृष्टि से उसकी ओर देखती रही । अशरत ने आगे बढ़कर फोटो अपने हाथ में लेली । उसने जैसे ही यह देखा कि यह वही फोटो है जिसकी एक कापी उसने काँट छाँट के साथ प्राप्त की थी तो उसके पाँव तले की धरती खिसक गई । और खिसियानी-सी होकर बोली—

'तो यह फोटो शमीम ने तुम्हें लाकर दी है ? किन्तु उसने इसकी मुझे जो काफी दी थी उसमें तो केवल वहीद और नसरत ही थे । उसका पति तो नहीं था । मालूम होता है उसने पहिली कापी के द्वारा तुम में और वहीद में लड़ाई करवाने का यत्न किया और यह दूसरी कापी लाकर तुम्हें मेरे विरुद्ध भड़काया ? यही बात है न ?'

प्रवीण ने अति गम्भीरता से काम लेते हुए कहा—

'बिल्कुल गलत है । मुझे यह फोटो शमीम ने लाकर नहीं दी और न उसे इस फोटो का कोई पता है । मैंने यह उस व्यक्ति से प्राप्त की है जिससे आपने पहिली कापी एक सौ रुपये में खरीदी थी । मैंने यह कापी केवल दस रुपये में ली है । आप से उसने सौ रुपये यों लिये कि उसे असल फोटो में काफी काँट छाँट करनी पड़ी और उसे आप की इच्छा-नुसार तैयार करना पड़ा । मैंने दस रुपये में असल कापी ली है ।'

अशरत ने अपने क्रोध को छुपाने का यत्न करते हुए कहा—

'हाँ, अब तो तुम शमीम की सफाई दोगी । सम्बन्ध जो ठहरे ? इस में तुम्हारा कोई दोष नहीं ।'

यह सुन कर प्रवीण का क्रोध से बुरा हाल हो गया और बोली—

'मेरा यह ख्याल था कि आप बहुत कुछ बदल चुकी हैं किन्तु घटना चक्र ने उसे गलत सिद्ध कर दिया । और यह सिद्ध कर दिया कि आप पहिले दर्जे की मक्कार और षड्यंत्र कारिणी स्त्री हैं। आपने मुझे धोखा दिया और एक ऐसे मार्ग पर चलाया जो मनुष्य को विनाश की ओर ले जाता है । मुझे आप से यह आशा न थी । पहिले आप केवल झगड़ालु और बिगड़े स्वभाव की थीं अब मक्कार भी हैं ।'

अशरत ने पहले तो उसे वश करने का यत्न किया किन्तु प्रवीण ने उसकी समस्त सफाइयों को मानने से इनकार कर दिया और यही कहती रही कि अब मैं तुम्हारी किसी बात पर विश्वास नहीं कर सकती । जब उसके सभी बहाने व्यर्थ गए तो फिर उसने यह कहना आरम्भ कर दिया कि शमीम और तुम दोनों मिल गए हो और तुम ने मिल कर मेरे विरुद्ध एक मोर्चा तैयार किया है ।

प्रवीण क्रोध से भरी बोली—

'मैं क्यों शमीम से मिलने लगी ? क्या आप सब स्त्रियों को अपने जैसा समझ बैठी हैं ?'

यह सुन कर अशरत को और ताव आ गया और बोली—

'यह मिलकर सैर सपाटा करना और घर से दो-दो तीन-तीन घन्टे लुप्त रहना आखिर इसका अर्थ क्या है ? तुम्हारे चचा ने तुम्हें मेरी देख रेख में दे रखा है और मैं तुम दोनों को यों मटर-गश्त करते देख कर कदापि सहन नहीं कर सकती ।'

प्रवीण के नेत्र क्रोध से लाल हो गए और पेच ताव खाती हुई बोली—

'मैं शमीम को भी वैसा ही मर्दूद और लानत भेजती हूँ जैसी तुम हो ।'

अशरत और भड़की और बोली—

'तो क्या मैं मर्दूद और लानती हूं ?'

'जो व्यवहार तुमने किया है वह शरीफ लोग नहीं करते।'

'यदि यही बात है तो तुम भी इस घर में नहीं रह सकतीं।'

'मैं स्वयं अब यहाँ रहना नहीं चाहती।'

'तो फिर कहाँ जाओगी ?'

'अपने घर जाऊँगी। जहाँ पैदा हुई और इतनी बड़ी हुई।'

'वह घर अब तुम्हारा नहीं। तुम्हारे पिता के मरने के बाद वह भी न्यायानुकूल हमारी सम्पत्ति है।'

'खैर, यह तो देखा जाएगा कि वह घर मेरी सम्पत्ति है अथवा तुम्हारी।'

ये दोनों झगड़ ही रही थीं कि प्रवीण का चचा आ गया और बोला—

'बेटी ! क्या बात है ? आखिर आज इस घर में कैसा शोर मच रहा है ?'

प्रवीण की आँखों से अश्रु प्रवाहित हो चले और बोली—

'चचा जी ! अब इस घर में मेरा ठिकाना नहीं हो सकता। अब मैं अपने मकान ही में जाकर रहूँगी।'

अशरत ने उसकी बात काटते हुए कहा—

'किन्तु अब वह मकान तुम्हारा कैसे हुआ ? वह अब हमारा है। तुम्हारे बाप का कोई बेटा नहीं। पूरी जायदाद के अधिकारी अब तुम्हारे चचा हैं।'

मियाँ कमर-उद्दीन ने अशरत की ओर देखते हुए कहा—

'यह तुमने गलत कहा है। मेरे बड़े भाई ने मरने से पूर्व अपनी समस्त सम्पत्ति प्रवीण के नाम करदी थी। अब वही उस सम्पत्ति की मालिक है। यदि ऐसा न भी होता तो मैं अपने भाई की सम्पति से एक कौड़ी भी न लेता और सब कुछ प्रवीण के हवाले कर देता।'

यह सुन कर अशरत पर ओस-सी पड़ गई और फिर कुछ न बोली।
मियाँ कमर-उद्दीन ने प्रवीरा को सम्बोधन कर कहा—

'किन्तु बेटी ! तुम दोनों में तो बड़ा मेल था। यह झगड़ा क्यों हो गया तुम में ?'

प्रवीरा ने रोते हुए कहा—

'चचा जान ! पुरानी बातों की चर्चा व्यर्थ है। मुझ में और इनमें अब तालमेल असम्भव है। यदि मैं यहाँ रही तो यह झगड़ा बढ़ेगा। इसलिए मैंने निर्णय कर लिया है कि इस घर को छोड़कर अपने घर जा रही हूँ।'

अशरत ने पहिले चाहा कि मियाँ कमर-उद्दीन की उपस्थिति में यह कहे कि शमीम और प्रवीरा में मेल जोल है और यही चीज इस झगड़े और फसाद का वास्तविक कारण है किन्तु इसके साथ ही उसे यह ख्याल आया कि यदि उसने कोई ऐसी वैसी बात कही तो प्रवीरा उसके तमाम कारनामों का कच्चा चिट्ठा खोल देगी और इस घर में उसका रहना दूभर हो जायेगा। प्रवीरा तो फिर अपने घर में जाकर रह सकती है किन्तु उसको इस घर से निकलने के बाद और किसी स्थान पर आश्रय नहीं मिलेगा। यह सोचकर वह चुप हो रही और अधिक कुछ न कहा। मियाँ कमर-उद्दीन ने प्रवीरा को समझाने की बहुतेरी कोशिश की किन्तु उसने वहाँ रहने से इनकार कर दिया। और यही कहती रही कि अब मैं अपने घर में ही जाकर रहूँगी।

यह सुनकर वे बेचारे चुप हो गये और कुछ देर तक वहाँ खड़े रहने के बाद कमरे से निकल गए। उनके पीछे-पीछे अशरत भी निकल गई। दोनों के जाने के बाद प्रवीरा ने अपनी एक नौकरानी को बुलाया और बोली—

'तमाम सामान बाँधो और घर चलने की तैयारी करो।'

नौकरानी ने आश्चर्य से कहा—

'तो क्या अब हम यहाँ नहीं रहेंगे !'

'नहीं। सब नौकरों चाकरों से कह दो कि पुराने घर में चले जायें। मैं भी कोई एक दो घण्टे तक घर पहुँच जाऊँगी।'

यह सुनकर नौकरानी ने तमाम नौकरों चाकरों को इसकी सूचना दे दी। और स्वयं आकर प्रवीण का सामान बाँधने लगी।

प्रवीण ने वस्त्र बदले और कोठी से बाहर आई। आंगन में उसका शोफर बैठा हुक्का पी रहा था। वह उसे देखकर खड़ा हो गया और बोला—

'बीबी जी! कार लाऊं?

प्रवीण ने कहा—

'हाँ, लाओ।'

कुछ ही देर में शोफर कार लेकर आ गया। प्रवीण पिछली सीट पर बैठती हुई बोली—

'पुराने घर चलो।'

शोफर ने आश्चर्य पूर्वक कहा—

'पुराने घर?'

'हाँ, हाँ, पुराने घर। आज से हम वहीं रहेंगे।'

शोफर ने और कुछ न पूछा और कार लेकर पुराने मकान पर पहुंच गया। प्रवीण ने मकान खुलवाया और उसकी सफाई आदि करवाई। कोई दो तीन घण्टे तक उसके दूसरे नौकर चाकर भी वहां पहुँच गए और यह मकान जो गत कई महीनों से सूना पड़ा था फिर बस गया।

चचा के मकान से इस मकान में आकर प्रवीण एक प्रकार की शान्ति का अनुभव करने लगी। जब उसे मरने वालों की स्मृति आती तो वह परेशान हो जाती किन्तु जब इस मकान की तुलना उस मकान से करती जहाँ उसकी चची के षड़यंत्रों का जाल चारों ओर फैला हुआ था तो वह यह समझती कि नरक से निकल कर स्वर्ग में पहुँच गई है।

यह मकान फिर पहिले के समान बस गया और उसमें गहमा-गहमी

दिखाई पड़ने लगी। आस पास की कोठियों की स्त्रियाँ और लड़कियाँ प्रवीण के पास एकत्र हो गईं। एक वृद्धा बोली—

'बेटी ? बहुत अच्छा हुआ तुम दोबारा यहाँ आ गईं। इस कोठी को खाली देखकर हमें एक प्रकार का भय सा प्रतीत होता था। खुदा का लाख-लाख शुक्र है कि उसने इसकी आबादी का रंग-ढंग फिर कर दिया है।'

दूसरी स्त्रियाँ और लड़कियाँ भी प्रसन्न चित्त दिखाई पड़ती थीं और प्रवीण को वापस अपने घर आने पर बधाई दे रही थीं।

दूसरे दिन प्रातः प्रवीण अभी सो कर उठी ही थी कि एक नौकरानी एक मुलाकाती कार्ड लेकर अन्दर आई और बोली—

'ये साहब बाहर खड़े हैं और आप से मिलना चाहते हैं।'

प्रवीण ने कार्ड पढ़ा। उस पर लिखा था 'शमीम।' वह कार्ड पढ़ कर कुछ देर तक मौन बैठी सोचती रही। फिर नौकरानी से बोली—

'इन साहब से यह पूछो कि क्या काम है !'

नौकरानी बाहर गई और थोड़ी देर के बाद वापस आकर बोली—

'वे कहते हैं मुझे आप से अत्यावश्यक काम है। मैं आपका अधिक समय नहीं लूँगा।'

यह सुनकर वह कमरे से बाहर निकली और बरामदे में आकर खड़ी हुई। शमीम अपनी कार के पास खड़ा था। उसे देखकर आगे बढ़ा और आदाबअर्ज करता हुआ बोला—

'मुझे खेद है कि मैंने आपको कष्ट दिया किन्तु कुछ अत्यावश्यक बातें आपसे करनी थीं इसलिए आ गया।'

प्रवीण ने कहा—

'क्या बातें हैं वे ?'

शमीम ने कहा—

'वे आपके भले की बातें हैं। मैं उन बातों को आप से छुपाकर और अधिक पापी बनना नहीं चाहता। मेरी आत्मा कुछ समय से मुझे कोस

रही है। आत्मा की इस झाड़ ही का परिणाम है कि मैं आपके पास आया हूँ। और कोई स्वार्थ नहीं।

बरामदे में दो तीन कुर्सियाँ बिछी हुई थीं। प्रवीण एक कुर्सी पर बैठ गई और एक दूसरी कुर्सी की ओर संकेत करती हुई बोली—

'बैठिये।'

शमीम कुर्सी पर बैठ गया। प्रवीण ने कहा—

'कहिये, आप मुझ से क्या कहना चाहते हैं ?'

शमीम कुर्सी पर सीधा बैठ गया और बोला—

'आप जानती हैं मैं कौन हूँ ?'

'आप अशरत चची के फुफेरे भाई हैं।'

'नहीं। यह गलत है। मैं अशरत का किसी प्रकार का भाई नहीं। मेरा उससे क्या सम्बन्ध है इस पर प्रकाश डालने की आवश्यकता नहीं। आप बुद्धिमती है। समझ सकती हैं।'

'आप फिर कौन हैं ?'

'मैं ताहिरा का भाई हूँ।'

प्रवीण ने आश्चर्य से कहा—

'ताहिरा के भाई ?'

'हाँ, मैं भाग्यहीन व्यक्ति ताहिरा का भाई हूँ। या यों कहिये कि उसका घातक। मैं ताहिरा का वही भाई हूँ जिसने अशरत के साथ मिल कर स्व० नाजिम और ताहिरा को परस्पर घृणा करने के लिये षड्यंत्र किये और उनके सम्बन्ध को समाप्त करवाने के लिये यत्न किये। अधिक अपराध मेरा है या अशरत का, मुझे यह बताने की आवश्यकता नहीं। केवल इतना समझ लीजिये कि मैं मूर्ख सिद्ध हुआ और वह बुद्धिमती। उसने अपने पति से बदला लेने के लिये मुझे शस्त्र बनाया और मैंने उसे प्रसन्न करने के लिये अपनी बहिन से धोका किया और अन्त में उसे मृत्यु के मुंह में पहुँचा दिया। बस यही समझ लीजिये कि अधिक दोष मेरा है। हां, एक बात मैं आपसे कहना चाहता हूँ और वह यह कि

वहीद बिल्कुल निर्दोष है। उसे इस बात का कदापि ज्ञान नहीं था कि नाज़िम और ताहिरा एक दूसरे से सम्बद्ध हैं। मैंने ताहिरा का चित्र ला कर अशरत को दिया और मेरी सम्मति ही से वहीद को मंगनी का पत्र भेजा गया। हमें यह विश्वास था कि वहीद नाज़िम से सम्मति करेगा इस लिये उसे इस उद्देश्य के लिये चुना गया। उद्देश्य इसमें यह था कि नाज़िम अपने एक मित्र का हृदय नहीं तोड़ेगा और ताहिरा के विरुद्ध हो जाएगा। इसके बाद या तो वह लाहौर छोड़ कर चला जाएगा या आत्म-हत्या कर लेगा। सो यह षड़यंत्र सफल रहा और नाज़िम दिल्ली चले गए। इसके बाद जो कुछ हुआ वह सब आपको मालूम है। कुछ भी हो यह बात स्पष्ट है कि वहीद का इसमें कोई दोष नहीं। उसने मित्रता का कर्तव्य पूर्ण किया और आपसे जो सहानुभूति प्रकट की वह और कोई नहीं कर सकता।'

प्रवीण चुपचाप शमीम की बातें सुन रही थी और उसके अश्रु उस के गालों पर बह रहे थे। शमीम ने अपनी बातचीत आगे बढ़ाते हुए कहा—

'आपके चचा से अशरत का विवाह जैसे हुआ वह भी एक बड़ा भेद है। किन्तु आपके मामले से इसका कोई सम्बन्ध नहीं इसलिये मैं इसके बारे में कुछ नहीं कहना चाहता। हाँ, यह अवश्य कहूँगा कि उसने मुझे साथ मिलाकर तुम्हारी और वहीद की शादी को रुकवाने का यत्न किया और कई षड्यन्त्र घड़े। जिनमें से एक यह था कि एक जाली चित्र आप को दिखाया गया। खेद है कि आप उसकी बातों में आकर एक ऐसे व्यक्ति के विरुद्ध हो गई जो अत्यधिक भला और सद्व्यवहार पूर्ण व्यक्ति है। आपके विवाह को रुकवाने का तात्पर्य वास्तव में यह था कि कहीं अशरत के बीते कारनामों पर से पर्दा न उठे।'

प्रवीण ने कहा—

'यदि आप इन समस्त षड्यन्त्रों में अशरत के साथ थे तो अब उस के विरुद्ध क्यों हो गए हैं ?'

यह सुनकर शमीम चुप हो गया और कुछ सोचता रहा। फिर बोला—

'यदि मैं यह कहूँ कि मुझे बीते पापों की अनुभूति ने ऐसा करने को विवश किया तो शायद यह गलत होगा। यदि अशरत मुझ से किसी प्रकार का झगड़ा न करती तो शायद हमारे पापों की आयु और लम्बी हो जाती। किन्तु उसने एक व्यर्थ-सा झगड़ा खड़ा करके मुझे अपना विरोधी बना लिया। मैं क्योंकि उसकी निर्बलताओं से परिचित हूँ इस लिये मैंने उसकी पोल खोलने और उसे अपमानित करने की ठान ली है। आप मेरे इस कृत्य को भी पाप ही समझेंगी और यह ख्याल करेंगी कि यदि हम दोनों की लड़ाई ने कुछ निर्दोष व्यक्तियों की आँखों से नासमझी और व्यर्थ संदेह के पर्दे उठा दिये हैं तो उसके लिये हम दोनों में से एक भी प्रशंसा का पात्र नहीं। यह और बात है कि हमारी लड़ाई ने वहीद और आपकी स्थिति स्पष्ट कर दी। हमारी लड़ाई दो बदमाशों की लड़ाई है और इस प्रकार की लड़ाई से यदि कुछ निर्दोष व्यक्तियों को लाभ पहुंच जाए तो यह कोई आश्चर्य की बात नहीं। किन्तु इस पाप स्वीकृति के साथ मैं यह भी निवेदन किये देता हूँ कि मेरे हृदय में अशरत के विरुद्ध बदले की जो भावना उत्पन्न हुई उसने मुझे अपनी गत निर्बलताओं और पापों से मुझे अवगत करवा दिया और आत्मा ने मुझे झाड़ पुछाड़ की। मैं मानता हूँ कि आत्मा की यह झाड़ पुछाड़ भी मेरी बदले की भावना की उपज है। किन्तु यह तो निश्चित है कि मुझे अपनी गत कार्यवाहियों पर अत्यन्त खेद है और मैं यह चाहता था कि मरने से पूर्व आपके सामने अपने पापों को स्वीकार करूं। संभव है इस प्रकार मेरे पापों का बोझ कुछ हलका हो जाए। क्षमा मैं इस लिये नहीं माँगता कि न आप मुझे क्षमा कर सकती हैं और न मैं अपने आपको इसके योग्य समझता हूँ। बस, यही कहने के लिये मैं आपके पास आया था। अच्छा खुदा हाफ़िज़।'

शमीम यह कह कर उठा और अपनी कार की ओर चल दिया। प्रवीण का मन उसकी ओर से साफ हो चुका था। वह उसे कुछ कहना चाहती थी कि शमीम ने कार चला दी और उसके देखते-देखते कोठी से निकल गया।

१८

प्रवीण की कोठी से निकलने के बाद शमीम अशरत के घर की ओर चल दिया। उसका मन क्रोध से पूर्ण था और उसके नेत्र रक्त उगलते दिखाई देते थे। कल अशरत ने उसके मुंह पर जो तमाचा मारा था और नौकरों ने जो अपमान किया था उसने उसके मन में एक तूफान मचा रखा था। वह आयु भर कभी किसी स्त्री से यों अपमानित न हुआ। उसका मन बदले की भावना से भरा था। इसके साथ ही उसे अपनी आत्मा झाड़-पुछाड़ करती दिखाई देती थी कि उसने एक मक्कार और षड़यंत्रकारिणी स्त्री की चालों में आकर ऐसे-ऐसे अपराध किये जो मानवता के माथे पर एक कलंक का टीका है। उसने इस आवारा स्त्री को प्रसन्न रखने की धुन में अपनी बहिन के संसार को भी नरक में बदल दिया और अन्त में उस बेचारी ने अत्यन्त विवशता की स्थिति में अपने प्राण दे दिये।

शमीम स्टीयरिंग थामे कार लिये जा रहा था किन्तु उसके नेत्रों के सामने वे समस्त घटनाएँ नृत्य कर रही थीं जो गत वर्ष डेढ़ वर्ष के समय में हुईं। अशरत के साथ उसकी मित्रता, किताबों की दूकान की घटना, अशरत का नाजिम से विवाह, षड़यंत्रों का अनन्त जाल, नाजिम और ताहिरा की मृत्यु, अशरत का पुनः विवाह, वहीद और प्रवीण के विरुद्ध षड़यंत्र और इसी प्रकार की अनेक घटनाएँ एक-एक करके उसकी आँखों के सामने आती गईं। उसे अत्यन्त दुःख हो रहा था कि एक स्त्री ने उसकी मूर्खता से लाभ उठाकर ऐसे-ऐसे पाप किये जिनके दण्ड से वह

स्वयं भी बच नहीं सकता। उसकी यह लज्जा वास्तव में उस बदले की भावना के कारण थी जो अशरत से तमाचा खाकर या उसके नौकरों से अपमानित होकर उसके हृदय में उत्पन्न हुए थे किन्तु इससे उसकी मृत आत्मा में जीवन का संचार अवश्य हुआ था और वह अच्छाई अथवा बुराई में भेद करने लगा था। इससे पूर्व पाप उसके निकट केवल मन बहलाव का साधन थे। उसके निकट वे केवल मनोरंजन का एक साधन होते थे किन्तु आज उनका अंधकारपूर्ण पक्ष उसके सामने था और वह यह अनुभव कर रहा था कि उनमें अशरत के साथ बराबर का भागीदार बनकर उसने समाज पर एक अन्याय किया है।

अन्त में उसकी कार कोठी के सामने आकर रुकी और वह अपने विचारों से जाग्रत हुआ। वह कार से उतर कर सीधा मियाँ कमर-उद्दीन के कमरे में पहुंचा। यह कमरा बाहर की ओर था और जनानखाना से मिला हुआ था।

मियाँ कमर-उद्दीन उस कमरे में बैठे अपने एक कर्मचारी के साथ हिसाब-किताब कर रहे थे। शमीम को कमरे में प्रवेश करते देख उसे सम्बोधन कर बोले—

'भई ! क्या बात हुई ? बहिन-भाई में क्या झगड़ा हो गया ? तुम दोनों में तो बहुत मेल था।'

शमीम ने कुर्सी पर बैठते हुए कहा—

'मैं एकांत में आपसे कुछ बातें करना चहता हूँ। यह मैं अन्तिम बार आपसे मिलने आया हूँ। इसके बाद शायद इस घर में कदम न रखूं।'

यह सुनकर वह कर्मचारी स्वयं कमरे से बाहर चला गया। उसके जाने के बाद मियाँ-कमर-उद्दीन ने मुस्कराते हुए कहा—

'कहो, क्या बात है ?'

शमीम ने कहा—

'क्षमा कीजिये। अशरत मेरी बहिन नहीं है। मेरा इससे कोई सम्बन्ध नहीं है। यह सम्बन्ध तो हमारे अपने सम्बन्धों के लिये एक पर्दे

का काम देता था।'

यह सुनकर मियाँ कमर-उद्दीन कुछ परेशान हो गए और बोले—

'मैं तुम्हारी यह बात नहीं समझ सका।'

शमीम ने कहा—

'केवल इतना कहने से कि मेरा अशरत से कोई सम्बन्ध नहीं आप शायद मेरी बात नहीं समझ सकेंगे। इसलिये मुझे सारे मामले पर संक्षेप से प्रकाश डालना पड़ेगा।'

मियाँ कमर-उद्दीन मौन बैठे उसका मुँह ताक रहे थे। शमीम ने कुछ देर तक मौन रहने के बाद फिर कहा—

'यह आपकी पत्नी वास्तव में आपके भतीजे नाज़िम की पत्नी है। उसने ही आपके बड़े भाई और भतीजे का जीना दूभर कर दिया और अन्त में वे इस संसार से चलते बने।'

मियाँ-कमर-उद्दीन ने चकित होते हुए कहा—

'मेरे भतीजे की पत्नी ?'

'हाँ, हाँ, अशरत आपके भतीजे की पत्नी थी किन्तु निकाह के अवसर पर यह बात आपसे गुप्त रखी गई।'

'किन्तु प्रवीण ने भी तो मुझे नहीं बताया ?'

'अब यदि आप प्रवीण से पूछेंगे तो वह आपको सारी बात बता देगी। अशरत ने प्रवीण के इस घर में आते ही उसे कुछ ऐसा शीशे में उतारा था कि उसने इस बात की आप से चर्चा करना उचित न समझा। आप जानते हैं कि आपके स्वर्गीय भाई ने प्रवीण का सम्बन्ध एक नव-युवक वहीद से कर रखा था किन्तु अशरत का ख्याल था कि यदि वहीद का आना जाना इस घर में हो गया तो उसका सारा भेद प्रकट हो जाएगा क्योंकि वह अशरत की आवारागर्दी और काले कारनामों से परिचित था सो उसने प्रवीण को पथ-भ्रष्ट कर के उसे वहीद के विरुद्ध कर दिया। और यह सम्बन्ध समाप्त हो गया। आपकी बेटी नसरत ने इस सम्बन्ध को सफल बनाने का यत्न किया किन्तु अशरत ने प्रवीण को

उसके भी विरुद्ध कर दिया और नसरत के विरुद्ध ऐसे-ऐसे आरोप लगाए कि यदि आप सुनेंगे तो सहन न कर सकेंगे। मुझे इस मामले के विस्तार में जाने की आवश्यकता नहीं। यदि आप चाहें तो अपनी बेटी नसरत से इस बारे में पूछ सकते हैं। रहा यह मामला कि मेरा अशरत से क्या सम्बन्ध है तो मैं यह आप से कह दूँ कि अशरत मेरी बहिन नहीं है। मेरा उससे जो सम्बन्ध है उसे छुपाने के लिए ही उसने आपसे निकाह किया। तात्पर्य केवल यह था कि वह संसार की दृष्टि में आपकी पत्नी बनी रहे और अपने काले कारनामों पर पर्दा डालती रहे।'

मियाँ कमर-उद्दीन का चेहरा क्रोध से लाल हो रहा था। उन्होंने पेच ताब खाते हुए कहा—

'किन्तु तुम भी अशरत के कामों में बराबर के भागीदार हो।'

शमीम ने कहा—

'यह आपने ठीक कहा है। मेरा अपराध भी अशरत के अपराध से कुछ कम नहीं और मैं अपने गत कारनामों को घृणा के योग्य समझता हूँ किन्तु अशरत की पवित्रता का पर्दा फाड़ने से मेरा तात्पर्य यह है कि आप अधिक देर तक किसी धोखे में न रहें। अशरत आपके भाई के घर को नष्ट करके अब आपके घर के विनाश के सामान एकत्र कर रही है। यदि आप अब भी वास्तविकता को समझ जाएं तो इसकी रोकथाम का कोई प्रबन्ध कर सकते हैं।'

जब शमीम मियाँ कमर-उद्दीन से बातें कर रहा था तो अशरत को भी इसका पता चल गया और वह घाव खाई सिंहनी के समान अपने पति के कमरे की ओर लपकी। कमरे में प्रवेश करते हुए उसने शमीम से कहा—

'तुम यहाँ क्यों आए हो?'

शमीम ने क्रोध से काँपते हुए कहा—

'तुम्हारे गत कुकर्मों को नग्न करने आया हूँ।'

'तुम बदमाश हो।'

'मुझ से अधिक बदमाश तुम हो। मैं इसके लिए प्रमाण दे सकता हूं। यदि तुम्हारे मियाँ चाहें तो प्रवीण और नसरत से तुम्हारी आवारागर्दी का प्रमाण ले सकते हैं।'

यह सुनकर अशरत बहुत अधिक घबराई और बोली—

'मेरे पति यह जानते हैं कि क्योंकि तुम मेरे विरुद्ध हो इसलिए इस प्रकार के झूठे आरोप लगा रहे हो।'

'चलो, मैं तो तुम्हारे विरुद्ध हूं इसलिए तुम पर आरोप लगा रहा हूं। यदि प्रवीण और नसरत यही कहें जो मैंने कहा है तो फिर ?

अशरत को अत्यन्त क्रोध आया और बोली—

'मैं तुम्हारी इस बकवास को नहीं सुन सकती। तुम इसी समय यहाँ से निकल जाओ। जब कल तुम्हें यहां से अपमानित करके निकाला गया था तो तुम आज फिर यहाँ क्यों आए हो ? बाहर जाकर जो तुम्हारा जी चाहे वह करो। किन्तु मेरे घर में प्रवेश करने की तुम्हें आज्ञा नहीं है।'

मियाँ कमर-उद्दीन मौन बैठे दोनों की बातचीत सुन रहे थे। उन्होंने कोई रोक-टोक न की। अन्त में अशरत ने उनसे सम्बोधन करते हुए कहा—

'आप इस बदमाश की बातें क्यों सुन रहे हैं ? क्या आपकी लाज आपको इस बात की आज्ञा देती है कि एक पर पुरुष के हाथों अपनी पत्नी को अपमानित होता देखें और मौन रहें।'

शमीम ने उसे चिड़ाते हुए कहा—

'कल तक तो मैं तुम्हारा फुफेरा भाई था और आज मैं पर पुरुष हूं। मैं जो तुम्हारा होता हूँ वह मैंने सब तुम्हारे पति को बता दिया है।'

यह सुनकर अशरत को अति क्रोध हो आया और उसने शमीम को गरेबान से पकड़ कर खेंचा और बोली—

'निकल जाओ यहाँ से।'

शमीम . अपना गरेबान छुड़ाते हुए कहा—

'नहीं ।.. । तुम्हें यहाँ से निकालूँगा । तुम्हारे जैसी बदमाश और दुश्चरित्र ी का ठिकाना अब इस घर में नहीं रह सकेगा ।'

अशरत ने ज़ोर से एक तमाचा उसके मुँह पर मारा और बोली—

'बदमाश कहीं का ।'

शमीम ने आव देखा न ताव । जेब से रिवाल्वर निकाल कर दाग दिया । गोली अशरत के हृदय को चीरती हुई निकल गई और अशरत धरती पर गिर कर तड़पने लगी । मियाँ कमर-उद्दीन उसकी ओर लपके । शमीम ने रिवाल्वर का दूसरा फायर अपने आप पर किया और वहीं गिर गया । दो-चार मिनट के अन्दर-अन्दर दोनों ठण्डे हो गए । मियाँ कमर-उद्दीन बड़े घबराए । नौकर चाकर इकट्ठे हो गए । मियाँ कमर-उद्दीन ने टेलीफोन पर प्रवीण और नसरत को इस घटना की सूचना दी । जब दोनों मकान पर पहुँचीं तो अशरत और शमीम के शव रक्त से लतपत धरती पर पड़े थे ।

कुछ देर के बाद पुलिस ने मौके पर पहुँच कर दोनों शव अपने अधीन कर लिये और साधारण कागज़ी कार्यवाही करने के बाद शव पोस्टमार्टम के लिए भिजवा दिये । उसी दिन सायं समय उन दोनों को दफन कर दिया और षड़यंत्रों का तन्त्र टूट गया । जिसने एक साथ कई परिवारों को अपनी लपेट में ले रखा था ।

१६

◈◈◈◈

अशरत और शमीम के मरने के बाद नसरत और प्रवीण भी वहाँ आ गईं और छः सात दिन तक वहीं रहीं। नसरत प्रवीण से बहुत नाराज थी। उसने कई दिन तक उससे बात न की। प्रवीण स्वयं भी बहुत लज्जित थी। उसने अशरत को अपनी हमदर्द समझ रखा था। नसरत ने अनेक बार उसे अशरत की कारस्तानियों से सावधान किया। वह उससे सहमत भी हो जाती किन्तु बाद में फिर अशरत की बातों में आ जाती। यहाँ तक कि अशरत के कहने से उसने नसरत के विरुद्ध भी अपनी सम्मति स्थिर कर ली और उससे मिलना तक उचित न समझा।

नसरत यह जानती थी कि प्रवीण एक सीधे सादे स्वभाव की लड़की है। उसे अपने युवा का कोई अनुभव नहीं किन्तु उसके ढिलमिल विश्वासों को देखकर उसे उससे घृणा हो गई थी। सीधे सादे और भोले व्यक्ति से तो निश्चय ही हर व्यक्ति को सहानुभूति हो जाती है किन्तु जब किसी की सादगी सीमा पार कर जाए और वह मित्र और शत्रु में कोई भेद न कर सके तो यही सहानुभूति घृणा में बदल जाती है। नसरत की भी यही दशा थी। उसे प्रवीण से अत्यन्त सहानुभूति थी किन्तु जब उसने देखा कि सावधान करने पर भी वह हर बार अशरत के दाव में आ जाती है तो वह उससे घृणा करने लगी। कोई एक सप्ताह तक दोनों एक ही मकान में रहीं किन्तु नसरत ने उससे किसी प्रकार की बातचीत न की। प्रवीण चाहती थी कि उसे अपनी सफाई देने का अवसर

मिले किन्तु वह यह चर्चा छेड़ते हुए कतराती थी। उसे यह मालूम था कि उसने नसरत का दिल दुखाया है और उससे न मिल कर उसका अपमान किया है किन्तु उसे क्षमा माँगने का कोई अवसर हाथ न आ रहा था। दो चार दिन तक तो वह इसी आशा में रही कि नसरत स्वयं इस चर्चा को छेड़ देगी और उसे अपनी सफाई देने का अवसर मिल जाएगा किन्तु उसकी यह आशा पूरी न हो सकी। नसरत ने उससे कोई बात न की। यदि वह कहीं बैठी हुई होती और प्रवीण भी वहाँ पहुँच जाती तो वह चुपके से उठकर वहाँ से चल देती। नसरत का यह ढंग देखकर उसे अति दुःख होता। किन्तु जब वह अपने गत व्यवहार पर दृष्टि डालती तो यह अनुभव करती कि यदि वह नसरत के स्थान पर होती तो स्वयं भी यही व्यवहार करती।

जब नसरत ने तीन चार दिन तक स्वयं प्रवीण से कोई बात न की तो फिर प्रवीण उस अवसर की खोज में रही जब वह चर्चा छेड़े। किन्तु उसका भी वह कोई अवसर न निकाल सकी। जब प्रवीण नसरत के पास जाती वह उसे देख कर या तो मुँह मोड़ कर बैठ जाती या वहाँ से चल देती। इस प्रकार कोई आठ दिन बीत गए।

एक दिन प्रवीण ने सुना कि नसरत आज अपने घर जा रही है। यह सुनकर उसे बहुत दुःख हुआ कि इस बीच उससे कोई बात न हो सकी। वह यह भी जानती थी कि यदि नसरत ऐसे ही घर चली गई तो सम्भव है भविष्य में मेल जोल का कोई अवसर न निकल सके और वह उससे और अधिक घृणा करने लगे। यह सोचकर उसने निश्चय किया कि चाहे कुछ भी हो नसरत के जाने से पहिले उससे अवश्य बातचीत करेगी और उसकी गलत फहमियों को दूर करने का यत्न करेगी।

नसरत घर जाने के लिये तैयार हो रही थी कि प्रवीण उसके सामने आ खड़ी हुई और आँखों में अश्रु भरती हुई बोली—

'तो क्या बहिन ! आप जा रही हैं ?'

नसरत ने उसकी ओर देखे बिना कहा—

'हां ।'

प्रवीण ने कुछ देर रुक कर कहा—

'मैं आपसे कुछ बातें करना चाहती थी ।'

नसरत ने आश्चर्य से उसकी ओर देखा और बोली—

'क्या बातें करना चाहती हो ?'

'आप मेरे साथ बराबर वाले कमरे में चली चलें । मैं वहाँ बैठकर कुछ बातें करूंगी ।'

'क्या ये बातें फिर किसी समय नहीं हो सकती ?'

'मेरा ख्याल है कि यदि अब न हो सकीं तो शायद फिर कभी न हो सकें ।'

यह सुनकर नसरत कुछ कहे बिना दूसरे कमरे में चली गई । प्रवीण भी उसके पीछे-पीछे गई । दोनों आमने सामने कुर्सीयों पर बैठ गईं । नसरत ने कहा—

'कहो, क्या बात है ?'

प्रवीण के नेत्रों से टप-टप अश्रु गिरने लगे और बोली—

'बहिन ! मैं आप से क्षमा चाहती हूँ । वास्तव में मैंने अपराध किया है और दण्ड की अधिकारिणी हूँ ।'

'तुमने कोई अपराध नहीं किया । क्षमा किस बात की ? हाँ, मैंने अवश्य अपराध किया है जो तुमने मुझ से मिलना भी सहन न किया । यदि तुम कहो तो मैं क्षमा माँग लूं तुमसे ।'

प्रवीण ने उसके पाँव पकड़ लिये और बोली—

'यह आप मुझे लज्जित कर रही हैं । खुदा के लिये मुझे क्षमा कर दीजिये ।'

प्रवीण रो रही थी । उसके नेत्र अश्रुओं का एक प्रवाह उगल रहे थे । नसरत कुछ समय तक मौन बैठी रही फिर बोली—

'प्रवीण ! अब हमें पिछली बातें भूल जानी चाहियें । मेरा मन तुम्हारी ओर से साफ है ।'

प्रवीण ने रोते हुए कहा—

'मुझे खेद है कि आपके बार-बार समझाने पर भी मैं अशरत की बातों में आती रही और आपके विरुद्ध हो गई। मेरे इन कार्यों का जो परिणाम निकला वह आपके सामने है।'

नसरत ने गम्भीरता से कहा—

'प्रवीण ! मैं यह कह चुकी हूँ कि मेरा मन तुम्हारी ओर से बिल्कुल साफ है। किन्तु केवल तुम्हारी भलाई के विचार से मैं यह कहे देती हूँ कि तुम जैसी बुद्धू लड़की मैंने आज तक नहीं देखी। यदि तुम अनपढ़ होती तो मुझे कदापि कोई शिकायत न होती। गजब खुदा का, तुम पढ़ी लिखी होकर एक मक्कार और षड्यन्त्रकारिणी स्त्री के जाल में फंस गईं। खैर, मेरी तो कोई बात नहीं। मेरे बारे में जो सम्मति स्थिर की है उसकी मुझे कोई शिकायत नहीं किन्तु तुमने उस व्यक्ति को भी न छोड़ा जिससे तुम किसी समय प्यार करती थी। हमने तो सुना है कि प्यार अंधा होता है। प्रेमी के दोष भी विशेषताएं दिखाई पड़ती हैं। किन्तु जब मैं तुम्हारी दशा पर विचार करती हूँ तो इस परिणाम पर पहुँचती हूँ कि यह बात गलत है। तुमने वहीद को तो संसार भर का छटा बदमाश और कामुक व्यक्ति समझ लिया और उस स्त्री को तुमने पुण्यात्मा, पतिव्रता और शुभाकाँक्षिणी समझ लिया जिसकी कारस्तानियाँ और दुर्व्यवहार तुमसे छुपे न थे। मुझे ऐसे लोगों से अत्यन्त घृणा है जो सत्य और झूठ में भेद नहीं कर सकते और बड़ी आसानी से पथभ्रष्ट हो जाते हैं। अच्छा हुआ कि तुम्हारा विवाह वहीद से न हुआ अन्यथा क्या आश्चर्य था कि विवाह के बाद भी तुम ऐसी अस्थिर विश्वास की सिद्ध होती और इन बेचारों की जान जोखम में पड़ जाती। वे बेचारे सीधे सच्चे आदमी हैं। मैं नहीं चाहती कि उन्हें किसी प्रकार का कष्ट पहुँचे।'

प्रवीण चुपचाप नसरत की बातें सुन रही थी और उसके नेत्रों से अश्रु प्रवाहित थे। नसरत ने उसे रोते हुए देखकर कहा—

'रोने से अब कोई लाभ नहीं। बड़ी बहिन के अधिकार से मैं यही कहूँगी कि तुम स्वयं को संभालो। मुझे तुम में कोई बुराई दिखाई नहीं पड़ती। खुदा की महरबानी से सुन्दर हो, पढ़ी लिखी हो, सच्चरित्र हो किन्तु सौ-दोषों का एक दोष तुममें है कि आस्तिक स्वभाव हो। तुम्हारी अपनी कोई सम्मति नहीं। तुम दूसरों की सम्मति से सहमत होना आवश्यक समझती हो। किन्तु मेरे निकट यह बात अच्छी नहीं। पहिले मैं अपने आपको तुम्हारी सहेली समझती थी किन्तु अब नहीं। क्योंकि सहेलीपन का आधार प्यार और सद्व्यवहार पर है और यह वस्तु तुम में है नहीं। अब मैं केवल तुम्हारी बहिन हूँ और इस सम्बन्ध से यों इनकार नहीं कर सकती कि रक्त का सम्बन्ध है। तुम चाहे कैसी हो मैं तुम्हें अपनी बहिन ही समझती रहूँगी। यदि शरीर का कोई अंग व्यर्थ हो जाए तो उसे काटकर अलग नहीं किया जा सकता चाहे वह अपने प्रभाव से सारे शरीर को ही समाप्त कर दे।'

प्रवीण ने निराश दृष्टि से देखते हुए कहा—

'किन्तु बहिन ! आपने तो अभी-अभी यह कहा था कि मेरा मन तुम्हारी ओर से साफ है ?'

'हाँ, हाँ, मैं अब भी यही कहती हूँ।'

'किन्तु आपकी बातों से यह प्रतीत होता है कि आप अभी तक नाराज हैं।'

'मैंने कुछ साफ और खरी-खरी बातें कही हैं और मेरा ख्याल है कि तुम उन्हें झुठला नहीं सकतीं ? मेरी यह स्पष्टवादिता ही यह प्रकट करने के लिये पर्याप्त है। कि मेरे मन में तुम्हारे बारे में अब कोई मैल नहीं।'

'मैं तो यह चाहती थी कि आप मेरी सहेली ही बनी रहें और मेरे भावी जीवन के बारे में मेरा मार्ग प्रदर्शन करें।'

नसरत इसका अर्थ समझ गई और बोली—

'ऐसी बातों में जो भावी जीवन के बारे में अपनी सम्मति दे सकती

हूँ किन्तु सहेली की स्थिति में नहीं।'

'यह क्यों ?'

'इसलिये कि ऐसी बातों में सहेली की सम्मति केवल एक सम्मति का स्थान रखती है किन्तु बड़ी बहिन की सम्मति एक आज्ञाकारिणी बहिन के निकट एक ऐसा निर्णय होती है जिससे साधारण-सा इनकार करना भी उसे सह्य नहीं होता। उचित यही है कि तुम मुझे बड़ी बहिन ही समझो और मुझे अपनी सहेली समझ कर और अधिक चंचल विश्वासों के लिये एक नया क्षेत्र तैयार न करो।'

यह सुनकर प्रवीण ने कहा—

'वास्तव में यह आपने सत्य कहा है। मैं अब आपको अपनी बड़ी बहिन ही समझूंगी और आपकी प्रत्येक आज्ञा मानना अपना कर्तव्य समझूँगी।'

'बहुत अच्छा। यदि यही बात है तो मैं भी अपने आपको तुम्हारी बड़ी बहिन ख्याल करूँगी और अपने आपको इसके योग्य सिद्ध करूँगी।'

प्रवीण ने वहीद के बारे में चर्चा छेड़नी चाही किन्तु उसे यह चर्चा छेड़ने का कोई अवसर हाथ न लगा। अन्त में उसने कहा—

'हाँ, तो मेरे भावी जीवन के बारे में क्या आज्ञा है ?'

नसरत उसका अर्थ समझ गई और बोली—

'वहीद का विवाह हो चुका है अतः इसका ख्याल हृदय से निकाल दो। हाँ, एक स्थान और है और मेरे ख्याल में वह स्थान भी उचित है। तुम वहाँ प्रसन्न रहोगी। मुझे इस बात का विश्वास है।'

वहीद के विवाह की बात सुनकर प्रवीण पर एक बिजली सी गिरी और व्याकुल होती हुई बोली—

'तो क्या उन्होंने विवाह कर लिया ?'

'हाँ, हाँ, विवाह कर लिया है और मेरा ख्याल है ऐसा करने का उन्हें अधिकार था। उनका इसमें कोई दोष नहीं। उन्होंने तुम्हारी काफी प्रतिक्षा की। जब वे निराश हो गए तो एक और स्थान पर

विवाह कर लिया।'

प्रवीण ने इसका कोई उत्तर न दिया और झुकी-झुकी गीली आँखों से फर्श की ओर ताकती रही। नसरत ने फिर कहा—

'तुमने अभी-अभी वचन दिया है कि मुझे अपनी बड़ी बहिन समझोगी और मेरी बात मानोगी। तुम्हारे बारे में मेरा निर्णय यही है कि एक और उचित स्थान पर तुम्हारा विवाह कर दूं। कहो मेरा निर्णय तुम्हें स्वीकार है?'

प्रवीण एक विचित्र उलझन में पड़ गई। वह वहीद के अतिरिक्त किसी और से विवाह करना नहीं चाहती थी किन्तु नसरत को वचन दे चुकी थी कि भविष्य में उसकी बात मानेगी। अब वह इन्कार करती तो कैसे? नसरत उसे मौन देखकर बोली—

'क्या मेरा यह निर्णय स्वीकार नहीं?'

प्रवीण की एक हल्की सी चीख निकल गई किन्तु हृदय पर अंकुश रखती हुई बोली—

'मैं अपने वचन पर दृढ़ हूँ। आपका निर्णय मेरे लिये स्वीकार्य है।'

नसरत ने कहा—

'बहुत अच्छा। खुदा ने चाहा तो यह काम तीन चार दिन के अन्दर-अन्दर हो जाएगा। मैं इस मामले को और ढील देना नहीं चाहती क्योंकि ढील का परिणाम पहिले ही बहुत बुरा हुआ है।'

यह कहती हुई नसरत उठ खड़ी हुई और बोली—

'अच्छा अब मुझे जाने के लिये तैयार होना चाहिये। मैं जाने से पूर्व एक बार फिर तुम्हें कह दूं कि जहाँ मैं तुम्हारा विवाह कर रही हूँ वे बड़े भले लोग हैं। तुम वहां प्रसन्न रहोगी। मैं यह मानती हूँ कि तुम्हारा प्यार का रचा जीवन इस विवाह से समाप्त हो जाएगा किन्तु यदि तुम स्वयं इस बात पर विचार करोगी तो इस परिणाम पर पहुँचोगी कि इसका समस्त दोष स्वयं तुम पर है और किसी का कोई अपराध नहीं।'

प्रवीण ने इसका कोई उत्तर न दिया और मौन बैठी रही। नसरत

यह कहकर दूसरे कमरे में चली गई।

वहीद के विवाह की सूचना पाकर प्रवीण को अत्यन्त दुख हुआ। वह उसके विवाह के बाद आयु भर कँवारी रहना पसन्द करती किन्तु वह नसरत की सम्मति पर चलने का वचन दे चुकी थी। अब उसमें इतनी हिम्मत न थी कि नसरत की राय से इनकार करे। उसका मन विवाह करने को कदापि तैयार न था किन्तु नसरत को नाराज करने की भी अब उसमें हिम्मत न थी। अन्त में उसने मन ही मन यह निर्णय कर लिया कि जिस प्रकार बेजुबान लड़कियाँ केवल अपने माता-पिता के सम्मान का विचार करते हुए अपनी इच्छा के विरुद्ध ऐसे व्यक्ति से विवाह करने पर राजी हो जाती हैं जिसे वे पसन्द नहीं करतीं उसी प्रकार इसे भी बड़ी बहिन की बात मान लेनी चाहिये। वह इस विवाह के विरुद्ध थी किन्तु अपनी बहिन का दिल तोड़ना भी नहीं चाहती थी।

कुछ दिन बाद प्रवीण का विवाह हो गया और अपने ससुराल पहुंच गई। उसे इस बात का बहुत दुःख था कि उसने अपनी नासमझी से एक ऐसे व्यक्ति को खो दिया जिससे वह प्यार करती थी। वह विवाह करना नहीं चाहती थी और आयु भर उसी प्यार की स्मृति में बैठी रहना चाहती थी किन्तु उसने नसरत को जो वचन दिया था उसके कारण वह विवाह करने के लिये विवश थी। यदि नसरत इससे पूर्व उसके विरुद्ध न हुई होती और उसने इसे चंचल विश्वास न कहा होता तो वह निश्चय ही इस विवाह से इनकार कर देती किन्तु अब वह नसरत को अधिक शिकायत का अवसर देना नहीं चाहती थी। वह प्यार की बलि चढ़ाने के लिये तैयार हो गई किन्तु यह उसे सह्य न हुआ कि नसरत के सामने झूठी हो। उसे रह-रह कर इस बात पर दुःख हो रहा था कि जब वह सम्मति प्रकट करने में स्वतन्त्र थी और नसरत उसकी सम्मति की स्वतंत्रता के पक्ष में थी तो उसने मूर्खता से काम लेते हुए एक ऐसे व्यक्ति को खो दिया जो उसका बढ़िया जीवन साथी सिद्ध हो सकता था किन्तु जब इनकार का सही अवसर आया तो वह नसरत को वचन देकर उस पर दृढ़ हो गई।

प्रवीण अपने भाग्य पर भरोसा करके सुसराल चली गई। उसका हृदय जल रहा था और आँखें रक्त के अश्रु ढुलका रही थीं। विदा के समय नसरत ने उसे रोते देखकर कहा—

'प्रवीण ! मैंने तुम्हारा विवाह ऐसे स्थान पर करके तुम पर

कोई जुल्म नहीं किया। मेरा ख्याल है तुम वहाँ प्रसन्न रहोगी।'

प्रवीण ने रोते हुए कहा—

'बहिन! अब जब कि मेरा निकाह हो चुका है और मैं अपना वचन पूरा कर चुकी हूँ मैं यह स्पष्ट कहे देती हूँ कि मैंने केवल आपकी खुशी का ध्यान रखते हुए ऐसा किया अन्यथा मैं इस विवाह के लिये कदापि तैयार न थी। मैं अपनी सारी आयु यों ही बिता देना चाहती थी किन्तु ख्याल केवल यह था कि यदि मैं इस विवाह से इनकार कर देती तो फिर आप मुझे बिल्कुल ही झूठी समझ लेतीं और आयु भर मुझसे बात न करतीं। यही वह भय था जिसने मुझे बलात इस विवाह के लिये तैयार किया। आपका यह ख्याल गलत है कि मैं अपनी सुसराल में प्रसन्न रह सकूँगी। प्रसन्नता का तो अब मुझसे दूर का भी सम्बन्ध नहीं। मैंने केवल आपको प्रसन्न करने के लिये विवाह का यह नरक खरीदा है। अब तो मैं सारी आयु इसी नरक में जलती रहूँगी और इस नासमझी का दण्ड भुगतती रहूँगी जो मुझसे हुई है।'

नसरत ने मुस्कराते हुए कहा—

'अरी, पगली हो गई है क्या? मैं दृढ़ता के साथ कह सकती हूँ कि तुम सुसराल में बहुत प्रसन्न रहोगी। चाहे तो शर्त रख कर देख लो। हमारे दूल्हाभाई सुना है बड़े योग्य व्यक्ति हैं और फिर अल्लाह रखे सुन्दर भी हैं। मालूम नहीं तुम सुसराल को नरक क्यों कह रही हो? तुम्हें तो खुदा का शुक्र करना चाहिये कि एक ऐसे अच्छे स्थान पर तुम्हारा विवाह हुआ है। खैर, कल मैं तुम्हारे यहाँ पहुंचूगी और तुम से पूछूंगी कि तुमने नरक खरीदा है अथवा स्वर्ग।

प्रवीण ने इस बात का कोई उत्तर न दिया और लगातार रोती रही। सुसराल में दूल्हा और दुल्हिन की सुहागरात के लिये एक कमरा सजाया गया। जब सब महमान खाना खाकर चले गए तो प्रवीण की बड़ी ननद उसे और दूल्हा को उस कमरे में छोड़ गई। उसने बाहर निकलते हुए द्वार के किवाड़ बन्द कर दिये और हँसती हुई बोली—

'अब सवेरे आकर द्वार खोलूंगी ।'

दूल्हा और दुल्हिन दोनों आमने सामने बैठे थे । प्रवीण ने लम्बा-सा घूंघट निकाल रखा था । उसके नेत्र डबडबाए हुए थे । उसके हृदय से वह प्रसन्नता लुप्त थी जो पहली रात दुल्हिनों के हृदयों में चुटकियाँ लेती प्रतीत होती है । बल्कि उसके हृदय में यह विचित्र सी इच्छा उत्पन्न हो रही थी कि वह सारी आयु यों ही घूंघट निकाले बैठी रहे । और कोई उसे कुछ न कहे । उसे भय सा हो रहा था कि शायद दूल्हा उसे नकाब उलटने के लिये कहे । हालाँकि ऐसा होना एक निश्चित सी बात थी । मालूम नहीं, उसने यह क्यों मान लिया था कि वह नकाब उलटेगी ही नहीं । वह कुछ यों सहमी बैठी थी जैसे वह किसी की कैद में है और उसे बेड़ियों में जकड़ कर उस स्थान पर बिठाया गया है । उसका हृदय जोर-जोर से धड़क रहा था । यह धड़कन प्रसन्नता के कारण नहीं थी अपितु किसी भय का पता दे रही थी ।

सहसा उसके कानों में यह आवाज आई—

'क्यों साहब ! यह नकाब कभी उठेगी भी या कि नहीं ?'

यह सुनते ही प्रवीण के शरीर का जोड़-जोड़ काँप उठा । वह कुछ यों अनुभव कर रही थी जैसे उसने किसी सिंह के धाड़ने की आवाज सुनी है । उसने अपना दोपट्टा और अधिक मजबूती के साथ अपने गिर्द लपेट लिया और उसके दिल की धड़कन और अधिक तीव्र हो गई । दूल्हा ने फिर कहा—

''मैंने जो निवेदन किया है मालूम होता है वह स्वीकृति योग्य नहीं है ।'

ये शब्द प्रवीण पर बिजली बन कर गिरे । उसका सारा शरीर कुछ यों सकते में था जैसे रक्त उसकी रगों में जम गया हो । उसका मस्तिष्क बिल्कुल रिक्त था । उसने इस आपत्ति का हल सोचने का यत्न किया किन्तु मस्तिष्क ने जवाब दे दिया ।

दूल्हा ने तीसरी बार कहा—

'यदि आप नकाब नहीं उठातीं तो मुझे आज्ञा दीजिये कि मैं उलट् दूँ।''

अब तो प्रवीरा और अधिक डरी। उसने घूंघट के निचले सिरे को दोनों हाथों से मजबूत पकड़ लिया। फिर सहसा उसके मनमें ख्याल आया कि यह बदतमीजी है। माना कि यह शादी मेरी इच्छा के विरुद्ध हुई है किन्तु मेरे पति ने कौन-सा अपराध किया है ? मुझे इन से प्यार हो अथवा न हो किन्तु उनकी आज्ञा का पालन करना तो मेरा धार्मिक और व्यावहारिक कर्तव्य है। यह ख्याल आते ही उसने घूंघट को ढीला छोड़ दिया। इसके साथ ही उसने यह अनुभव किया कि दो लोह हस्त आगे बढ़े और उन्होंने उसके साथ घूंघट के सिरों को थाम लिया है। धीरे-धीरे हाथ ऊँचे होने आरम्भ हुए और उनके साथ घूंघट भी। यहां तक कि उसके सारे चेहरे से नकाब उठ गया। उसने घूंघट उठाने वाले को देखने का यत्न न किया। उसकी आँखें फर्श पर गड़ी हुई थीं और आँसुओं की वर्षा कर रही थीं। सहसा उसके कानों में यह आवाज आई—

नजारे ने भी काम किया वाँ नकाब का।
मस्ती से हर निगाह तेरे रुख पर बिखर गई।'

'पहले यह सुन्दर चेहरा घूंघट की ओट में था अब मेरी दृष्टि की ओट में है।'

प्रवीरा ने मन ही मन अनुभव किया कि उसका पति कोई सुसभ्य व्यक्ति है किन्तु उसका यह पद्य भी उसकी झुकी दृष्टि को ऊंचा उठाने में व्यर्थ सिद्ध हुआ।

उसके पति ने फिर कहा—

'क्यों साहब ! कोई नाराजगी है मुझ से ? मेरी ओर देखती क्यों नहीं ?'

प्रवीरा की दृष्टि और झुक गई। उसकी दृष्टि कुछ इस तीव्रता से एक ही स्थान पर गड़ी हुई थी जैसे वह धरती को चीर कर निकल जाने का यत्न कर रही हो। आखिर उसने एक हाथ

अपने सिर पर और दूसरा अपनी ठोड़ी के नीचे अनुभव किया और धीरे-धीरे उसका चेहरा ऊपर उठने लगा। पहिले उसने सामने बैठे हुए व्यक्ति के निचले भाग को देखा। फिर एक चौड़ी चकली छाती अचकन में छुपी हुई उसे दिखाई दी। फिर उस की गरदन और गरदन के बाद ढोडी और होंठ उसे दिखाई पड़े। उसके नेत्र धीरे-धीरे ऊपर उठ रहे थे। फिर उसने सुतवा नाक देखी और उसके बाद सुनहरी फ्रेम की ऐनक में से झांकती हुई दो मोटी-मोटी और सुन्दर आँखें। यहाँ से प्रवीरण ने अपनी ठोडी के निचले हाथ के संकेत की प्रतीक्षा न की और जल्दी से नेत्र उठाकर अपने पति का माथा और केश देखे। फिर उस के नेत्रों ने उसके चेहरे पर एक भरपूर दृष्टि डाली। उसके हृदय की धड़-कन सहसा तेज हो गई और वह कुछ बेहोश सी हो गई। पति ने शीघ्रता से उसे सहारा देकर संभाला। उसकी यह दशा किसी दुःख के कारण नहीं अपितु प्रसन्नता के आधिक्य से हुई थी। उसने फिर अपने दूल्हे पर दृष्टि डाली और विवशता की स्थिति में उससे लिपटती हुई बोली—

'वहीद !'

'हाँ, तुम्हारा वहीद जिसे तुम छोड़ चुकी थी किन्तु प्रकृति को हमारा मिलाप स्वीकार था।'

प्रवीरण के नेत्र अश्रु बहा रहे थे। ये दुःख के अश्रु नहीं प्रसन्नता के अश्रु थे। प्रवीरण ने प्यार से उसे ताकते हुए कहा—

'वहीद ! मैं क्षमा चाहती हूँ।'

वहीद ने उसे गोद में लेते हुए कहा—

'प्रवीरण ! हमें बीती बातों को भूल जाना चाहिये। इन बातों को स्मरण करने से दुःख होता है। प्यार में ऐसे भी स्थान आते हैं जहाँ पहुँच कर प्रेमी और प्रेमिका परस्पर एक दूसरे को संदेह की दृष्टि से देखने लगते हैं और उन्हें एक दूसरे से कुछ घृणा सी होने लगती है। किन्तु वास्तविकता यह है कि यह अस्थायी घृणा उनकी सीमा से बढ़े हुए प्यार

का परिणाम होती है। असद्व्यवहार का इसमें कोई हाथ नहीं होता। पैमाना अधिक भर जाए तो छलक जाता है। इसी प्रकार अधिक बढ़े प्यार का प्रभाव भी अस्थायी विरोध अथवा घृणा के रूप में प्रकट होता है। तुम में और मुझ में यदि ऐसा ही कोई अस्थायी विरोध पैदा हो गया तो वह कोई आश्चर्य की बात नहीं। ऐसा होना एक निश्चित सी बात थी।'

प्रवीण ने झुकी-झुकी दृष्टि से उसे देखते हुए कहा—

'वहीद ! मेरे कारण आप को बहुत अधिक परेशानी हुई। मैं बहुत लज्जित हूं।'

वहीद ने हँसते हुए कहा—

'फिर वही बात। मैं कहता हूं कि अत्याधिक प्यार में ऐसी बातें उत्पन्न हो ही जाती हैं। किन्तु यह कोई स्थायी बात नहीं हुआ करती। हमें कोई असाधारण घटनाओं का सामना नहीं करना पड़ा। ऐसा होता ही है।'

प्रवीण कुछ देर तक मौन रही। फिर मुस्कराती हुई बोली—

'किन्तु निकाह के समय तो आप का नाम कुछ और बताया गया था ?'

वहीद ने कहा—

'हाँ, मेरा वास्तविक नाम खलील अहमद है। वहीद तो उपनाम है। घर में मैं अपने वास्तविक नाम से ही पुकारा जाता हूँ। हाँ, यार दोस्त मुझे वहीद कह कर पुकारते हैं।'

प्रवीण ने मुस्कराते हुए पूछा—

'तो क्या आप कवि भी हैं ? उपनाम तो कवियों के होते हैं।'

यह सुनकर वहीद हँस पड़ा और बोला—

'किसी समय मुझे भी कविता का खबत हुआ था। फिर मैंने सोचा कि यह मेरे बस का रोग नहीं है। सो कविता लिखना छोड़ दिया किन्तु उपनाम लगातार चिपका रहा और अब तक है।'

प्रवीण भी हँस पड़ी और कुछ देर तक मौन रहने के बाद बोली—

'वहीद मेरा ख्याल था कि यह विवाह मेरे प्यार की मृत्यु सिद्ध होगा किन्तु खुदा का लाख-लाख शुक्र है कि यही विवाह मेरे प्यार का पुरस्कार सिद्ध हुआ। और सच्ची बात तो यह है कि आप की ही स्थिर चित्तता का यह सारा परिणाम है अन्यथा मेरे बारे में तो आप जानते हैं कि अशरत ने मुझे पथ भ्रष्ट कर दिया था।'

वहीद ने उसे थपथपाते हुए कहा—

'अच्छा प्रवीण ! यह बताओ कि यह सारी घटना कैसे घटी ?'

प्रवीण मुस्कराई और बोली—

'अभी-अभी आपने कहा था कि बीती बातों को भूल जाना चाहिये।'

वहीद ने अट्टहास किया और बोला—

'अच्छा तो मेरे ही शब्दों को प्रमाण के रूप में प्रयोग किया जा रहा है ? मैं यह सारा किस्सा सुनना अवश्य चाहता हूं किन्तु मैं यह अनुमान कर लूँगा कि यह किसी अन्य व्यक्ति की कहानी है। हमारी नहीं। तुम भी यही ख्याल कर लो कि तुम मुझे कहानी सुना रही हो।'

'हाँ, है तो वास्तव में कहानी ही।'

'अच्छा तो फिर खुदा का नाम लेकर आरम्भ कर दो।'

यह सुनकर प्रवीण ने पन्द्रह बीस मिनट के अन्दर पूरी घटना कह सुनाई और वहीद को बताया कि कैसे अशरत ने उसे पथ भ्रष्ट किया और किस प्रकार नसरत ने इस मामले में उसका मार्ग दर्शन किया।

पूरी घटना सुनने के बाद वहीद ने कहा—

'प्रवीण ! बात वास्तव में यह है कि मनुष्य एक बुराई को छुपाने के लिए उससे भी बड़ी एक दूसरी बुराई करता है। यही कुछ अशरत ने किया। उसका ख्याल यह था कि यदि हम दोनों का विवाह हो गया तो उसके गत जीवन पर से पर्दा उठ जाएगा और इस प्रकार शायद उसका घरेलु जीवन कटु हो जाएगा और उसने इसी उद्देश्य से षड़यंत्रों

का जाल बिछा रखा था। वह उसमें स्वयं फंस गई और प्राण दे बैठी। हमें एक दूसरे के विरुद्ध करने के लिए उसने जो ढंग अपनाया वह अस्थायी रूप से प्रभावोत्पादक सिद्ध हुआ किन्तु झूठ के पाँव नहीं होते। इसी से अन्त में उसका झूठ प्रकट हो गया और हम एक दूसरे से फिर आ मिले।

वहीद और प्रवीण देर तक प्यार की बातें करते रहे। उनके हृदय प्रसन्नता की भावना से भरपूर थे। उन्हें गत कुछ महीनों में जो सख्तियां और कठिनाइयाँ भुगतनी पड़ी थीं उन्होंने उनके प्यार में और अधिक बढ़ोत्तरी कर दी थी। जिस काम को पूर्ण करने में जितनी कठिनाइयाँ आती हैं उतनी ही अधिक उसके पूर्ण होने पर प्रसन्नता भी होती है। प्रवीण और वहीद को बहुत सी परीक्षाओं से गुजरना पड़ा किन्तु पुर्नमिलन पर उन्हें उतनी ही अधिक प्रसन्नता हुई और उन्हें इन जान मार परीक्षाओं का इनाम मिल गया।

दूसरे दिन प्रातः नसरत प्रवीण के सुसराल में पहुँची। प्रवीण उसे देखते ही उससे लिपट गई। नसरत ने उसके कान में कहा—

'कहो, इस विवाह से तुम्हें प्रसन्नता हुई अथवा दुःख ?

'प्रवीण ने मुस्कराते हुए कहा—

'बहिन ! तुमने मुझे पहिले ही क्यों न बता दिया कि तुम्हारा विवाह वहीद से हो रहा है ?'

नसरत ने हंसते हुए कहा—

'बताने में मुझे कोई इनकार न था किन्तु मुझे भय था कि शायद ठीक समय पर तुम ऐंठ जाओ।'

प्रवीण ने लज्जित स्वर में कहा—

'पथ भ्रष्ट करने वाली तो मुझे अशरत थी। उसके मरने के बाद

इसकी क्या आशा हो सकती थी ?'

नसरत ने गम्भीरता से कहा—

'प्रवीण ! इस संसार में शैतानों की कमी नहीं है। अशरत मर गई है तो क्या हुआ ? उसकी कई बहिनें और इस संसार में मौजूद हैं जिनके जीवन का उद्देश्य ही यही है कि आग लगाकर जमालो बन जाएं। जब तुम्हें यह मालूम हुआ होगा कि तुम्हारा विवाह उसी से हुआ है जिसे तुम चाहती थी तो निश्चय ही तुम्हें बहुत अधिक प्रसन्नता हुई होगी। यदि तुम्हें पहिले से ही यह पता होता तो तुम्हें इतनी प्रसन्नता न होती। इसलिए मैं तुम्हें वास्तविक बात पहिले ही बता कर तुम्हारी प्रसन्नता कम करना नहीं चाहती थी। अच्छा, बताओ, फिर मिठाई खिलाती हो ?

प्रवीण ने मुस्कराते हुए कहा—

'किस बात की ?'

'वह हमने जो शर्त लगाई थी।'

'कैसी शर्त ?

'यही कि इस शादी से तुम अप्रसन्न न होगी।'

यह सुन कर प्रवीण हँसने लगी और बोली—

'अच्छा, इस बात की मिठाई माँग रही हो ?'

'अच्छा, एक और बात सुनो—

'क्या ?'

'तु। दोनों के प्यार का कारण जो प्यार था उसका परिणाम जानती हो क्या हुआ ?'

यह सुनकर प्रवीण काँप उठी और बोली—

'हाँ, बहिन ! जानती हूं। यही कि ताहिरा और नाजिम भाई दोनों के जीवन समाप्त हो गये।

'बिल्कुल यही मैं भी कहना चाहती थी। तुम दोनों के प्यार के बारे में भी मेरे मन में कुछ ऐसे ही सन्देह उत्पन्न हो रहे थे। अशरत

ने षड़यंत्रों से मेरे इन अन्देशों को और भी अधिक सबल बना दिया । किन्तु खुदा का लाख-लाख शुक्र है कि इस प्यार का अन्त सकुशल । और अशरत तथा शमीम स्वयं ही अपने षड़यंत्रों का शिकार हो कर गये । इस प्यार में भी दो प्राणों का नष्ट होना निश्चित था सो यों हो कर रहा और ट्रेजेडी कामेडी में बदल कर रह गई ।'

नसरत और प्रवीण बातें कर रही थीं वहीद अन्दर आया और ा—

'क्यों साहब ! यह छुप-छुप कर क्या बातें हो रही हैं ?'

नसरत ने मुस्कराते हुए कहा—

'जब आप अपनी दुल्हिन से भेद प्यार की बातें कर रहे थे तो क्या पूछा था कि ये छुप-छुप कर क्या बातें हो रही हैं ?'

यह सुनकर वहीद हंस पड़ा और उसके बाद नसरत भी हंसने लगी । ा की आँखों में लाज और प्रसन्नता के मिश्रित से भाव उत्पन्न हो और उसकी दृष्टि स्वतः झुक गई ।

***